कैलासमार्ग



अर्थात्

स्कंदपुराण का ब्रह्मोत्तर खण्ड

जिसको

श्री भमरम हंस परिव्राजकाचार्य्य श्री स्वामी रामकृष्ण-
भारती शिष्य माधवानंद भारती ने दोहा चौपाई छन्द
रीति से श्री काशी जी में भाषा किया
वही

ज़िलअ़ ग़ाज़ीपुर के डिपुटी कलक्टर बहादुर श्री पंडि
त देवीप्रसाद साहब के आज्ञानुसार

आगरा

[स]त्यप्रकाश यंत्रालय में ज्वाला प्रसाद भार्गव के प्रबंध
से छपा

संवत् १९२९ पहली बार ३००

कैलास मार्ग का सूचीपत्र

ॐ

श्री गणेशायनमः श्लोक - भक्त्या सदा विघ्न हरं गणेशमु मा भजं देवपतिंदिनेशं कृपार्णवं देववरं रमेशं वंदे सुह रकल्प तरुं महेशं १ श्री गुरुं परमानंदं दक्षिणा मूर्तिवि ग्रहं सर्वभीष्ट प्रदं वंदे कर्मणा मनसा गिरा २ ॥ ७ ॥

सोरठा

विनवें। गिरिजा नंद मंगलायतन गज वदन
गुन मप आनंद कंद सिद्धि भवन कल्याण प्रद
विश्व रूप भगवान सतचित आनंद ज्ञानमय
एक अनंत प्रमाण गिरा अगोचर ध्यावहूं ॥ १ ॥
वंदौं राम कृपाल जासु चरित मंगल भवन ॥
जेहि कर नाम विशाल मुक्ति हेतु पावन परम ॥
व्रजवनिता रति हेतु परम रूप मन्मथ मथन
वंदौं यदुकुल केतु वासुदेव करुनाभवन ॥ २ ॥
विनवहुँ श्रीपति नाथ शिव स्वरूप शंकर सुखद
कीन्हो लोक सनाथ भाष्यामृत वर प्रगट करि ॥
पद्म पाद शिरनाय श्री सुरेश की विनय करि ॥

हस्तामलक मनाय तोटकपद वंदन करौं ६
वंदौं शंभु सुज्ञान भक्त कल्प तरु ज्ञान निधि ॥
आशुतोष भगवान उमानाथ जननाथ प्रभु ७

चौपाई

पुनि वंदौं त्रिपुरारि पिआरी गणपति जननि तिहू पुर उजियारी
शारद मातु मनाय वहोरी ॥ चतुरानन विनवौं कर जोरी
रमानाथ वहु भाँति मनावों ॥ पुनि पयोधितनहि शिर नावों
वंदौं दिनकर भूरि प्रकाशा ॥ जगसुखदायक तम कृत नाशा
इंद्रादिक सव देव मनाई ॥ ऋषि मुनि कवि लोगन शिर नाई
श्रीगुरु वर गुन ज्ञाननिधाना विष्णनाथ वपु श्रीभगवाना
सीतापति पर्य्याय सु नामा ॥ कृष्ण नाम युत प्रभु सुखधामा
भारतीश इव तेज प्रभावा ॥ आशुतोष सम सहज सुभावा
तासु पाद पंकज शिर नाई प्रेम सहित वहु विनय सुनाई
श्रीगुरु वर पद रज अति पावनि ब्रह्मज्ञान की हेतु सुहावनि ॥
सकल मनोरथ प्रद दुख हारी तासु तिलक निज भाल सँवारी
शिव की रति वरनौं दुख हरनी भवसागर की जो शुभ तरनी
हरिहर यश सब भाँति उदारा व्यासादिक मुनि कृत विस्तारा
कौन पुरान भयो जेहि मांहीं ॥ श्रीगिरिजापति की रति नांहीं
श्रीगिरिजा वर पद मन दीन्हे वहुत ग्रंथ अवलोकन कीन्हे
जहँ प्रभु यश गायो सुख मूला मंगल मय नाशक सब शूला
एहु भल वहु अनभल किमि कहई जो गुन महिमा जानत अहई
है परंतु यह रीति सुहाई ॥ जासु द्वार जेहि लही भलाई ॥
तेहि को सबौं त्रम है सोई ॥ ताहि सराहत दोष न होई ॥
एहि प्रकार सबौं पर जोई ॥ तेहि पश की वरनत रुचि होई

दो॰॥ श्री ब्रह्मोत्तर खंड महँ शंकर चरित उदार ॥
शैव धर्म को जहँ भयो बरनन भली प्रकार ८

सो पुनि २ जब कीन विचारा ॥	गाथा गाय कही बहु बारा ॥
शिव की रति अतिशय प्रिय लागी	गाथा रुचिर प्रेम रस पागी ॥
हर आराधन विधि परिपाटी	शंभु धाम पंथा उद्घाटी ॥८॥
मन अति मोद बढ़ावनि हारी	शिव गाथा जेहि में अति प्यारी
बहु प्रकार मन पाय हुलाशा	मधुर मनोरथ कीन्ह प्रकाशा
जो भाषा महँ यह यश पावन	बरनो जाय लोक मन भावन
देवगिरा नहिँ अमाजिन केरा ॥	तिनहू को हित होय घनेरा ॥
यह अभिलाष रही मन माहीं	कर्म विवश पूरन भै नाहीं ॥
अध्यातम रामायण मांहीं ॥	जो गीता रामानुज पांहीं ॥
उत्तर में बरनी सुख सारा ॥	दोहा तासु स्वमति अनुसारा
कीन्हे पुनि शिव विजय सोहाई	शंभु प्रसाद यथामति गाई ॥

दो॰॥ महा मनोरथ सिंधु को जब पायो मैं पार ॥ ९ ॥
तब ब्रह्मोत्तर खंड को भयो उछाह अपार ९ ॥

विश्वनाथ प्रेरक उर वासी ॥	सत चित आनंदमय अविनाशी
जेहि प्रकार निज विजय सँवारी	पुज बहु माहि तथा त्रिपुरारी
बार बार हर गौरि मनाई ॥	श्री गुरु पद चरनन शिर नाई
शिव कीरति बरनौं अति पावनि	श्रवण सुखद सज्जन मन भावनि
इंदु अंक विंशति षट् साला ॥	आनंद बन यह चरित रसाला
फागुन सुखद पाख उजियारा	दशमी रैनि पुष्य शनि वारा
करहुँ अरंभ शंभु गुन गाथा	पुनि २ गुरु चरनन धरि माथा
है शिव लोक दानि यह ग्रंथा	जनु कैलास केर कर पंथा ॥
हैं अध्याय रूप विश्रामा ॥	सज्जन पथिक न कहँ सुख धाम

जेसाधन वरले वहु भांती ॥ ८॥ सोइ सुखदायक तहं वर पांती

दो०॥ जे आवहिँ इतिहास वर सुंदर कथा विभाग
ते एह मारग के रुचिर वापी कूप तडाग २०॥

जहं शिव भक्ति प्रवाह उदारा सो अति पावनि सरिवर धारा
सव श्रम नाशक अह सुखमूला सुखप्रद हरनि सदा सव शूला
है जहं शिव स्वरूप कर ज्ञाना सो तारक दृढ सेतु समाना ॥
श्रद्धा वर पाथेय समाना ॥ पथदर्शक गुरु ज्ञाननिधाना
जे हर भक्त विमल गुण पांती ते एहि पथ के सुहृद संघाती
तजि विचार दूसर एहि मांहीं मारग को कोनहु श्रम नांहीं ॥
काम क्रोध मत्सर अभिमाना लोभ मोह मग तस्कर नाना
यद्यपि चोर दुखप्रद मग मांहीं नृपवल्लभ कहं देखि डरां हीं
तिमि जगदीश भक्त कहं देखी कृप्रादिक भय लहहिँ विशेखी
जिनके शिव आला जग मांहीं तिनको कहूं कोनहु भय नांहीं
यद्यपि सुगम न कछु संदेहा शंभु कृपा विन दुर्लभ एहा
नाथ कृपा भाजन है जोई पांव धरै एहि मारग सोई॥
एह विधि मग महिमा दर्शाई वरणों प्रभु कीरति मन भाई

सो· श्री माधव को शिरनाय वहुरिउ माधव को सुमिरि
सो मारग मन लाय वरनहि माधव भारती २१

अथ ग्रंथारंभः

दो·॥ ज्योतिरूप आनंदमय निर्मल ज्ञान सरूप ॥
सव गुन भासक नित्य प्रभु वंदो शिव सुर भूप २२

शौनकादि मुनि परम सुजाना कलि के दोष देखि वलवाना
नीमषार अति पावन जानी तहां वसहिं वहु ऋषि मुनि ज्ञानी
योग समाधि आश विसराई प्रभु के चरित सुनहिं मन लाई

॥ सिंधु यात्रीति भक्तानां कृथं यात्रौ विनां

सूत सुनावहिं प्रभु गुण गाथा	एहि प्रकार सब ऋषय सनाथा
आनंद वारिधि मगन विराजहिं	जिन्हहिं देखि कलि अवगुन भाजहिं
एक वार ते सब वड भागी ॥	चंद्रकला धर पद अनुरागी
सूतहि बहु प्रकार सन्मानी ॥	बोले वहुत सराहि सुबानी
विस्नु महातम आपु सुनावा ॥	अति उत्तम सुनि वहु सुख पावा

दो॰ पाप विनाशक पुन्य प्रद हरि गुन दियो सुनाय ॥
अव पुरारि की रति विमल कहु वरनौ मुनि राय १२

तासु मंत्र महिमा अति पावन	पुनि शिव के व्रत परम सुहावन
पूजा की महिमा मुनि राई ॥	कथा महातम देहु सुनाई ॥
भक्ति प्रवाह कहो गुनवाना ॥	वहुरि शंभु के भक्त सुजाना
तिनकी महिमा सब अघ हरनी	कहो मुनीश मोह तम तरनी ॥
मुनि वर प्रश्न सुनत हर्षाने ॥	सूत सप्रेम सकल सन्माने ॥
ऐ तोहि परम श्रेय सुखदाई	शंभु कथा में प्रीति सोहाई ॥
सो तुम्हारि अति पावन देखी	उमा नाथ पद प्रीति विशेखी
शंभु भक्ति महिमा विस्तारा ॥	को अस जो जग पावहि पारा
ब्रह्मादिक नेहि सकहिं न गाई	सो किमि मो पै वरनि सिराई
नाथ प्रेम महिमा विस्तारा ॥	तासु लेश निज मति अनुसारा
वरनत हौं तुम सन मुनि राई ॥	श्रवण करहु सादर मन लाई
जिते यज्ञ कहे श्रुति मांहीं ॥	जाप यज्ञ सम दूसर नाहीं
सव पुन्यन महँ परम सुहायो	सकल श्रेय महँ जो मन भायो
परम यज्ञ जप यज्ञ सुजाना ॥	गायो गीता में भगवाना ॥

सो॰ ज्ञान द्रुमोर स्वरूप यज्ञन में जप यज्ञ को ॥ ॥
तेहि ते परम अनूप प्रथमहि सोइ वरनन करौं १३

शंकर मंत्र जिते संसारा ॥	अहै षडक्षर परम उदारा

दिव्य परम कल्याण स्वरूपा कहहिं अरथ तेहि परम अनूपा
सब देवन्ह में जिमि त्रिपुरारी ॥ तिमि यह मंत्र न में सुखकारी
प्रणव हीन पंचाक्षर सोई ॥ मुक्ति हेतु ऐसो नहिं कोई ॥
जे चाहैं जग सिद्धि अपारा ॥ तैसे बहु हर मंत्र उदारा ॥
तासु परम महिमा दर्शाई ॥ श्री चतुरानन सकहि न गाई ॥
सब श्रुति को जहँ परि अवसाना सो सर्वज्ञ शंभु भगवाना ॥
पूरन सत चित आनंद रूपा रमे जहां सो नाथ अनूपा ॥

दो॰ ॥ मंत्रराज यह मंत्र वर उपनिषदन को सार ॥
परब्रह्म पावत भये मुनि वर जासु विचार १४

नमस्कार ते जीव स्वरूपा ॥ शिव पद ते परब्रह्म अनूपा
उभय अभेद दिखावन हारा जानहु मुनिवर अंक यकारा
तेहि ते शुभग मंत्र वर एहा ॥ परब्रह्म मय नहिं संदेहा ॥
जे भव पाश बंधे संसारा ॥ तिन के हित शंकर निर्द्धारा ॥
प्रथम प्रणव जानहु गुनवाना नमः शब्द पुनि परम सुजाना
पुनि शिवाय यह रीति गुणाकर परम मंत्र बरनो करुणाकर
जासु हृदय एह मंत्र सोहावा बसहिं सदा निगमागम गावा
बहु तीरथ बहु मंत्र सोहाये बहु जप मख अनेक मन भाये
सब कर फल कर तल है तासू सो पुनि करै न और प्रयासू ॥
ताहि को जब लौं नाहिं उच्चरहीं ॥ तौ लौं भ्रम सागर नर परहीं ॥
तौ लौं अति दारुन संसारा ॥ भ्रमहि जहां दुख राशि अपारा
जेते सकल मंत्र अधि राजा ॥ तिन सब को एहि जानहु राजा ॥

सो॰ ॥ सर्व ज्ञान निधान शेखर सब वेदांत को ॥ २ ॥
शौनक परम सुजान शंभु षडाक्षर मंत्र यह १५
मुक्ति पंथ श्रुति गन दर्शायो जासु दीप यह मंत्र सुहायो ॥

मंत्रमहिमा ॥

जो अज्ञान सिंधु गंभीरा ॥ वडवानल सम यह मति धीरा ॥
पातक वन कहं दाव समाना ॥ मंत्र राज एह जानु सुजाना ॥
नारि शूद्र संकीरण जोई ॥ जपत मुक्ति पावत सब कोई ॥
नहि दिक्षा नहि होम प्रकारा ॥ संसकार तर्पन व्यवहारा ॥
नहिं पुनि काल नेम उपदेशा ॥ अति पुनीत यह कह्यो महेशा ॥
दुइ अक्षर को जो शिव नामू ॥ महापाप नाशक गुन धामू ॥
नमस्कार युत किमि कहि जाई ॥ मुनिवर तासु प्रभाव वडाई ॥
एहि कारण सद्गुरु पहं जाई ॥ सुने मंत्र नायक सुखदाई ॥
पुन्य क्षेत्र महं जपहि सुजाना ॥ सद्य सिद्धि प्रद मंत्र वखाना ॥

दो॰ ॥ गुरु के लक्षण अब सुनो मुनिवर परम सुजान ॥
मन वच क्रम निर्मल सदा शमरत ज्ञान निधान २६

साधु सुभाव लोक हित कारी ॥ जिनहिं परम प्रिय हर कामारी ॥
मितभाषी मिथ्या नहिं कहहीं ॥ काम क्रोध वर्जित नित रहहीं ॥
सदाचार निर्मल जिन केरा ॥ इंद्री जित परितोष घनेरा ॥
इत्यादिक गुन ग्रह गत माना ॥ देहिं कृपा करि मंत्र सुजाना ॥
तीन काल सिद्धि प्रद सोई ॥ जो साधक गुरु पद रत होई ॥
जपलायक सुनु सुथल विभागा ॥ पुष्कर अरु केदार प्रयागा ॥
सेतुबंध गोकर्ण सोहाया ॥ नैमिष वन पावन मुनिराया ॥
संक्षेपहि थल दिये सुनाई ॥ सद्य सिद्धि दायक मुनिराई ॥

दो॰ ॥ इहां एक इतिहास वर वरनन करहिं सुजान ॥
एक बार वहु वार के सुनत होत कल्यान ॥ २७ ॥

यदु वंशिन महं परम सुजाना ॥ मथुरा के नरपति मतिमाना ॥
अत्युत्साह महा वलवाना ॥ शूर धीर अतिशय द्युतिमाना ॥
अप्रधर्ष्य गंभीर उदारा ॥ २ ॥ कामदेव सम रूप अपारा ॥

१८ प्रीति नारी को सुखकीरति होई और प्रीतियुत रहित विधि सोई

नीति निपुन सबलक्षन धामा। महाधनुषदास है सुनामा।
काशि राज कन्या गुन खानी। नामकलावति परम सयानी।
रूप शील मय तासु विवाहू। माधुरेश संग सहित उछाहू।
भयो जबहि आये निज गेहा। प्रिया वदन लखि सहित सनेहा।
निशा समय निज सयन बुलाई। प्राणप्रिया नृप दिग नहिं आई।
कामविवश बहु विनय सुनाई। तदपि न भै नरपति मन भाई।
तब नरेश निज सयन विहाई। तासु गहन हित कीन उपाई।

दो॰ महाराज मोहि छिअहु जनि साहस को नहि काम
धर्माधर्म विवेक युत श्री नरपति गुन धाम १८

प्रिय प्रीतम संगम है जोई। उभय प्रीति युत सुखप्रद सोई।
जब मम प्रीति लाभ सरसाई। तब हूै है संगम सुखदाई।
कौन प्रीति कह सुख नरनाहा। वल करि चहहिं जो भोग उछाहा।
प्रीति रहित रोगिनि जो दारा। गर्भवती पुनि जेहि व्रत धारा।
रजस्वला अथवा नहिं कामा। भोग योग ऐती नहिं वामा।
प्रीएान पालन लाल नरंजन। नारि कुसुम कर वर नहिं सज्जन।
इत्यादिक बहु नीति बुझाई। कामविवश मन तर नहिं आई।
वलकरि तेहि भुज सो गहि लीन्हा। भोग हेतु परिरंभन कीन्हा।

दो॰॥ तप्त लोह के पिंड सम कुअल जरो महिपाल॥
भयविह्वल अति शाय भयो छोडि दियो तत्काल १९

भामिनि यह अचरज वड भारी। मोहि भयो तव गात निहारी।
पंकज सम कोमल तव गाता। अनल रूप कों भयो विधाता।
एहि प्रकार भय विस्मय देखी। विहँसि कह्यो करि विनय विशेखी।
कारन सुनहु नाथ मन लाये। दुर्वासा मुनि मम गृह आये॥
बाल वयासि मम रही सुजाना। श्री मुनिवर तप ज्ञान निधाना।

शंभु मंत्र पंचाक्षर जोई ॥ करुणा करि दीन्हो मोहि सोई
तासु मंत्र कर परम प्रभावा ॥ मम तन कल्मष सकल नशावा
तव सों मम अति पावन काया पाप सहित जो नर समुदाया
देव भक्ति वर्जित जे लोगा ॥ ते नहिं मम तन परशन योगा

दो॰॥ तुम पुनि राज स्वभाव वश कुलटा गणिका नारि
मदिरास्वादन जे करहिं सेवहु सदा सँवारि २०॥
नित्य स्नान नें तुम करहु तुम मंत्र जपो नहिं कोय ॥
भजहु न शंकर चरण मम पर्श शक्ति किमि होय २१

एह प्रकार सुनि प्रिय की वानी नरपति कहन लगे सुनरानी
पंचाक्षर विद्या जो गाई ॥ २॥ प्राणप्रिया मोहि देहु सिखाई
जासु प्रभाव होय पावन तन ॥ लहौं तोर संगम मनभावन
नाथ उचित उपदेश न मेरो ॥ गर्ग महा मुनि कुल गुरु तेरो
तिनकी शरण होहु नरपाला ते करिहैं उपदेश कृपाला
एह विधि सुनि वनिता की वानी दंपति गे जहँ मुनि विज्ञानी
हाथ जोरि करि दंड प्रणामा प्रीति सहित पूजे गुनधामा
वहु प्रकार करि विनय वडाई नरपति निज अभिलाष जनाई

दो॰॥ नाथ कृतारथ करो मोहि शरण गही मैं आय
शिव पंचाक्षर मंत्र मोहि उपदेशहु मुनिराय २२
राज कर्म वश जो भयो पातक जान अजान ॥ ॥
नाश होहि जेहि मंत्र ते सो दीजै भगवान ॥ २३॥

एह प्रकार सुनि नरपति वानी यमुना तीर गये मुनि ज्ञानी
कालिंदी तट परम सुहायो ॥ पावन तहँ मंडप जहँ छायो
करि नृपाल यमुना अस्नाना व्रत धरि कीन्हो नेम विधाना
नृप कहँ प्राची दिशि वैठायो मुनिवर शिव पद शीश नवायो

उत्तरमुख बैठे मुनिराया ॥ धरि माथे कर मंत्र सुनाया
शिवस्वरूप वर मंत्र प्रतापा। नृप तन सों निकरे सब पापा
कोटिन काक रूप दर्शाहीं ॥ दग्धपक्ष ते भूतल माहीं ॥
गिरि २ भस्म होत सब जाहीं दंपति भे विस्मित मन माहीं
दुनहु श्रीगुरु पद शिर नाई ॥ प्रीति सहित यह गिरा सुनाई
नाथ बडो अचरज हम देखा। वायस कुल कहि भाँति बिशेखा
तन सों प्रगट भयो मुनिराई ॥ भली प्रकार कहो समुझाई
संचित सहस जन्म कर पापा। जिन सों रहा नृपति तन व्यापा।
अघवश बहुत योनि भ्रमि आये। पुन्य प्रभाव मनुज तन पाये।

दो॰ ॥ शंभु मंत्र वर हृदय महँ कीन्हो जबहिं प्रवेश ॥
काक रूप सब पाप तब निकरि गये मथुरेश २४

कोटिन ब्रह्म घात अघ नाना ॥ तथा अगम्यागमन सुजाना
स्वर्ण स्तेय पाप नरपाला ॥ भ्रूणघात अघ परम कराला
कोटि जन्म के पाप अपारा ॥ तुरत नृपाल होंहि जरि छारा
पंचाक्षर जबही उर आवै ॥ पाप लेश तन रहन न पावै ॥
तासु प्रभाव जरे सब पापा ॥ भयो दूरि सब तब संतापा
जपहु सदा पालहु निज राजू भोगहु अभिमत भोग समाजू
अस कहि गे निज गृह मुनिराया दंपति हृदय मोद अति छाया
प्रिया सहित नरपति गृह आये मंत्र प्रभाव परम द्युति छाये

छं॰ अनुकूल तब अति देखि प्यारिहि नृपति परिरंभण कियो
श्रीखंड शीतल गात रानिहि भेटि अतिशय सुख लह्यो
निर्धन महा निधि पाय जेहि विधि लहहिं मुद मन भावनो
तेहि विधि प्रिया संयोग सुख पायो नरेश सुहावनो १

दो॰ सकल वेद उपनिषद को अह पुराण को सार ॥२॥

अघनाशक पंचाक्षरी महिमा जासु अपार ॥ ॥
सो॰ तासु प्रभाव मुनीश गायो हम संक्षेप ते ॥ ॥
वश्य होहिं जगदीश अति वरिष्ट एह्र मोद प्रद २६

इतिश्री मत्परम हंस परिव्राज काचार्य्य श्री० स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे पंचाक्षर मंत्र महिमा प्रकाशनं नाम प्रथमो विश्राम: १ ॥ ॥

चौपाई

सूतकह्यो मुनि अति हर्षाई ॥ और दृह्र शिव महिमा मुनि राई ॥
कहिहौं तुम सन सहित सनेहा सुनत मिटहिं सब उर संदेहा ॥
भक्ति सहित शंकर पद पूजा परम धर्म एहि सम नहिं दूजा ॥
पाप विनाशक और उपाया एहि समान नहि कछु मुनिराया
सकल मनोरथ पूरण होई सब आनँद दायक है सोई ॥
आयु बढै विजयी नर होई ॥ रोग समीप आव नहिं कोई ॥
भुक्ति मुक्ति दायक मुनि राया ईशाराधन श्रुति दर्शाया ॥
सुखी रोगी लो जो अघ होई ॥ छोट बडो सब रहै न कोई ॥
श्रुति पुराण कर संमत एहा ॥ बिन छल उमानाथ पद नेहा ॥
महादेव के हित मुनि जोई ॥ जान अजान करै नर कोई ॥
शंभु तोष प्रद जौन विधाना सो सब मुक्ति हेतु नहिँ आना ॥
माघ कृष्ण चौदशि जो होई तेहि को व्रत अति दुर्लभ होई ॥

दो॰ तादृ में निशि जागरण दुर्लभ महा मुनीश ॥ ॥
तेहि ते अति दुर्लभ कह्यो दर्शन श्री जगदीश १ ॥
अति दुर्लभ परमेश को तहं पूजन मुनिराय ॥ ॥
मिलै जवाहि बहु जन्म को मुनिवर पुन्य सहाय २

बिल्वपत्र सों श्री शिव पूजन अति दुर्लभ वरनत हैं मुनिजन

अयुत वर्ष सुरसरि अस्नाना। कीन्हे जो फल होय सुजाना॥
विल्व पत्र अर्पन करू जोई। सहजहिं सें पावत नर सोई॥
युग २ जेजे दिन मुनिराया॥ पावन वरने श्रुति समुदाया॥
माघ चतुर्दशि में सव आई। स्थित होहिं सकल मुनिराई॥
करहिं अजादिक जासु प्रसंसा। जे मुनि वर कुल मानस हंसा॥
वशिष्ठादि मुनि परम प्रभावा। माघ चतुर्दशि को दर्शावा॥
एह उपवास करै जो कोई। सो मख सम तेहि कहं फल होई॥
कल्प कोटि तप कर फल जोई। निशि जागरण पाव नर सोई॥
एक हू विल्वपत्र मुनिराया। जेहि शंकर के शीश चढाया॥
तीनि लोक महं पुन्य सोहाई। तेहि समान नहिं श्रुति दर्शाई॥
इहां परम पावन एह गाथा। प्रगट करी गौतम मुनि नाथा॥

दो॰॥ गोपनीय यद्यपि रहा तद्यपि एह इतिहास
करुणा करि सव लोक पर मुनि करि दियो प्रकाश॥३॥

दिनकर कुल महं एक महीपा। परम धर्म रत निज कुल दीपा॥
नाम मित्र सह वीर सुजाना। शास्त्र अस्त्र विद्या सव जाना॥
सर्व धनुर्धर मह वर यारा॥ निगमागम कर जानन हारा॥
उत्साही अतिशय वलवाना। अति उद्योगी दयानिधाना॥
पुन्य केर मानहु समुदाया। तेजन को पंजर महि राया॥
अचरज को जनु खेत विराजा। शोभनीय मूरति अति राजा॥
दीप क्रांत शुचि मन जेहि केरा। श्रिया क्रांत वपु रुचिर घनेरा॥

दो॰॥ वहु सामंत मुकुट मणि किरण प्रकाश अनूप
जगमगात जाके चरन अति प्रभाव तेहि भूप॥४॥

एक वेर म्रगया लोलुप मन। कियो प्रवेश घोर गहूर वन॥
वहुत सेन संग सो नरनाहा। मारे वान चुलाय वराहा॥२॥

शार्दूल रुरु गवय घरूकारे ॥ महिष म्रगेंद्र भूमि पति मारे
म्रगया सक्त चढौ रथ माहीं ॥ कानन विचरहिं कछु भय नाहीं
एक निशाचर तहँ न्रप मारा ॥ तासु अनुज लख्यो शोक अपारा
तदपि विचार कियो मन माहीं ॥ न्रप वध केरि शक्ति मोहि नाहीं
देव दनुज जे परम कराला ॥ सब कहँ दुराधर्ष नरपाला
बिन छल न्रपति जीति नहि जाई । यह विचार निज मनहि दृढाई
पाप धाम सुंदर धरि वेषा ॥ मनुज रूप अति रुचिर विशेषा
आयो जहाँ रहा महि त्राता ॥ मूर्त्तिमान मानहु उतपाता ॥
नम्र हुति देखा महि राई ॥ आयो करन हेतु सेवकाई ॥
बिन जाने तेहि कर अघ भारी ॥ कियो पाक सेवा अधिकारी ॥
करि बन में कछु काल विहारा ॥ म्रगया तजि निज पुर पगु धारा
मदयंती न्रप नारि सयानी ॥ जिमि दमयंती नल पटरानी
सो राजा कहँ प्राण पियारी ॥ सती शिरोमणि जग उजियारी
श्राद्ध केर बासर जब आयो ॥ गुरु वशिष्ठ कहँ बोलि पठायो

दो॰ ॥ पाचक वपु निश्चर कियो शाक मिलो नरमांस
गुरु सन्मुख नरनाह सोइ परसो सहित हुलास ५

गुरु वशिष्ठ करि क्रोध अपारा ॥ शाप दियो बिन किये विचारा ॥
पापी महिप तोहि धिक्कारा ॥ नर आमिष भोजन महँ डारा
छल करि लै आयो मम आगे ॥ होहु निशाचर परम अभागे
मुनि विचारि निश्चर अघ जाना ॥ बोले गुरुवर दयानिधाना ॥
द्वादश संवत निश्चर भावा ॥ बहुरि लहोगे अपन सुभावा
मुनि सकोप बोला नरपाला ॥ वृथा दियो मुनि शाप कराला
नहि कीनो अपराध हमारा ॥ सो तुम नहि मुनि नाथ विचारा
मैंहूं शाप देहौं जस दीन्हा ॥ अस कहि अंजलि में जल लीन्हा

रानी पति चरनन शिर राखी । बारन कीन विनय बडि भाखी

दो· मानि लियो प्यारी वचन गुरुहि शाप नहिं दीन्ह
पुनि नरेश निज हृदय महँ यह विचार शुभ कीन्ह ६

कौन ठौर यह भूतल माहीं ॥ जीव समूह भरे जहँ नाहीं
भूत विनाशक अंजुलि वारी । डारा चरन भूत भय हारी ॥
श्याम चरन नृप को ह्वै गयेउ । कल्मषपाद नाम तेहि भयेउ
गुरु वर शाप विवश नरपाला । दनुज रूप ह्वै गयो कराला
मनहु काल यम रूप भयावन । खान लगो मनुजादि अपावन
वन में सदा फिरै भयकारी ॥ एक मुनीश्वर तासु पियारी
वयकिशोर कामातुर दंपति । रमत रहे देखी तिन की रति
मुनि नंदन पकरो नृप धाई । शार्दूल जिमि मृग लै जाई
खायो चहै शाप वश निष्ठुर । तासु प्रिया तेहि देखि भयंकर
कांपत रोवत डरत सयानी । राजा सन बोली यह बानी ॥
सविता कुल यशधर नरपाला । मदयंती पति दीन दयाला
राजन के पति निष्ठुर नाही ॥ पापन यह लावो मन माहीं
आरत शरणागत रखवारे । पतित होंहि ये प्राण हमारे
इन्हहिं खाव नहिं ये द्विजराया । निगमागम तप राशि अमाया
प्राण दान इन कर जो कीन्हा । जग को अभय दान जनु दीन्हा
भूसुर नारि अनाथ न होई । कृपासिंधु अव कीजे सोई ॥

दो· जे अनाथ अह दुखी जन तिन्न के तुम रखवार
तुम समान जे साधु सुठि करहिं न जग अपकार ७

एहि प्रकार बहु विनय सुनाई । निष्ठुर उर करुना नहिं आई
खाय गयो शिर तोरि कराला । दुखी भई अति शय द्विज वाला
क्रोशित दीन करि विपुल विलापा । बीनि लिये पति अस्थि कलापा

चिता रोपि पावक तहँ लाई ॥ पुनि भूपहि यह गिरा सुनाई ॥
रे पापी मम पति तैं खायो ॥ पतिव्रता को दुख उपजायो ॥
अब सौं लै जब हीं तिग नारी ॥ जैहौ ह्वैहै मृत्यु तुम्हारी ॥
एहि विधि शाप नृपति कहँ दीन्हा सती प्रवेश अनल महँ कीन्हा
शाप अवधि बीते नरनाहा ॥ निज गृह गवनो सहित उछाहा
मिला रूप निज गा संतापा ॥ रानी जाना द्विज तिय शापा ॥
रति प्रिय पतिहि विलोकि सयानी कीन्ह निवारन कहि मृदु वानी
दारा सुख गत भा सुत नाहीं ॥ अति विराग उपजो मन माहीं
सब धन भूतल राज विहाई ॥ बहुरि गयो कानन मुनिराई

दो॰॥ सूर्यवंश थिति हेतु पुनि कीन्ह पुनीत उपाय ॥
मदयंती के पुत्र वर उपजाये मुनिराय ८ ॥ ९ ॥

राजा वन घूमत एक वारा ॥ घोर रूप अति विषम अकारा
धरे पिशाची केर स्वरूपा ॥ द्विज हत्या देखत भयो भूपा
ऋषि लोगन सों पूछि उपाया करन लगे तीरथ मुनिराया
सेये तीरथ सकल सप्रीती ॥ यह विधि गयो काल बहु बीती ॥
द्विज हत्या छांडो नहिं साथा ॥ मिथिला गमन कियो नरनाथा
उपवन में बैठो नरपाला ॥ द्विज हत्या की शोच कराला ॥
श्रीगौतम कहँ आवत देखा पावक सम अति तेज विशेखा
नाथ सबर सेवित मुनिराया नाशहिं रवि सम तम समुदाया
उदित महा गुण पांति विराजा निज कर सह मानहु उडराजा
जिमि द्विज राज कला शिव धरहीं कला तथा मुनि धारन करहीं
तप भाजन संग शिष्य घनेरे जाय प्रणाम कीन नृप नेरे ॥
गौतम देखि हंस कुल नंदन प्रीति सहित कीन्ही अभिनंदन
हँसि पूछी नृप की कुशलाता अव्याहत है तव पद ताता ॥

क्षेम प्रजा सब तव परिवारा॥ केहि कारन मिथिला पगु धारा
राज छोडि विचरहु एहि देशा जनु चिंता कछु तुम्हहिं नरेशा

दो०॥ सब है मेरी कुशल प्रभु नाथ कृपा मुनिराय
जिन राजन के वंश के भूसुर सदा सहाय ९॥

नरपति संपति सकल प्रवीना। द्विजवर के नित प्रति आधीना
एक दुःख मोहि अति द्विजराई सो मुनिवर तोहि कहौं बुझाई
एक पिशाची अति विकराला पगपग पर मोहि दीनदयाला
अति डरापावति है दुखदाई नहिं कोउ ताहि लखै मुनिराई
शापविमोहित मैं अघ कीन्हा तेहि कर दारुण फल विधि दीन्हा
प्रायश्चित्त कियो बहुतेरा॥ एहि दुख को नहि होय निबेरा
बहुत यज्ञ मुनिवर मैं कीन्हे॥ सर्वसु दान तथा हम दीन्हे॥
कीन्हो सरसरिता अस्नाना॥ जे भूतल पर पुन्य निधाना
भूमी बहुत मही मंडल माहीं तीरथ कौन कियो हम नाहीं
जपे मंत्र सुर ध्यान लगाये॥ व्रत धरि कंद मूल फल खाये
कियो यदपि यह सकल उपाई मम मन सुस्थिर नहिं मुनिराई

दो०॥ आजु जन्म भा सफल मम देखा चरन तुम्हार
तव दर्शन ते मम हृदय भयो प्रमोद अपार १०

सो॰ करै मनोरथ कोय बहुत वर्ष लों जो पुरुष॥
सो पुनि पूरो होय यह जनवाद सोहावनो ११

सो सांचो अब भा मुनिराई॥ दीन्हे जो तव चरन देखाई
बहुत जन्म को पुन्य घनेरो॥ उदय भयो करुनानिधि मेरो
जो तुम भव भय हर सुखदाई मम चखगोचर भयेहु गोसाईं
श्री मुनि भव भय ते रखवारे॥ कौन देश ते अब हि पधारे॥
मम मन की यह तर्क गोसांई बहुत देश भूमि कै मुनिराई

आयो हौं कछु अचरज देखी ॥ अब मन में है मोद विशेखी ॥
प्रेम सहित जो भाषण करहू मम उर जनु आनंद सो भरहू
अब में पाप राशि मुनिराया शरणागत ही कीजै प्रभु दाया
अघनिवृत्ति सुख जेहि विधि होई । करुनापयानिधि कीजै सोई
यह प्रकार सुनि विनय सुजाना दयासिंधु गौतम भगवाना ॥
महाघोर जे पाप अपारा ॥ तिनकी निष्कृति केर प्रकारा
कहन लगे तेहि सन मुनिराई साधु २ नृप सुनहु उपाई ॥
नरपति धन्य धन्य बडभागी सुखी होहु अब सब भय त्यागी

दो· विद्यमान भय हरण प्रभु भक्तन के प्रतिपाल ॥
शरण भये जे शंभु की तिन्ह हि न भय नरपाल १२

सुनु नरपति बडभाग सुजाना तीरथ अतिशय सुकृत निधाना
महापाप हर परम सुहायो नाम गोकरण सुर मन भायो
सकल पाप जे घोर वडेरे ॥ जहां गये अवहिं नहि नेरे ॥
सुमरन सो सब पातक हरहीं गौरीपति निवास जहं करहीं
जिमि कैलाश शिखर के ऊपर यथा वसहिं शिव मंदर गिर पर
तिमि गोकरण वसहिं भगवाना निश्चय जान नरेश सुजाना
होय अनल कर तेज अपारा विधु तारागण ग्रह उजिआरा
करै अपर पुनि कोटि उपाई जिमि सविता विन तम न नसाई
तेहि प्रकार जग तीरथ जेते ॥ तथा क्षेत्र पावन सब तेते ॥
तुरत पाप नहि देंहि नसाई जिमि गोकरन देखि अघ जाई
वरु कीन्हो नर पाप घनेरा ॥ तहां गये नहिं भय यम केरा
प्रथमहि तप करि अति सिधि पाई विधि इंद्रादि रहे सब छाई ॥

दो· लाख वर्ष तप किये को फल पावै वर जौन ॥
तहां एकादिन व्रत किये पावत है नर तौन १३

गणेश॥

हरि ब्रह्मा सुरपति हित लागी । वास करैं तहँ जन अनुरागी ॥
शंकर वरदायक सुखधामू । अगर महा वल है अभु नामू ॥
महा घोर तप करि दश शीशा । पायो शंकर लिंग मुनीशा ॥
गणनायक कीन्हो अस्थापन । करहिं देव को सब कोउ पूजन ॥
हरि विधि सुरपति वायु निकाया । द्वादश सविता गण मुनिराया ॥
तथा अष्ट वसु रुद्र समाजा ॥ देव वैद उडगन उडराजा ॥
एते सुर भूसुर नरपाला ॥ प्राची द्वार वसैं महिपाला ॥
मृत्यु रूप यम और कृशानू । चित्रगुप्त यम साचिव सुजानू ॥
पितर रुद्र सह दक्षिण द्वारा ॥ वरुन और सरिता परिवारा ॥
सरिता पति गंभीर उदारा ॥ वास करहिं सब पश्चिम द्वारा ॥
भद्रकर्णिका मातु भवानी ॥ सहित मातृगण सब सुखखानी ॥
पवन देव अरु धनद सुजाना । उत्तर द्वार कियो इन थाना ॥

दो॰ ॥ विश्वावसु अरु महावल चित्रसेन सह आय ।
गंधर्वन सह चित्ररथ पूजहिं गाय बजाय ॥ २४ ॥
रंभा मेना उर्वशी तथा घृताची नाम ॥ ॥
सुखमा धाम तिलोत्तमा पूर्वचित्ति सुरवाम ॥ २५ ॥

इत्यादिक शिव सन्मुख जाई । नृत्य करहिं वर भाव दिखाई ॥
कश्यप कण व वशिष्ठ सुजाना । भरद्वाज मुनि ज्ञान निधाना ॥
जैमिनि विश्वामित्र उदारा ॥ जासु महा तप कर नहिं पारा ॥
तेज धाम अंगिरा महामुनि । क्रतु जावाल मुनीश महद्धुनि ॥
ये सब ब्रह्म ऋषय तहँ जाई ॥ चहुं दिशा शिव सेवहिं मन लाई ॥
अत्रि मरीचि दक्ष भगवाना । नारदादि मुनिनाथ सुजाना ॥
सनकादिक देवर्षि गंभीरा ॥ ऊपर दिशि से वहि मतिधीरा ॥
ते सेहि और हु जे मुनिराया । पहिरे अजिन साधु समुदाया ॥

= मृगचर्म



दंडी यति मुंडी अस्नातक ॥ दग्ध भये जिनके सब पातक
ब्रह्मचारि तापस गण भारी भक्ति सहित सेवहिं त्रिपुरारी
त्वचा अस्थि शोषित मतिधीरा तपसो अतिशय कृशित शरीरा

सो· देव पितर गंधर्व चारण खग अरु किंपुरुष ॥
किंनर गुह्यक सर्व जे विद्याधर सिद्ध वर १६

नाग पिशाच और बैताला निश्चर बलतर विभव विशाला
नाना भूषण नाना वाहन ॥ चढे प्रकाशित रुचिर विमानन
सकल शंभु अस्तुति उच्चरहीं गुन गावैं प्रणाम सब करहीं
नाचहिं हर्षहिं सुख सरसाई मुदित होंहि अभिमत वर पाई
तासु सरिस नरपति महि माहीं तीरथ वर दूसर कोउ नाहीं ॥
कुंभज ऋषि वर सनत कुमारा अग्नि देव तिहु पुर उजियारा
नरपति प्रियव्रत सुत बलवाना तिनहु कियो तप केर विधाना
भद्रकालि मनसिज शिशुमारा तप कीन्हो बहु भाँति अपारा
सर्प नमें दुर्मुख बहुतेरा ॥ मणि नागहु तप कीन घनेरा
इलावर्त आदिक जे नागा ॥ हरिवाहन पुनि गरुड सुभागा
कुंभकर्ण रावन बलवाना तथा विभीषण परम सुजाना
औरहु देव सिद्ध नर निश्चर प्रेम सहित आराधि शिवंकर
निज २ नाम केर वर लिंगा मानहुं निज यश केतु अभंगा
कीन्हे अस्थापन तहँ नाना पावन भे बहु सिद्ध सुजाना
पुनि कीन्हे तीरथ तिन नाना सब देवन के तहँ अस्थाना
देवदेव माधव चतुरानन श्री गणनायक और षडानन
धर्म सेतु पालक वर धामू ॥ श्री दुर्गा मदमन अभिरामू

दो· असंख्यात तीरथ तहां पग पग पर महिपाल
तैसेहि कोटिन लिंग वर जानहुं परम विशाल १७

सो॰॥ बहुत कहीं कहा गाय जे पाथर गोकरण महँ
सो जानौ मुनिराय श्री शंकर के लिंग सब १८

जे तोवारि तहाँ मुनिराया॥ तीरथ रूप पुरानन गाया
जैसे लिंगन की मिति नाहीं तैसे बहु तीरथ तेहि माहीं
जिमि गोकरण मुख्य अस्थाना तथा महाबल लिंग सुजाना
कृतयुग धवल रूप रह सोई अरुन बरन त्रेता महं होई॥
पीत बरन द्वापर महँ गायो॥ ह्वैहै कलि में श्याम सोहायो
सप्त विवर व्यापी पुनि सोई॥ मृदुल रूप कलि में पुनि होई
बरन्यो जो गोकरण महीपा॥ तीरथ पश्चिम सिंधु समीपा
द्विज हत्या आदिक जे पापा॥ नाश करै सब भव संतापा॥

छं॰ जे ब्रह्म घातक भूतद्रोही शठ सकल गुन हीन हैं॥
पर दार रत दुर्वृत्त लोभी अति कृपण जे दीन हैं॥
दुःशील क्रोधी चोर खल कामी दुराचारी घने॥
ते जायकै गोकरण में अस्नान करि जल पावने १

सो॰ होय पाप सब खीस पाय महाबल को दरश॥
पावहिं पद जगदीश है महिमा अतिशय अकथ १९

तहाँ जाय पावन तिथि पाई पुन्य नखत वास शुभदाई
ईशहि पूजहिं सहित सनेहा रुद्र होंहि जे बिन संदेहा॥
जब कब जो कोई नर होई॥ तहाँ जाय शिव पूजै जोई॥
ब्रह्मलोक सो जाय नरेशा॥ छूटि जाय भव रोग कलेशा
रवि विधि सौम्य वासर जब होई दर्शयोग महँ जो नर कोई॥
सिंधु सलिल तर्पण अस्नाना शिव पूजा व्रत जप अरु दाना
द्विज पूजा पुनि होम विधाना करै जौन शुभ कर्म सुजाना
तेहि कर फल अनंत मुनिराया बहुधा श्रुति पुराण दर्शाया

अध्याय॥

व्यतीपात आदिक वर योगा ॥ रवि संक्रमण केर संयोगा ॥
अरु प्रदोष वेला जब होई ॥ तेहि अवसर शिव पूजा जोई
सो विमुक्ति दायक नरनाहा और हु सुनि अब सहित उछाहा
गोपनीय तोहि सन न्रप भाखौं लखित बदु खदुरवन हिं राखौं
जो तिथि मुक्ति प्रदा श्रुति गाई तासु प्रभाव सुनो मन लाई ॥
महाव्याध पुनि जासु प्रभावा शंकर धाम परम पद पावा ॥

दो· माघ मास अरु पुन्य तिथि कृष्ण चतुर्दशि जोय ॥
बिल्व पत्र शिव लिंग न्रप चारो दुर्लभ होय
अहो शंभु माया प्रबल जेहि वश लोग अयान ॥
नहि सेवत यह महा तिथि यथा मूक श्रुति गान

श्री गोकर्न महा अघ हरनू ॥ तेहि तिथि में न्रप व्रत जागरनू
शिव पूजा निशि में तहं वासा करहिं महा दुख के रविनाशा
एहु विधि जो में गाय सुनाई शंभु लोक सोपान सोहाई
मैं गोकरन गयो नरनाहा ॥ देखा तहं रहि सकल उछाहा
शिव तिथि को उपवास विधाना कीन्हा पूजे हर भगवाना ॥
तेहि दिन परम महोत्सव होई देश देश वासी सब कोई ॥२॥
नर अरु नारि वृद्ध अरु वाला ग्रही वटू भिक्षुक तपशाला
देखि महोत्सव करि शिव दर्शन सकल कृतारथ होहिं मुदित मन

सो· शिष्य सहित नरनाह लौटो हौं गोकरण ते ॥
तिमि सब देखि उछाह निज २ आश्रम कहं गये २२

जे सुरर्षि सनकादि सुजाना राजन्य पय भूसुर ऋषि नाना
करि अस्नान महाबल पूजन जन्म सफलता लहिं आनंद मन
सब दिशि सकल गये तपसाला हमहिं बोलावाजनक न्रपाला
तासु निमंत्रण में हम आये करिहैं नरपति यज्ञ सोहाये

शिव मंदिर गोकरण सोहावा।	जासु महातम तोहि सुनावा।
मग में कौतुक परम विशाला।	तहँ सो किरतीवार नृपाला॥

दो॰ में देखो अचरज महा सो नहिं वरनि सिराय॥
भयो कृतारथ रूप में आनंद उरन समाय २३

इतिश्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी राम कृस्न भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे गोकरण महिमा प्रकाशनं नाम द्वितीयो विश्रामः २॥

चौपाई

यह सुनि पुनि बोला नरपाला।	अचरज देखो कौन कृपाला॥
सो प्रभु दीजे मोहि सुनाई॥	सफल जन्म मम करु मुनिराई
सुनहु कथा हम सों नरनाहा।	जब हम लौटे देखि उछाहा
एक देश के तीर सुजाना॥ २॥	जब हि भयो हम को मध्याना।
विमल सरोवर पाय नहाये॥	मारग के श्रम दूरि वहाये॥
सरतट वट तरु परम सोहाया	सघन सुखद अति शीतल छाया
बैठे तहँ सुख पाय विशेखी	निकट एक चंडालिनि देखी
अंध वृद्ध कृश गात मलीना॥	निराहार भूखों मुख दीना
बहुत रोग पीडित अति व्याकुल	कुष्ट घाव तहँ पूरन कृमि कुल
रुधिर पीव बूडो जीरन पट॥	लपटि रहो जेहि के कृश कटितट
पक्ष्मा कंठ स्थित अति भारी	कंठ रोध सों परम दुखारी॥
एक हु दांत रह्यो मुख नाहीं	लोटि रही धरती तल माहीं
रज सों रह्यो सकल तन व्यापा	दिनकर किरनन को संतापा।
मूत्र पुरीष भस्यो सब अंगा	परम दुरासद गंध प्रसंगा
बढ्यो श्वास कफ रोग अपारा	शिथिल नारिका कर परिवारा
ध्वस्त केश सब अंग विचारी	मस्यो चहै छिन में दुख भारी॥

परम दुरद श्री के समीप आनेके योग्य

दो॰ तासु दशा यह देखि के वटीरूपा उर मांहि ॥ २ ॥
ठहरे हम छिनु भरि तहाँ गमन कियो नृप नांहि १

तुरतहि देखा रुचिर विमाना। आवत है विधु विंब समाना ॥
शिव किंकर बैठे जनु चारी ॥ दामिनि पावक हूं दुति मारी ॥
अर्द्ध चंद्र भूषण वर भाला ॥ कानन कुंडल मुकुट विशाला।
कंकणादि शुचि भूषण धारी शुभ लक्षण शंकर गण चारी
कर त्रिशूल चर्मासि मनोहर अरु खट्वांग टंक अति सुंदर ॥
कुंदु इंदु वर्चस वर नीके ॥ शंकर किंकर भावत जीके ॥
वेग सहित हम जाय समीपा। पूछा यह शिर नाय महीपा।

छं॰ तुम श्री त्रिलोचन चरन किंकर लोक रक्षा हित फिरै
तेहि हेतु खड्ग त्रिशूल चर्माहि अरु गदा धारन करौ ॥
मैं जानि लीन्हो आपु कहँ तुम अनुग गिरिजा रमन के
हे देववर प्रणमामि पुनि २ वलि तुम्हारे चरन के १

दो॰ जग रखवारी हेतु है कै विनोद मिष पाय ॥ २ ॥
अथवा जन अघ हरन हित गमन कियो सुरराय १

मोहि कृपा करि देहु सुनाई कौन हेतु आये सुरराई ॥
बोले दूत सुनहु मुनिराया प्रभु करुनाकर मोहि पठाया
आये शिव अनुशासन पाई जो वृद्धा सन्मुख दरशाई ॥
याहि लेन कारन मुनिराई सुनि मन महं विस्मय अति पाई
हाथ जोरि पूछी यह बानी ॥ अहो देववर यह अघ खानी
यह विमान के लायक नाहीं यथा शुनी क्रतु मंडप माहीं
जन्म अवधि यह सदा अपावनि पाप रूप यह परम भयावनि
दुराचार रत विमल विशोका कैसे लैजैहो शिव लोका ॥
शिव स्वरूप कर याहि न ज्ञाना नहिं विचार नहिं ध्यान विधाना

गिरा सत्य पुनि नीति न जाही। लैजै हो तुम केहि विधि याही॥
पशु आमिष जेहि को आहारा। मदिरा पान सदा जेहि प्यारा॥
हिंसा रत है तन मन येहा॥ कौनि रीति जैहै शिव गेहा॥
जप्यो न पंचाक्षर मन बानी। नहिं पूजे शंकर वरदानी॥
नहीं ध्यान कीन्हो मन लाई॥ किमि लैजैहो एहि सुरराई॥
शिवतिथि को यह ब्रत नहिं कीन्हा। अभय दान जीवन नहिं दीन्हा॥
रचे यज्ञ नहिं बाग तडागा॥ कैसे लैजैहो बड भागा॥
नहिं तीरथ कर मज्जन कीन्हा। दान कछू कबहूं नहिं दीन्हा॥
नहिं कीन्हो ब्रत कर आचरनू। किमि पैहै शिव पद दुख हरनू॥
देखन हूं के जो नहिं लायक॥ भाषए किमि कहियै सुरनायक॥
सत संगति कबहूं नहिं भाई॥ चंड सुभाव जंतु दुखदाई॥
सब प्रकार अघमय विकराला। किमि जैहै शिव धाम कृपाला॥

दो॰॥ जन्मांतर की पुन्य जो होत कछू सुरराय॥ २॥
कुष्ट क्षयी को रोग नहिं कृमि जाते तन खाय ३॥
ईश्वर की चर्य्या परम दुर्वितर्क्य सुरराय॥ ४॥
पापिन हूं को दया करि लेंहि स्वलोक मंगाय ५

इतनि सुनि मेरी यह बानी। करि दीन्ही मम संशय हानी॥
प्रीति सहित यह मोसन कहेऊ। तुम्हहिं कुतूहल जो मुनि भयेऊ॥
पापिनि के लैजान प्रकारा॥ पूछेहु तहं सुनु वचन हमारा॥
प्रथम जन्म एहि द्विवर कन्या। नाम सुमित्रा गुणमय धन्या॥
पूरन सोम बिंब सम आनन। मल्लिमाल सुकुमार सुभगतन॥
सब लक्षण संपन्न सयानी। जनु रति की मूरति मृदु बानी॥
केकय देश पिता कर गेहा। दंपति परिजन सहित सनेहा॥
लालन पोषन पालन कीन्हा। बाढहि दिन प्रति बयसि नवीना॥

वर्द्धमान अतिरूप निहारी । विस्मित होंहि सकल नर नारी
व्याह योग निज सुता निहारी । भूसुर घर वर रुचिर विचारी
पिता वेदशर्मा गुनवाना ॥ देखि वेदविधि वरहिं सुजाना
विधि समेत करि दीन विवाहू । उभय ओर बहु भयो उछाहू
नवयौवन शालिनि वर नारी । पतिगृह गमन कीन्ह सुकुमारी
रहा कछुक दिन शुभ आचारा । बंधु जनन को मोद अपारा ॥
काल पाय भर्तहि अति रोगू । भयो मरन मिलि तासु वियोगू
विधवा शोक दुःख अति पावा । धर्म सहित कछु काल बितावा
यौवन भार बढ़त नित जाई । मनासिज दीन्हो हृदय कंपाई
बंधु वर्ग मन चंचल देखी ॥ रक्षा कीन्ही तासु विशेखी
शासन बहु कीन्हो बहुतेरा ॥ कियो तासु उर मदन बसेरा
मन को रोकि सकी नहि कामिनि । मन्मथ द्युति दमके जनु दामिनि
विधवापन विचार नहि कीन्हो । जार पंथ में पगु धरि दीन्हो
तद्यपि परम विचक्षण सोई । जारभाव जाना नहि कोई ॥
काल पाय दोहद तेहि भयऊ । कुच मुख नील वरन ह्वै गयऊ
सब लोगन जाना तब पापू । सबकहं अति चिंता संतापू

दो॰ नारी नाशहि काम सें नीच सेय द्विजराज
ब्रह्मदंड सें भूमिपति पति वर भोग समाज ५

भोजन नष्ट श्वान छुइ जाई । मदिरा जब हीं वारि मिलाई
कुष्ट रूप कहं देहि बिगारी । कुल नशाय तिमि पाय कुनारी
यह विचारि करि क्रोध अपारा । कर गहि लीन्हे शिर के बारा
घर उत्सर्ग यथाविधि कीन्हा । ग्राम दूरि बाहर करि दीन्हा
काहू दास जात तेहि देखा ॥ रुचिर जघन अति रूप विशेखा
उन्नत पीन पयोधर पाई ॥ प्रीति विनय के वचन सुनाई

रहा शूद्र नायक धनवाना ॥ निज गृह लाय कियो सन्माना
भूषण वसन रुचिर पहिराई रमै अहर्निशि मोद बढाई

दो० गृह स्वामिनि तेहि की भई पायो अति सन्मान ॥
आमिष भोजन नित्य प्रति करै वारुनी पान ६ ॥

एहि प्रकार विहरै रति प्यारी बालक उपजाये दुइ चारी
एक बार बाहर पति गयेऊ सुरापान अबला बहु करेऊ
मदिरा के वश विह्वल नारी ॥ आमिष भोजन रुचि भै भारी
गाइन में भेडी तेहि केरी ॥ २ ॥ गैंडा में बांधी बहुतेरी ॥ २ ॥
रहा परम तम निशि अंधियारी लै कृपाल वृज में पगु धारी
मेष जानि जब किया प्रहारा पापिनि धेनु वत्स को मारा
गृह में लाय वत्स जब चीन्हा शिवशिव शिव उच्चारण कीन्हा
भयवश अरु कछु पुन्य सहाई शंकर नाम लियो सुखदाई
कछुक देर कर शोच विचारा पुनि छेदन करि पाक सँवारा
आधे वछरा को करि भोजन ॥ आधो बाहर फेंकि तासु तन
कीन्हि पुकार कपट दर्शाई ॥ आयो बाघ वत्स गयो खाई
सुनत पुकार दासगण आये वत्सघात सबहि न दुख पाये
सकल लौटि गे तेहि समुझाई प्रात भये निज काज बनाई
प्रीतम तासु धाम निज आयो रमणी को विह्वल तेहि पायो
यह प्रकार बहु समय बिताई काल विवश यमलोक सिधाई
तासु कर्म यमराज विचारी महा घोर नरकन महँ डारी
नरक यातना बहु विधि पाई जन्मी अंत्यज के गृह जाई ॥
जन्म अंध भै परम कुरूपा ॥ वुरु अँगारे के अनुरूपा ॥
मातु पिता सम कौन दयाला ऐसिहु को कीन्हो प्रतिपाला
अन्न कदन्न अपावन जोई ॥ पूति श्वान भक्षित पुनि सोई

= दुर्गंधयुक्त

तथा अपावन रस वहु ताई । तिनसों जननि कुमारि जिंवाई
राजरोग तेहि कै ह्वै गयऊ ॥ तेहि कारण विवाह नहि भयेउ
वालभाव त्यागो जव वाला । मातु पिता का ह्वै गयो काला
वंधु जनन लखि तासु अभागा । सवहि न करि दीन्हो तेहि त्यागा
क्षुधाक्राशित व्याकुल अति दीना । शोक दुखित तन वसन विहीना
लाठी हाथ फिरै सव देशा ॥ तन पालै सहि कठिन कलेशा

सो॰ ॥ भीख मांगी नित खाय चांडाल के घरन में ॥
एहि प्रकार मुनिराय बीती तेहि की वहु वयसि ॰

वृद्ध शरीर भयो सव भांती ॥ दुःख दशा नहिं कछु कहि जाती
कवहूं भोजन वसन विहीना । जाति रही मारग अति दीना
जाना लोग चले वहु जाहीं ॥ अति कोलाहल मारग माहीं
शिव तिथि आवति है तेहि कारन । देश देश के लोग हजारन ॥
श्री गोकरण जाहिं हर्षाने ॥ नर अरु नारि न जाहिं वखाने
सपत्नीक द्विज वर वहु जाहीं । अग्निहोत्र जिन के संग माहीं
राज समाज सहित वहु राजा । गज रथ पैदर वाजि समाजा
परिजन रानिन की असवारी । छत्रादिक शोभा अति भारी
धनी महाजन दासनि काया । संकर जातिन को समुदाया
खाहिं पियहिं सूघहिं अरु गावहिं । नृत्य करहिं कोउ हंसहिं वजावहिं
गर्जहिं कोउ २ कौतुक धारी ॥ हर्षित चले जाहिं नर नारी

दो॰ ॥ कौतुक संयुत देव वर चढे विमानन जाहिं ॥
तिनके हर्ष समाज सुख नाहिं मुनि वरनि सिराहिं ॰

असन वसन को दुख अति भारी । यह चंडालिहु परम दुखारी
महाजनन सों जाचन काजा । जाय मिली तेहि पथिक समाजा
सहज २ करि मन दृढ ताई । कछु दिन में पहुंची तहं जाई

गतभव कर कोउ सुकृत सोहावा। तेहिको करगहि जनु लेआवा।
मारगतर वैठी शिर नाये ॥ याचन हित द्वौ कर फैलाये
करति याचना परम दुखारी वार २ यह गिरा उचारी ॥
प्रथम जन्म के पाप अपारा ॥ मैं पीड़ित नहिं दुख कर पारा
भरि आहार देहु मोहि भोजन कृपा करौ मोपर सिगरे जन,
भोजन हीन वसन मम नाहीं लोरति हौं प्रथिवी तल माहीं
सव प्रकार मोहि दीन विचारी कृपा करौ सिगरे नर नारी
शीतातप को दुख वहुतेरा ॥ महा रोग पीड़ित तन मेरा ॥
लोचन हीन वृद्ध मोहि देखी कृपा करौ सव लोग विशेखी
हा मैं चिर उपवास दुखारी अति प्रचंड जठरानल भारी
जरे जाहिं मेरे सव गाता ॥ कृपा करौ सज्जन सुखदाता
सह जन्म जन्मांतर माहीं मोसन सुकृत वना कछु नाहीं
मैं पापिनि मतिमंद अभागी दया करौ सज्जन वड़भागी
दुखिअन के तुम रखवारा सव अभिलाषन के दातारा
वहु पुन्यन के तुम करतारा दया करौ लखि दुःख हमारा

सो॰॥ यह प्रकार अति दीन याचत हाथ पसारि कै
विल्वपत्र धरि दीन एक पथिक ने हाथ में ९

मांगत सिगरो दिन गयो ताही रातिभई पावा कछु नाही ॥
पाई तीन वेल की पाती ॥१०॥ मन विचार कीन्हा वहु भांती
भोजन योग वस्तु एक नाहीं यह विचारि फेंकी महि माहीं
कौनहु पुन्य उदय है आवा ॥ तहां रहा शिव लिंग सोहावा
विल्व पत्र तेहि के शिर जाई गिरत भयो विधिवश मुनिराई
मिलान कछु तेहि दिन व्रत रहऊ दैवयोग तेहि को व्रत भयऊ ॥
भद्रकालि मंदिर पिछवारे ॥ नीद परी नहिं क्षुधा के मारे ॥

भोर होत तजि आस भरोषा । शोक भस्यौ मन में अतिरोषा

दो॰॥ लौटी अपने देश को सहज सहज बलहीन ॥२॥
पग पग पर गिरि गिरि परत बहुजल सों अतिदीन

रोग विकल क्षुधयातुर भारी । दह्यमान तन तापत भारी ॥
जेहि तेहि विधि पहुंची सर तीरा । अति व्याकुल गिरि परी अधीरा
करुणामृत सागर भगवाना । विश्वनाथ जनपाल सुजाना
याहि लेन हित हमहि पठायो । विधु सम रुचिर विमान सोहायो
यहि को मुनिवर चरित वखाना । जेहि प्रकार शिव कृपानिधाना
करहिं दया दीनन कहं देखी । कहि न जाय प्रभु कृपा विशेखी
कर्मन के फल की मुनिवर गति । देखि लेहु प्रत्यक्ष महामति
अधम अपावनि पापिनि जोई । जाति परमपद को अब सोई
प्रथम जन्म अन्नादिक दाना । नहिं कीन्हे तेहि हेतु सुजाना
क्षुधा पियासा को दुख भारी ॥ वार वार पायो एहि नारी ॥
मदिरा के मद सों एहि नारी ॥ कीन्हो गोवध को अघ भारी ॥
तासु कर्मफल नयन विहीना । दुखिया रही जन्म भरि दीना
यद्यपि जानि लियो मुनिराया । तद्यपि धेनु वत्स एहि खाया
तेहि को द्विजनायक फल एहा । चांडालिनि की पाई देहा ॥
आपन धर्म त्याग एहि कीन्हा । जार पंथ में पगु धरि दीन्हा
तेहि अधर्म कर यह फल भोगा । लह्यो न पति कर सुख संयोगा
विधवा ह्वै मद वेग अयानी । जार गमन कीन्हो मुनि ज्ञानी
तेहि को फल रोगन की पीरा ॥ कुष्ट शरीर परे तन कीरा ॥
कामव्यथित ह्वै पुनि स्वच्छंदा । दास साथ भोगे आनंदा ॥
तिन पापन कर यह फल अहई । कृमि दुर्गंध रुधिर तन वहई
अतिशय मूढभाव उर आना । प्रथम जन्म कीन्हो मदपाना

तेहि अघ कर परिपाक सुजाना। भेय क्ष्मादिक रुज वलवाना॥
दो॰ एही लोक में लखि परैं पाप चिन्ह समुदाय॥
लखैं विवेकी लोग सव कछुक सुनो मुनिराय २१

जे अतिव्याकुल पुत्र विहीना	धनवर्जित अरु अतिशय दीना
जे दुर्लक्षण और दुखारी॥	लाजहीन जे लोग भिखारी
असन वसन शय्या आभूषन	लहहिं न कवहूं तन उहूर्त्तन
विद्याहीन कुरूप जिते जन॥	करहिं सदा जे लोग कुभोजन
जो दुर्भाग विनिंदत जोई॥	जो जन पर सेवारत होई॥
ते सव प्रथम जन्म मुनिराया	जानहु कृत वड पाप निकाया
यहि प्रकार करि विमल विचारा	देखि लोक जन को व्यवहारा
पाप करै नहिं जो वुध होई॥	करहिं जो आतम घाती सोई
मानुष देह दई भगवाना॥	कर्म सुभाजन ज्ञान निधाना
तेहि कारन दुः कर्म विहाई	शुभग कर्म सेवै मन लाई

सो॰॥ सुख की जेहि रुचि होय पुन्य कर्म सो करै नित
करउ पाप नर सोय चाह दुःख की होय जेहि २२
दो॰॥ पाप पुन्य द्वौ कुशल नर निज मन लेय विचारि
जेहि में जानै आपन हित सोई करै संवारि २३॥

मानुष तन दुर्लभ मुनिराया	सो दीन्हो करिके प्रभु दाया
निज हित सव विधि चाहत जोई	सव छल छांडि भजै प्रभु सोई
अथवा वनि आये अघ भारी॥	ऐसेहु यद्यपि हैं नर नारी॥
शिव को ध्यान सदा मन लाई	करैं तरैं पातक समुदाई॥
प्रथम जन्म महं एह मुनिराजा	मरि गवनी यमराज समाजा
वैठे तहां सभासद नाना॥	कीन्ही सवनि वितर्क सुजाना
एह द्विज नारि त्यागि निज धर्म्मै	यद्यपि कीन्हा विवध कुकर्म्मै

अब आई हमरे पुर माहीं ॥	एहि को नरक देहिं किमु नाहीं

दो० बालपने में सुकृत कुछ एह को है किमु नांहि ॥
दंड दीजिये भली विधि करि विचार मन मांहि ॥
जन्म सहस्रन को सुकृत उदय भये द्विज देह ॥
पावत है सो मिली एहि यामें नहिं संदेह २५

जोव होत बहु पुन्य सहाया	मिलति कौन विधि भूसुरकाया
बन्यों पाप याही भव माहीं ॥	बहुधा नर्क योग यह नाहीं
है परंतु यह पाप अपारा ॥	जो एह धेनु बच्छ संहारा ॥

पुनि विचारि शिवशिव शिव कहेउ। कौनहु सुकृत उदय ह्वै गयेउ

बहु मंगल मय जो शिव नामू	लेती भक्ति सहित सुखधामू
तवही जाति परम पद एहा ॥	एह में नहिं कौनहु संदेहा ॥
एक जन्म के पाप घनेरे ॥	जिनके फल हैं दुख बहुतेरे
क्रमसें सकल भोग ह्वै जाई	दुखमय चंडाली तनु पाई ॥
जो अनेक दुख भाजन देहा	परम नर्क है बिन संदेहा ॥

दो० ॥ दुःकुल जन्म दरिद्रता महाव्याधि अज्ञान ॥
एक एक पै नर्क हैं किमु जहँ सकल सुजान २६

प्रथम जन्म को पुन्य अपारा	बिब शालियो शिव नाम उदारा
तेहि प्रभाव भावी तन माहीं।	अंत समय संशय कछु नाहीं
भूरि पुन्य एहि सो बनि ऐहै	तब श्री शंकर लोक सिधैहै
एसे जे जन हैं महि माहीं ॥	हमरे दंड योग ते नाहीं ॥
तिनके योग उचित है जोई ॥	आपु विचार करिहु प्रभु सोई
तबहिं चित्रगुप्तादि सुजाना	यमसचिव न विचार विधि नाना
दई लागि जन्मी सोइ जाई ॥	महि में चांडाली तन पाई ॥

सो० प्रथम लियो शिव नाम यदपि महा अघ राशि तिय

तासु पुन्य परिणाम महा सुकृत एहु बनि पस्यौ २७

बिल्वपत्र शिव शीश चढायो। शिवतिथि को तहँ व्रत बनि आयो।
पुनि जागरन कीन्ह मुनिराया। यद्यपि आकस्मिक बनि आया।
तेहि कर फल मुनिवर है जोई। तब देखत भो गति है सोई।
अस कहि ते शिव दूत सोहाये। चंडालिनि के ढिग चलि आये।
तेहि को जीवाकर्षण जबहीं। कियो दिव्य तन पायो तबहीं।
तेजराशि अति विमल प्रकाशा। यान चढायो सहित हुलाशा।
परम उदार रूप तेहि पावा॥ दिव्य भूषण की द्युति छावा।
दिव्य वसन सोहैं सब गाता। दिव्य गंध तन नहि कहि जाता।
दिव्य माल अवतंस सोहावा। तथा विमान परम छबि छावा।

दो०॥ रत्नन को वर छत्र जहँ ध्वज पताक चहुँ पास।
गीत मनोहर बाजने सुनि मन होय हुलास १८

शिव दूतन के बीच बिराजी॥ चंद्रवदन अतिशय छबि छाजी।
बहुत जन्म की सुधि तेहि आई। विस्मय त्रास हर्ष रह्यो छाई।
जिमि कोउ देखै स्वप्न अपारा। जागे पर नहि सो व्यवहारा।
बहुरि विचार कियो मतिधीरा। कहाँ गयो वह मोर शरीरा॥
कुष्ट ग्रसत चंडाल स्वरूपा। किमि पाई यह देह अनूपा।
को मैं के ये सिद्ध सुजाना॥ कौन लोक है यह मन माना।
प्रभु माया विलाश सरसाना। अति अचरज देखहुँ भगवाना।
लाखन योनि भ्रमत दुख पावा। देखहु पूजन केर प्रभावा॥
एक पत्र हर्षित त्रिपुरारी॥ निज पद दै करि देहि सुखारी।

यह विधि करि निज हृदय विचारा। बढ़ो प्रेम शिव चरन अपारा।
छं· यहि भाँति सों शिव दूत तेहि को दिव्य यान चढाय कै।
पुनि पूछि मोसन बहुत विधि सन्मान तासु बढाय कै।

करुनानिधान सुजान शंकर लोक महँ तब लैगये ॥ २०॥
मन चकित देखत लोक सब लोकेश पुनि विस्मित भये २

दो०॥ श्री गिरिजापति भक्ति को लेश कह्यौ मैं गाय ॥ १ ॥
जेहि की अचरज रूप अति महिमा बरनि न जाय १९

सकल अघौघ विनाशन हारी शंभुप्रेम महिमा अति भारी ॥
सुनि नरेश अतिशय हर्षाई पुनि कीन्ही एह प्रश्न सोहाई ॥
नाथ शंभु को लोक सोहावा ॥ जो अति उत्तम मुनिवर गावा
तेहि को लक्षण देहु सुनाई ॥ जो मोपर करुना अधिकाई
सुनि सनेह युत नरपति वानी कही लोक महिमा मुनि ज्ञानी
ब्रह्मादिक देवन के लोका ॥ जेहँ सब विधि परम विशोका
तिनहूं में अति दुर्लभ सुखजोई शंभु लोक महँ पावत सोई ॥
सब गत आनंद रूप उदारा ॥ जहाँ प्रतिष्ठित ज्योति अपारा
जेहि समान दूसर नहिं लोका सो शंकर को लोक विशोका
गुणत्रितिन के है परवारा ॥ योगि लहैं जेहि तरि संसारा
जेहि पाये पुनि नहिं संसारा ॥ शंभु धाम तिहुं पुर उजियारा
जहाँ वसहि नहिं तृष्णा लोभा ॥ काम क्रोध कृत मद नहिं छोभा
जन्म जरा मरणादिक लेशा ॥ शिशु यौवन वय भेद विशेषा
जाग्रदादि भ्रम जहँ नहिं कोई ॥ नरपति शंभु धाम है सोई ॥
सब निगमन को क्षेत्र मनोहर जेहि ते और नहीं कोई पर ॥
सो शंकर को धाम विशाला ॥ सर्वलोक शेखर नरपाला ॥
संयम नेम बहुरि विविधासन प्राणायाम तथा लघ्वासन
प्रत्याहार धारना ध्याना ॥ अचल समाधि योग पथ नाना
जासु लाभ हित यतन अपारा योगी करहिं त्यागि संसारा,
जेहि की महिमा अकथ अपारा सो शंकर को लोक उदारा ॥

आनंद मय चिद्घन अविनाशी । अग्नि रूप प्रिय साथ विलाशी
तहां जाय पावै तेहि हर को ॥ सो सर्वोपर पद शंकर को ॥
जन्म अनेक सहस्र जिन केरा । संचित हैं अति पुन्य घनेरा
ते नर नारि तहां चलि जाहीं ॥ क्रीडत हैं परमानंद माहीं ॥
अकथनीय अतिशय मन रंजन । तेज राशि महं लीन सकल जन
राति दिवस कर भ्रम नहीं जानहिं । मोह शोक दुख नाहिं पहिचानहिं
है कुयोगि जन दुर्लभ जोई ॥ ईश्वर धाम प्रवर नृप सोई
भक्ति सुधा पूरन जे लोका । ते पावत हैं शंकर लोका ॥

छं॰ जे मुदित सुनि प्रभु की कथा मन वचन कम कीर्तन करैं
जे सकल प्राणिन के सुहृद जे नाम सुमिरन अनुसरैं ॥
जे पार ह्वै संसार सागर मोह दूरि वहावहीं ॥ २२ ॥
ते शंभु पद में जाय क्रीडहिं अरु परम सुख पावहीं ३
दो॰ तेहि ते तुमहू गोकर्ण तुरत जाहु नरपाल ॥ २ ॥
नाश करौ निज पाप कर अरु ह्वै जाहु निहाल ॥ २०

करिहौ सब तीरथ अस्नाना । पूजि महाबल शंभु सुजाना ।
शिव तिथि व्रत करिहौ नहं सज्जन । बिल्व पत्र सो शंभु समर्चन
एहि विधि पाप रहित नृप ह्वै है । सुखमय शंभु लोक पुनि पैहै
कीन्हो तेहि उपदेश उदारा ॥ स्वस्ति होय तव सह परिवारा
अब नृप विदा होहु तेहि पाहीं । जेहो मिथिलापति पुर माहीं
नृप सों विदा मांगि मुनि राजा । गमन किया सह शिष्य समाजा
कल्मषपाद सुना उपदेशा । गयो तुरत मन मुदित नरेशा
पहुंचि गोकर्ण में नरनाहा ॥ मज्जन पूजन सहित उछाहा
एहि प्रकार सब पाप विहाई । पायो शंकर पद सुखदाई ॥
परम मनोहर एह इतिहासा ॥ पढै सुनै जो सहित हुलासा

नितप्रति शिव चरन नमन लावै सो नर अवशि परमगति पावै॥
श्रद्धा करि जो एकहु बारा॥ श्रवण करै इतिहास उदारा
सो निस अकुल सह मुनिराया पावहि शिव पद आनंद छाया

छं॰ नि॰ शेष श्रेयस बीज अरु शत जन्म पाप नशावहीं
है मोह तम को तरु तर विजेहि देव वर निज गावहीं॥
एह चरित मन्मथ मथन को मुनिराज सेवन योग है
सब लोक को कल्याण प्रद नाशक सकल भवरोग है ४

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी रामकृस्न भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलास मार्गे शिव चतुर्दशी माहिमा प्रकाशनं नाम त्रितियो विश्राम: ३

दोहा

अद्भुत शिव महिमा कहौं बहुरहु सहित हुलाश
सुनत नशावैं पाप सब छुटै महाभव पाश १॥
दुस्तर पातक सिंधु में परे विषय भ्रम जाल॥
तिन कहँ शिव पूजन बिना नहि कछु पोत विशाल २

एह जग में जो बुध वर होई॥ सदा करहु शिव पूजा सोई
जो शिव पूजन समरथ नाहीं तो अति प्रेम किये मन माहीं
परहु न पूजा कर सो दर्शन किया करै मुनिवर प्रमुदित मन
मुक्ति विधायक है शिव पूजन श्रद्धा विना करै जो कोई जन
काल पाय सोऊ मुनिराई लहि शिव भक्ति परमपद जाई
राजा एक विमर्षण नामू॥ शूर प्रतापी अति बल धामू
अति दुर्द्धर्ष चपल नरनाहा मृगया में तेहि परम उछाहा
दया हीन सब आमिष भोगी सकल जाति प्रवला संयोगी

दो॰॥ सो किरात के देश को रिपु जेता नर पाल॥ १॥

यद्यपि अपावन आचरन तद्यपि सो महिपाल ३

नित्य करहिं शंकर को पूजन ॥ शिव को भक्त रहा न्रप तन मन
उभय पाख चौदशि जव आवै तव शिव पूजन अधिक वढावै
वडे विभव सों पूजि महेशा ॥ महा मोद मन लहै नरेशा ॥
नाचहि गावहि अस्तुति करही हर्ष सहित उत्सव अनुसरही
कुमुद्वती वर नारि सयानी तेहि नरेश की प्रिय पटरानी
शीलवती अतिशय गुन वाना देखि पति के नेम विधाना
दुराचार सर्वामिष भक्षन एहि विधि पुनि शंकर को पूजन

दो॰ एकवार एकांत में पति सों वोली वयन ॥२॥
अति अचरज मय तव चरित देखति हों गुन अयन ४

दुराचार कहं परम तुम्हारा कहं शंकर की भक्ति अपारा
एहि प्रकार पूछा जव रानी ॥ सो त्रिकाल दर्शी न्रप ज्ञानी
करि विचार कछु काल सयाना वहुरि विहंसि एह वचन वखाना
सुनहु प्रिया मेरो इतिहासा तोरि प्रीति लखि करौं प्रकाशा
प्रथम जन्म कूकर तन पाई ॥ पंपापुर महं सव ग्रह जाई ॥
निज अहार हित सव दिशि धायो एहि प्रकार कुछ काल गंवायो
एक समय घूमति निशि माहीं ॥ पहुंचो मैं शिव मंदिर पाहीं ॥
तेहि दिन शिवतिथि रही सोहाई पूजा करहिं सकल हर्षाई ॥
द्वारदेश आश्रित में देखी ॥२॥ पूजन उत्सव सहित विशेखी
लोगन हमको दीन भगाई ॥ क्रोध सहित कर दंड दिखाई ॥
करि प्रदक्षिण शिव मठ केरी अन्न हेतु मम आश घनेरी ॥
वहुरि द्वार वैठे हम जाई ॥२॥ पुनि तिन दीन्हो मोहि भगाई
ताही भांति वार वहु आयो ॥ वहुरि २ करि क्रोध भगायो
वलि पिंडादि लोभ मन माहीं शंभु द्वार त्यागो हम नाहीं ॥

तब काहू करि क्रोध अपारा॥ तीरन की न्हो मोहि प्रहारा॥
बाण प्रहार होत विकराला। तजी देह तहँ मैं तत्काला॥
शिव समीप जो हम तन त्यागा। जन्म कोटि को सब अघ भागा
तासु प्रभाव राज तन पावा॥ सब प्रकार को भोग सोहावा॥

दो॰ शिव तिथि की पूजा लखी दीपमाल को ध्यान॥
तेहि वर पुन्य प्रभाव ते भयौ त्रिकालिक ज्ञान ५
श्वान जन्म की वासना भामिनि अति बलवान
सर्वामिष भक्षण करौं यद्यपि है सब ज्ञान ६

दुराचार सब तासु प्रभावा। सो मोपै नहिं मिटै मिटावा॥
प्रथम वासना के अनुसारा। प्रकृति होय सब की संसारा
विदुषन हू को सुनहु सयानी। दुरालंघ्य वरनहिं मुनि ज्ञानी
एहि कारन शिव पूजन करहूं चतुर्दशी को व्रत अनुसरहूं
तुमहू श्रद्धा सहित सयानी॥ भजहु शंभु को तन मन बानी
त्रिकालज्ञ तुम शंभु प्रसादा। मेरो सब हरि लीन्ह विषादा
कीन्हो मोहि सिख देय सनाथा। अब मम चरित कहौ प्रिय नाथा
प्रथम जन्म कर जो कछु होई॥ निश्चय करि बरनौ प्रभु सोई
सुनि नृप बोला सहित सनेहा। रही कपोती की तव देहा॥ २॥
एक बार कुछ आमिष पाई॥ जात रही नभ मारग धाई॥
एक गीध अतिशय बलवाना। महा भयानक वेग निधाना
आमिष देखि क्षुधातुर धायो। भागी तुम अतिशय भय पायो।

दो॰ श्री गिरि शिव मंदिर जहाँ गई परम श्रम पाय॥
करि मठ केरि परिक्रमा ध्वजपर बैठी जाय ७

तहाँ आय तेहि मारि गिरायो मांस खंड ले बहुरि सिधायो
कीन्हो शिव मठ केर प्रदक्षिन शंभु समीप बहुरि त्यागा तन

नाम पर्वत

तेहि कर एह फल परम सयानी । महा चतुर नृप की पटरानी ॥
एहि प्रकार सुनि निज इतिहासा । पुनि पूछा तेहि सहित हुलासा ॥
सुनी भूत गाथा में सारी ॥ भयो मोहि अब रज अति भारी ॥
प्रभु उर शंकर प्रेम प्रकाशा ॥ अब एह सुनिवे की मोहि आशा ॥
एह तन त्याग नाथ जब जैहो ॥ कैसी गति हम तुम द्वौ पैहें ॥
दूजे जन्म सिंधु के देशा ॥ २ ॥ गजगामिनि मैं होब नरेशा ॥
संजय देश जन्म तव ह्वैहै ॥ पुनि मेरी संगति तू पैहै ॥ २ ॥
पुनि सौराष्ट्र देश को राजा ॥ ह्वै हौं अतिशय तेज विराजा ॥
तुम कलिंग नृप कन्या ह्वै हो ॥ निश्चय हम ही को पति पैहो ॥
गांधार संपन्न सुदेशा ॥ २ ॥ चौथे भव तहं के रन रेशा ॥
मगध नृपति तनया मम रानी । पंचम भव अब सुनहु सयानी ॥
दशारण नृप सुता सयानी । नाथ अवंती में तुम रानी ॥
षष्टम जन्म केरि सुनु गाथा । मैं आनर्त केर नरनाथा ॥ २ ॥

दो॰ ॥ नृप ययात के वंश में कन्या ह्वै हो जाय ॥ २ ॥ २ ॥
वहू जन्म में सुनु प्रिया लहिहो सुख मोहि पाय ॥ ८ ॥

भव सप्तम मम रूप अपारा ॥ पांड्य देश को राज कुमारा ॥
तेहि भव [illegible] र नरपति जे ह्वै हैं । कोई मम समता नहिं पैहैं ॥
अति उदार सब गुन की खानी । अरु सर्वज्ञ वली विज्ञानी ॥
सब लक्षण उत्तम गुन धामा ॥ ह्वै हौं सकल लोक अभिरामा ॥
पद्म वरण एहु नाम हमारा ॥ पद्म मित्र सम तेज अपारा ॥
तुम विदर्भ नृप की वर कन्या ॥ रूप अलौकिक सब गुण धन्या ॥
प्रिया वसुमती एह तव नामा । यौवन मद वर सुख मा धामा ॥
राजकुमार मनोभव कारी ॥ नयनानंद वढावनिहारी ॥

दो॰ तहां स्वयंवर होव तव सव नरपाल विहाय ॥

दमयंती जिमि नल वरो तिमि हम को वर पाय ८

सुखी होवतुम सुमुख सयानी। मैं जेते नृप परम गुमानी ॥ २॥
तिन्हहि जीति पुनि निज पुर माहीं। बैठहूंगे कोई रिपु नाहीं ॥ २॥
बहुत वर्ष लौ तव संयोगा ॥ भोगहूंगे जेते सब भोगा ॥
वाजि मेध आदिक बहुतेरे करिहैं मख अरु दान घनेरे
देव पितर गुरु भूसुर सेवा ॥ उमानाथ देवन को देवा ॥ २॥
लोक सुखद शंकर वरदानी भजिहैं भामिनि मन क्रम वानी
पुत्रन को दै राज सोहाई ॥ वन में तप करिहैं मन लाई ॥
तहां होव कुंभज मुनि संगा तासु प्रभाव मोह करि भंगा
ब्रह्मज्ञान विमल तव पैहैं ॥ तव सह प्रिया परम पद जैहैं
सातहु जन्मन महं सुनु रानी शिव तिथि में शिव पूजि सयानी
सप्त जन्म एहि विधि हूं राजा ॥ भोगहूंगे वर भोग समाजा ॥
एह शिव पूजा दरश प्रभावा प्राण प्रिया तोहि गाय सुनावा
कहां श्वान की योनि अपावनि कहं एह सद्गति परम सोहावनि
एहि प्रकार मुनि पति की वानी रानी विस्मित अति हर्षानी
शिव पूजा नित करै सयानी उमा नाथ सेवति मन मानी ॥

दो॰ सो राजा तेहि संग बहु भोगे सब मन काम ॥ ९॥
सप्त जन्म के अंत में गयो शंभु के धाम ॥ १०॥
सो॰ जो गावै गुनवान शिव पूजा महिमा सुभग ॥
श्रवण करै धरि ध्यान लहै परम पद केर सुख ११

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गोत्तम यपक्ष चतुर्दशी व्रत महिमा प्रकाशनं नाम चतुर्थः विश्रामः
श्री गणेशाय नमः श्री शंकराय नमः ॐ नमो नारायणाय

सो॰॥ शिव गुरु शिव प्रिय बंधु लोगन के शिव देव वर
सोइ शिव करुना सिंधु आतम सो शिव जीव मुनि १

शिव तें भिन्न न कछु संसारा
शौनक है एह सब श्रुति सारा
तेहि कारन जे नर अनुरागी
शिव की प्रीति हेतु बड भागी
कीन्हो होम जाप ब्रत दाना॥
श्रुति अनंत फल तासु बखाना
पत्र पुष्प फल जल मुनिराया
थोरेहु ते थोरे बिन माया॥
करहिं सप्रेम निवेदन जोई॥
तेहि कर फल कहि सकै न कोई
तेहि कारन सब धर्म बिहाई
सकल आगम निश्चय समुदाई
एक शंभु सेवै मन लाई॥
मुक्त होय भव बंध नशाई॥
जौन प्रेम निज सुत महं होई
जो प्यारी महं धन महं जोई
सोई जो शिव पूजन माहीं॥
मुक्त होय कछु अचरज नाहीं

सो॰ सुनहु महा मुनिराय तेहि कारन उत्तम पुरुष
शिवहि भजे मन लाय विषय वासना त्याग करि २
जिनको सत्य सनेह श्री शंकर की भक्ति हित॥
त्याग करैं निज देह विषयन की चरचा कहा ३

सो रसना जो शिव उच्चरही॥
सो मन शंभु ध्यान जो करही
ते श्रुति जे शिव यश अनुसारी
ते कर जे श्री शंभु पुजारी॥
सफल नयन पूजा जिन देखी
सो शिर जो कृत प्रणति विशेखी
ते पद धन्य होंहिं तन माहीं॥
जे शंकर तीरथ चलि जाहीं॥
सब इंद्री जेहि की मुनिराया
सदा निरत शिव कर्म अमाया
सो नर भव सागर तरि जाई
तेहि कहं भुक्ति मुक्ति सुखदाई
शिव प्रेमी जो कोउ तन धारी॥
सकल नपुंसक नर अरु नारी
शिव प्रेमी पुल्कस चंडाला
अथवा कौनहु जाति कराला
सब प्रकार पापी किन होऊ॥
संसृत सों छूटत है सोऊ॥

शंकर भक्ति विहीन शरीरा ॥ कौन काज आवै मतिधीरा ॥

दो॰ ॥ कह कुल कह आचार शो कह गुण शील अपार
भक्तिहीन नर शोहत नाहिं जिमि सरि बिन जल धार ४

भक्ति लेश युत कैसहु कोई ॥ वंदनीय सब कहं नर सोई
इहां एक बरनहु इतिहासा सुनत जाहि शिव प्रेम प्रकाशा
यज्जन जो उज्जैन मुनीशा ॥ चंद्रसेन तहं के राक्षितीशा
मनुज रूप जनु धरेहु सुरेशा ऐसो परम प्रताप नरेशा ॥
महाकाल वपु धरश्री शंकर तेहि पुर में प्रभु वसहिं निरंतर
चंद्रसेन पूजा तिन केरी ॥ करहिं सदा मन प्रीति घनेरी
शंकर अनुग नाम मणिभद्र सुमिरत मेटहि सकल अभद्र
सर्वलोक पूजित गणनाथा देखि भक्ति युत अति नरनाथा
तिन महिपति को दर्शन दीन्हा सखा भाव नृप सौं दृढ कीन्हा

दो॰ एक बार मन मुदित है श्री मणिभद्र सुजान ॥
॥ नृपकहं चिंता मणि दई जासुन होय बखान ५॥
॥ कौस्तुभ मणि के सरिस अति तासु प्रभाव अपार ॥
॥ द्योतमान सविता मनहु जासु प्रकाश उदार ६ ॥
॥ तांबा कांसा शीस पुनि पीतरि जस्त परवान ॥ ॥
॥ जासु प्रभा के छुअत ही सुवरन होहिं सुजान ७

चंद्रसेन वह मणि जब पाई ॥ प्रमुदित कंठ धरैं मन भाई ॥
नृपति वरासन सोह सुजाना जिमि देवन महं रवि भगवाना
देश २ के सुनि नरनाहा ॥ मणि प्रति सब कर बढा उछाहा
दैवलब्ध शठ जानत नाहीं ॥ सबकी तृष्णा भै मणि माहीं ॥
कोउ दुर्मद दर्प्प दिठाई ॥ याचहिं कोउ निज नेह जनाई
सबके मन मत्सर अति भारी तासु वृद्धि नहि सकहिं निहारी

देवदत्त अति प्रिय मणि जानी॥ काहू की नृप सुनी न बानी॥
चंद्रसेन पर सब नृप केरा॥ बढत भयो मन क्रोध घनेरा॥

छं: सौराष्ट्र मद्रकलिंग कैकय शाल्व मागध नृप घने॥
आवंति अरु सौवीर सृंजय जाहिं सब कापै गिने॥
ते शंभु सेवक चंद्रसेनहि जीतिबे को मन किये॥
धरणी कंपावत सेन सों उज्जैन को घेरत भये १

दो॰ गज रथ बाजि पदाति बहु सेना लिये अपार॥
परे नगर के सकल दिश रोके चारिहु द्वार ॥८
एहि विधि देखा निज पुरहि घेरा सेन कराल॥
गयो शंभु की शरण तब चंद्रसेन महिपाल ९॥

तेहि के कछु विकल्प उर नाहीं उमानाथ निश्चय मन माहीं
निराहार निशिदिन शिव पूजा करहिं अनन्य भाव नहिं दूजा
गोपी एक तेही छिन माहीं॥ विचरत महाकाल मठ पाहीं
पंचवर्ष वय बालक साथा॥ मृत भर्ता सों परम अनाथा
आय राज पूजा तेहि देखी॥ उत्सव सहित उछाह विशेखी
कीन्हो ताहू शंभु प्रनामा ॥ः॥ गोपी लौटि गई निज धामा
तासु तनय देखा शिव पूजन परम कुतूहल भा तेहि के मन
तुरत ही सो निज घोष विहाई कछुक दूरि खंडर महं जाई॥
लै आयो सुंदर पाखाना॥ अस्थापन करि लिंग समाना

सो॰ जैसे तैसे पात मिले पुष्प निज हाथ जो॥ ःःःः॥
भक्ति प्रफुल्लित गात करन लगे पूजा रुचिर १०
गंधाखत उपचार धूप दीप भूषन बसन॥ः॥
सब कृत्रिम ब्यवहार ताही विधि सों भोग धरि ११

बार २ बर कुसुम चढाई॥ः॥ नाचन लागो मन हर्षाई॥

बहुरि२ करि दंड प्रनामा ॥ आराधे शंकर सुख धामा ॥
एहि विधि सों बालक शिव पूजा मन अनन्य करि भावन दूजा ॥
भोजन कारण मातु बोलायो बार२ बालक नहिं आयो ॥९॥
पूजा प्रेम बढा मन माहीं ॥ भोजन चाह रही तेहि नाहीं
जननी बहुरि तहां चलि आई रहो सुआसन जहँ ध्यान लगाई
शिव के आगे लखि निज बारा बांह पकरि खैंचा तेहि मारा ॥
ताहू पर नहीं उठा कुमारा ॥ बढ्यो शंभु पद प्रेम अपारा ॥
तब शिवलिंग फेंकि तेहि दीन्हा पूजाकर विनाश सब कीन्हा
गोपी बहुरि सुतहि फिरकारी रोष सहित निज भवन सिधारी
कीन्हो बालक रोदन भारी ॥ हाय हाय हा नाथ पुरारी ॥
देव देव हे देव पुकारी ॥९॥ धरणि परयो व्याकुल अति भारी
अश्रुपूर पूरन सब देहा ॥९॥ देह खबर नहिं शंभु सनेहा
दुइ घटि कालों बाल अचेता नयन खोलि पुनि भयो सचेता
देखा अचरज परम अपारा प्रगटो तहँ शिव भवन उदारा

छं॰ ॥ मणिखंभ कंचन द्वार तोरण अरु कपाट विराजहीं
बड मोल हीरक नील मणि की वेदिका वर राजहीं ॥
संतप्त चामीकर कलश बहु चित्र अतिशय शोहहीं
पुनि फटिक मणि के सौध तल अभिराम मुनिमन मोहहीं॥२॥

दो॰ तेहि मंदिर के मध्य में रत्न लिंग छवि धाम ॥९॥
गोपी बालक लखी सो मूरति मन अभिराम १२

ठाढ भयो तुरतहि हर्षाई ॥ मन विस्मय नहिं बरनि सिराई
मगन भयो सुख सागर माहीं सो सुख बरनि जाय केहि पाहीं
शिव पूजन महिमा सब जानी तासु प्रभाव भयो पुनि ज्ञानी
जननी पाप निवारन हेतू ॥ करि प्रनाम विनये वृषकेतू

सम अरु पापजननी कर भारी ॥ गौरीपति पशुपति त्रिपुरारी
माता कर अति मूढ़ स्वभावा ॥ नाहिं जानति है नाथ प्रभावा
होउ प्रसन्न शंभु सुखदायक । प्रणतपाल शंकर सुरनायक

दो॰ ॥ जो कछु राउर प्रेम सो उपजो सुकृत पुरारि ॥
तौ प्रभु करुणा पावही शंकर मातु हमारि ॥ १३ ॥
एहि विधि शिवहिं निहोरि कै पुनि २ कीन्ह प्रनाम
सांझ समय बालक बहुरि गमन कियो निज धाम १४

सो पुनि सुरपति धाम समाना । कंचन भवन विभव विधि नाना
गृह भीतर गवनो हर्षाई ॥ तहँ की शोभा नहिं कहि जाई
हेम राशि भूषित दर्शाई ॥ २ ॥ महा रत्न गण ज्योति सोहाई
महा रत्न पर्य्यंक सोहावन ॥ शीत श्वेत जहँ रुचिर विछावन
तेहि पर जननी सोवत देखी ॥ रत्न विभूषित प्रभा विशेखी
दिव्य अंग सब भांति सोहाये । राजहिं दिव्य वसन छवि छाये
दिव्य सुलक्षण भवन सोहाई । देववधू सम द्युति दर्शाई ॥
अति संभ्रम फूले द्वौ लोचन । माता विभव देखि हर्षित मन
वेगसहित जननी ढिग जाई । लगे जगावन तेहि हर्षाई ॥
जागहु अंब तनय सुखदाई । देखहु अचरज की अधिकाई

दो॰ ॥ महा पुरुष निज पुत्र ने एहि विधि दियो जगाय
कौतुक सुत देखन लगी गृह सुत अरु निज काय १५

और एहि भांति रूप निज देखा ॥ तैसोइ सुत को रूप विशेखा
अति अपूर्व निज सदन विलोका ॥ सुख विह्वल जननी गत शोका
सुत मुख सुनि सब शंभु प्रसादा । प्रमुदित भे दौ निज दाम्पादा ॥
तुरतहि नृप कहँ खवरि जनाई । जो नितसेवत शिव सुखदाई
करि पूरो निज नेम सोहावा ॥ नरपति सह सातहँ चलि आवा

शंभु तोष प्रद परम सोहावा। गोपीसुत कर दीख प्रभावा ॥
कंचनमय मंदिर मनभावा ॥ मणिमय लिंग परम छवि छावा
गोपवधूकर सदन मनोहर ॥ मणिमानिक भासित अति सुंदर

दो॰ ॥ सचिव पुरोहित सहित नृप सो सब कौतुक देखि
अथमाहि अति विस्मय वहुरि आनंद लह्यो विशेखि ९६

प्रेम सजल लोचन नर नाहा ॥ वालक भेटो सहित उछाहा ॥
सव पुर लोग खवरि एह पाई धाय धाय तहँ देखहिं जाई ॥
अति अद्भुत आकार निहारी शिव महिमा गावहिं नर नारी
संभ्रम हर्ष न कछु कहि जाई ॥ छिन सम वीती रैनि सोहाई
होत प्रभात समर हित राजा ॥ घेरो सव पुर सहित समाजा
चारन के मुख अद्भुत वानी ॥ सवन सुनी अति अचरज सानी
चकित भये वाढा अनुरागा सहसा सवनि वैर निज त्यागा
चंद्रसेन अनुमोदन पाई ॥ नृपति निरायुध पुर महँ जाई

सो॰ ॥ कीन्ही सवन प्रनाम महाकाल को मुदित मन
देखत पुर अभिराम गोप भवन सव नृप गये ९७

चंद्रसेन आगे ह्वै लीन्हा ॥ हर्षित सव कर पूजन कीन्हा
वैठारे सन्मानि वरासन ॥ महा हर्ष विस्मय सव के मन
गोप सुभ्रन के प्रेम अपारा ॥ प्रगटो शंकर लिंग उदारा
मंदिर सहित लिंग वर देखी राजन उर शिव प्रेम विशेखी
पुनि तिन देखा गोपकुमारा तेहि विलोकि भै प्रीति अपारा
हेम वसन मणि धेनु सोहाई ॥ गज रथ हय महिषी समुदाई
हेम छत्र वर यान सोहाये दासी दासादिक मन भाये
शंभु कृपा हित तेन रनाहा ॥ वालहि दीन्हे सहित उछाहा

सो॰ ॥ वसत रहे तेहि काल सव देशन में गोपजे

तिन सब को नरपाल सब राजन मिलि तेहि कियो २८

रवि शशि अनल समान वानरेश बहु तेज बल ॥

सुर वंदित हनुमान तेहि अवसर तहँ प्रगट भे २९

तिनको आये देखि नरपाला ॥ सब ठाढे ह्वै गये तत्काला ॥

भक्ति नम्र कंधर अरु काया ॥ सब के मन संभ्रम अति छाया

वानरेश बहु पूजन पाई ॥ सकल मध्य वैठे हर्षाई ॥

गोप कुमार आय शिर नावा मारुत सुत तेहि हृदय लगावा

सब नरपति दिशि लखि बर वीरा एह बोले वानी गंभीरा ॥ १ ॥

जेते सब राजा नर नारी ॥ २ ॥ सुनहु मोरि वानी भ्रम हारी

तनधारी जग में है जोई ॥ ३ शिव पूजा विन गति नहिं कोई

एह बड भागी गोप कुमारा ॥ कालि प्रदोष रहो सनिवारा

विनहु मंत्र शिव पूजा कीन्हा मंगल मय शंकर फल दीन्हा

दो॰ ॥ है प्रदोष सनिवार में दुर्लभ परम सुजान

कृष्ण पक्ष महँ जो मिलै दुर्लभ तर गुनवान ३०

एहि के अष्टम वंश में परम यशस्वी नंद ॥ ३ ॥

ह्वैहैं तिन के तनय प्रभु कृष्ण देवकी नंद ३१ ॥

अति सुकृती एहु गोप कुमारा गोप जाति कर यश विस्तारा

श्री कर असो नाम उदारा ॥ अति प्रसिद्ध ह्वै है संसारा ॥

एहि विधि कहि अंजनी कुमारा श्री कर को पुनि शिव आचारा

करि प्रवोध अंतर्हित भयऊ श्री कर महा मोद मन लहेऊ

सब राजा अति शय हर्षाने ॥ चंद्रसेन बहु विधि सन्माने

चंद्रसेन अनुशासन लीन्हा ॥ निज २ देश गमन तिन कीन्हा

श्री कर अति शय तेज निधाना उपदेशा जेहि श्री हनुमाना

धर्म धाम द्विज सहित अमानी श्री शंकर पूजा रति मानी ॥

चंद्रसेन श्री कर है सज्जन ॥ श्री शंकर को करि आराधन ॥
शिव पूजा अरु प्रेम प्रभावा दूनहु श्री शंकर पद पावा ॥

सो॰ यह गाथा सुख दानि अति रहस्य पावन परम ॥
दिवि गति प्रद यश खानि शौनक मैं बरनन करी
सब अघ शोध न प्राव श्रोता वक्ता जनन को ॥ ३१
गौरी पति पद भाव बिन संदेह बढावही ३२ ॥

इति श्री मत्परम हंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १ स्वामी राम रुद्र भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे शिव पूजा माहिमा प्रकाशनं नाम पंचमो बिश्रामः ५ ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः ॥ चौपाई ॥

शौनकादि मुनि अति हर्षाई मुनि कीन्ही यह प्रश्न सोहाई
शंकर महिमा परम सुहाई ॥ अद्भुत मुनि वर आपु सुनाई
सुना चहैं मुनि वर हम सोई ॥ पुनि २ सुनि अतिशय रुचि होई
करि प्रदोष पूजा मुनि राई ॥ पावत कौनि सिद्धि सुखदाई
साधु प्रश्न कीन्ही मुनि राया ॥ लोकन में राउर यश छाया ॥
जो प्रदोष वेला अति पावनि सो है गिरिजा पति मन भावनि
ताहि शंभु पद प्रीति घनेरी ॥ अथवा फल की रुचि बहुतेरी
सो तेहि छिन सब देव बिहाई श्री शंकर पूजै मन लाई ॥

दो॰ जो प्रदोष पूजा रुचिर महिमा तासु अपार ॥
तेहि को बरनन करि सकै को भा एहि संसार १ ॥
रजताचल कैलाश महँ श्री शंकर सुरराय ॥
नृत्य करैं तेहि काल में सो अतिशय हर्षाय २ ॥

तेहि छिन निज २ लोक बिहाई शिव समीप गवनहिं सुरराई
ते सब सुर पूजहिं मन लाई ॥ बिनती करहिं शंभु गुन गाई ॥

तेहि ते शिव पूजा जप हवनू ॥ शंभु सुयश सब भव दुख दवनू
करिबे योग अवसि यह ताही ॥ चारि पदारथ की रुचि जाही
तेहि छिन गिरिजापति को पूजन मंगल भवन अमंगल भंजन
हे दारिद्र तिमिर को अंजन ॥ पुनि भव रोग निदान विभंजन
जे बूडे ऋण सागर धारा ॥ २ ॥ पोत समान दिखावहिं पारा
जे बूडे भव सागर माहीं ॥ एहि सम तिन्हहि पोत कोउ नाहीं

दो॰ ॥ दुःख शोक भय विकल के सब कलेश करि नाश।
गिरिजापति पूजन सदा करै सुमोद प्रकाश ३ ॥

दुर्मति नीच हु शठ पामर जन मंद भाग अरु परम असज्जन
पूजि प्रदोष समय श्री शंकर ॥ सहसा तरहि विपति अति दुस्तर
रिपु गन हन्यमान पुनि जोई ॥ डशो सर्प गन सों जो कोई ॥
दवो शैल गन सब किन होई ॥ महा जलधि बूडत पुनि जोई
नाना रोग विकल अतिशय नर काल दंड दंडित अतिशय तर
जो प्रदोष पूजन बनि आवै ॥ तौ नर कबहुं नाश नहिं पावै
जे दरिद्र अरु दुख बहुतेरा ॥ पर्वत सम ऋण भार घनेरा
मरण समीप भयो जेहि केरा ॥ अथवा है अति पाप घनेरा ॥

सो॰ एहु सब दुख मिटि जाय पावै अभिमत संपदा ॥
जो पूजै मन लाय रजनी मुख महँ शंभु कहँ ४ ॥

इहाँ कहौ इतिहास पुरातन ॥ महा पुन्य प्रद अतिशय पावन
जाहि सुनैं ते सब नर नारी ॥ होंहि कृतारथ परम सुखारी
न्रपति विदर्भ देश गुण धामू रह्यो सत्यरथ तिन कर नामू
सत्य संध अरु परम गंभीरा सकल धर्म रत अरु मति धीरा
धर्म सहित पालै निज राजू ॥ आपु सुखी सब प्रजा समाजू
एहि प्रकार बीता बहु काला शाल्व देश वासी महिपाला

दुर्मर्षण आदिक वलवाना ॥ न्रपसों शत्रु भाव तिन माना ॥
एक समय ते सब चढि आये ॥ चतुरंगिनी सेन संग लाये ॥
घेरा पुर विदर्भ तिन आई ॥ जीतन की आसा सातुर छाई ॥
निज पुर ग्रसित देखि नर नाहा सेन साथ कियो समर उछाहा
अति संग्राम भयो तेहि काला महावली द्रूनरू महिपाला ॥
पन्नगेंद्र गंधर्व समरजस उभय न्रपति कर युद्ध भयो तस
मंत्रिन सहित विदर्भ नरेश समर मरे सहि युद्ध कलेश
निहत विलो को जव निज राजा भगी भग्न है सेन समाजा ॥
तव निवृत्त है गो संग्रामा ॥ शत्रु चले नरपति के धामा ॥
भयो नगर कोलाहल भारी ॥ रिपुगन सिंहनाद भयकारी
रानी को तेहि छिन दुख जोई ॥ तेहि की मिति कहि सकै न कोई
करि वहु यत्न निशा अंधियारी भागी प्राण वचाय दुखारी ॥
रहा गर्भ पुनि अति सुकुमारी शोक विकल चिंतातुर भारी
प्राची दिशि मारग पुनि पाई होत प्रभाव चली दुख छाई

दो॰ धीरे धीरे पंथ वहु गई न्रपति वर वाम ॥ २२ ॥
पाय विमल सर विटप तर कीन्हो तेहि विश्राम ५

दैव योग रानी तहं जायो ॥ सुभग काल महं तनय सोहायो
अमित तृषित व्याकुल अति रानी प्रविसी सर जल मांहिं सयानी
ग्राह ग्रसी पुनि तासु कुमारा ॥ जन्मत ही पायो दुख भारा ॥
मातु पिता म्रत नहिं कोउ तीरा क्षुधा पियासा विकल अधीरा
ठाना तेहि रोदन अति भारी दैव योग आई द्विज नारी ॥
ग्रह ग्रह मांगति भीख विचारी पति विहीन पावै दुख भारी ॥
एक वर्ष को सुत निज गोदा उमा नाम द्विज नारि अमोदा
द्विज पत्नी न्रप नंदन देखा ॥ तरणि विंव सम तेज विशेखा

तुरतहि भयो तीर कोउ नाहीं ॥ चिंता करन लगी मन माहीं

दो॰ नालछेद एहि को नहीं भयो धरणि बिलखात
नहिं ढिग बंधु कुटुंब कोउ नहिं जननी नहिं तात ६

दीन अनाथ धरनि पर सोवै ॥ क्षुधा पिपास बिकल अति रोवै
है चंडाल कुमार बिधाता ॥ अथवा शूद्र केर एह ताता ॥
वनिग तनय द्विज बालक एहा ॥ अथवा नृप सुत मन संदेहा
कोउ किन होहु होय उर नेहा ॥ निज बालक इव सहित सनेहा
पालहुंगी पुनि कुल बिन जाना ॥ पर्श करन को मन नहिं माना ॥
एहि बिधि करहि बिचार सयानी ॥ आयो पति वरजनु शिवज्ञानी
बोले तेहि सन तजु संदेहा ॥ पालु पुत्र सम सहित सनेहा
बड़ कल्याण लाभ तव ह्वै है ॥ अल्प काल सब दुख मिटि जैहै
करुनानिधि एहि भांति सिखाई ॥ तुरतहि गमन कीन्ह पतिराई
मुनिवर वचन मानि विश्वासा ॥ लीन्हो बालक सहित हुलासा
निज गृह लाया विप्र वरनारी ॥ सुत सम पाल प्रीति उर भारी
एकचक्र नाम क वर ग्रामा ॥ तहां रहा द्विज नारी धामा ॥
दिन प्रति भीख मांगि ले आवै ॥ दूनहु बालक पालि बढ़ावै ॥

दो॰ ॥ तहां बसैं जे विप्र वर दया निधान उदार ॥
तिन कीन्हो द्वौ तनय को उचित सकल संस्कार ७

कालपाय द्वै गो उपनयना ॥ नेम सहित दूनहु गुन अयना
रहहिं सदा द्वौ भिक्षा करहीं ॥ निज गुर जननि मोद मन भरहीं
एक बार द्वौ तनय सहीता ॥ द्विज गृहणी अति चतुर बिनीता
भिक्षा हित बिचरति तहँ आई ॥ जहां शंभु मंदिर सुखदाई ॥
वृद्ध विप्र वर तहँ बहु तेरे ॥ तापस गण मुनि लोग घनेरे
मुनि शांडिल्य रहे तेहि माहीं ॥ बालक लखि बोले तिन पाहीं

दैव प्रवल देखहु मुनिराई । कठिन कर्म गति कहि नहिं जाई
एह वालक पितु मातु विहीना । जिमि दैव परवश है दीना ॥
विप्रवधू एह परम प्रवीना ॥ मातु सरिस नित नेह नवीना
पालि वढायो अरु द्विज भावा । द्विज वालक सह अव एहि पावा
एहि विधि सुनि मुनि वचन सोहायो । द्विज वनिता उर विस्मय छायो
करि प्रनाम एह विनय सुनाई । तुम सर्वज्ञ अहो मुनिराई ॥

दो॰ यती वचन विश्वास करि एह वालक मुनिराय ॥
लाई गृह पालन कियो कुल जानो नहि जाय ८ ॥

को माता एहि की को ताता ॥ सुनो चहौं तुम सन एह वाता
ज्ञान दृष्टि तुम सव कछु जानहु । कृपा करहु प्रभु मोहि वखानहु
एह सुनि द्विज वनिता की वानी । कहा सकल मुनिवर विज्ञानी
जेहि विधि समर हतो नरपाला । ग्रसी मातु जिमि नक्र कराला
सरतरुवरतट जेहि विधि जायो । सव प्रसंग मुनि वरनि सुनायो
सुनि विस्मित वोली एहु वयना । नरपति केहि कारन गुन अयना
सकल भोग तजि नरतन त्यागा । एहि कर पुनि केहि हेतु अभागा
एह दारिद्र कौन विधि जैहै ॥ केहि प्रकार पुनि निज पद पैहै
मम सुत कर दारिद्र जेहि जाई । कहो शोधि मुनिनाथ उपाई
सुनु भामिनि विदर्भ नरपाला । रहा प्रथम जन्महु महिपाला

दो॰ ॥ पांड्य देश को राज सुख भोगत रह्यो सुजान ॥
धर्म सहित पालै प्रजा पूजै शिव भगवान ९ ॥

कवहु प्रदोष समय शुभ पाई । त्रिभुवन पति पूजा सरसाई
तवहीं नगर कोलाहल भारी । कलकल शब्द भयो भयकारी
अति उत्कट रव सुनि नरपाला । शिव पूजा त्यागी तत्काला ॥
राजभवन वाहेर नृप गयऊ । नगर क्षोभ शंकित मन भयऊ

ताही छिन नृप सचिव सयाना । गहि लायो रिपुगन बलवाना ॥
ते सामंत रहे अभिमानी ॥ नृपविरोध अरिता उर आनी ॥
तिन को शिरछेदन करवायो । बहुरि नृपति निज मंदिर आयो ॥
त्यागि दियो गौरीपति पूजन ॥ पुनि कीन्हो सुखेन निशि भोजन ॥

दो॰ ॥ तैसोई अघ कीन्हो तनय समय प्रदोष विहाय ॥
शिव पूजन कीन्हे विना भोजन किये अघाय २०॥

सोय रहा दुर्मति अज्ञानी ॥ नेम भंग भय नहिं मन आनी ॥
पांड्य देश को जो नरपाला ॥ सोई भा विदर्भ महिपाला ॥
अंतराय पूजन महं करेऊ । तेहि ते मध्य भोग हत भयेऊ ॥
सोई पुत्र भयो तेहि केरा ॥ तेहि अघ सहै दरिद्र घनेरा ॥
तासु मातु कर पुनि अघ भारी । छल करि जेहि निज सौति संहारी ॥
तेहि पातक कर एह फल पायो । भोगहीन भै जलचर खायो ॥
इन सब को मैं चरित वखाना । शंभु भजन विन नर दुख नाना ॥
पावहिं शोक दरिद्र कलेशा । जिन पूजे नहिं नाथ महेशा ॥

छं॰ ॥ सांची कहौं मैं तोहि अरु परलोक हित दर्शावहूं ।
एह कहौं सब को सार अरु उपनिषद हृदय सुनावहूं ।
जे लोग एहि संसार संशय सार में भटकत फिरैं ॥
है सार तिन को एही जो श्री शंभु पद सेवा करैं ॥ २ ॥
जे पाय निशि मुख शंभु पूजा मांहि निज मन नहिं धरैं ।
पुनि देखि पर पूजित शिवहि अरु णिपात जे नाहीं करैं ।
जे मूढ गिरिजा नाथ कीरति श्रवण पुट सों नहिं पिअैं ।
ते जन्म जन्म दरिद्र भागी होंहि अरु दुख सों जिअैं ॥
जे पाप निशि मुख शंभु पूजा अन्य मन ह्वै नित करैं ॥
तिन के भवन धन धान्य सों कैलाशपति अतिशय भरैं

ते पाय पुत्र कलत्र संपति लोक में हर्षित रहें ॥२॥
पुनि पाय शिव सामीप्य सुख को अमर पद आनंद लहैं
कैलाश मंदिर हेम मणि मय पीठ सेज सोहावनी ॥२॥
तेहि पर विराजहिं जगजननि शंकरप्रिया मनभावनी
श्री शंभु पाय प्रदोष अवसर नृत्य उत्सव मन धरैं ॥
तेहि काल सब सुरपाल देवन सहित प्रभु सेवन करैं
वीणा बजावहिं शारदा अरु वेणु इन्द्र बजावहीं ॥३॥
विधि ताल धारी होंहि कमला मधुर लय स्वर गावहीं
माधव मृदंग बजाय निज पटुता परम दर्शावहीं ॥२॥
एहि रीति सब सुर प्रेम सों श्री उमानाथ रिझावहीं ॥
गंधर्व यक्ष खगेश पन्नग सिद्ध अरु विद्याधरा ॥
सब अमरगण अरु सुर वधू जे साध्यगण रजनीचरा
जे और सब त्रैलोक वासी भूत प्रमथादिक घने ॥
तेहि छिन सकल मिलि शंभु सेवैं जांहि ते कापै गिने ॥
एहि हेतु पाय प्रदोष अवसर हरि विरंचि विहाय कै
पूजहिं भली विधि शिवहि निर्भर प्रेम उर उपजाय कै ॥
गौरीश पूजा जो यथाविधि करै शिव प्रेमहि गहै ॥३॥
सब देव प्रमुदित होंहि तेहि सों धन्य सो नरवर अहै ॥

दो॰ ॥ सुनि भामिनि एहु तव तनय रहा प्रथम द्विजराज ॥
खोई वयसि प्रतिग्रहन नहीं कीन्हो शुभ काज ॥२॥

सो॰ तेहि कारण भा आय परम दरिद्री तव तनय ॥२॥
शंभु शरण अवजाय सकल दोष परिहार हित ॥१२

इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गप्रदी

य महिमा प्रकाशनं नाम षष्ठो विश्रामः ६॥ शिव ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशंकराय नमः चौपाई

एह सुनि श्री मुनिवर की बानी द्विज वनिता अतिशय हर्षानी
करि प्रणाम बहु विनय बहोरी पूजा विधि पूछी कर जोरी ॥
सुनु भामिनि तैं परम सयानी शिव पूजा क्रम कहहु बखानी
एह प्रदोष पूजा की रीती ॥ उभय पाख तेरसि अति प्रीती
कीजै नाहिं दिन में आहारा ॥ व्रत कीजै मन प्रेम अपारा॥
तीनि घरी दिन जब रहि जाई कीजै मज्जन शुचि सरसाई
श्वेत वस्त्र पहिरैं मन पावन॥ गहै मौन को नेम सोहावन ॥
पहिले जप संध्या करि रूरी॥ कैरै बहुरि पूजा विधि भूरी॥

दो॰॥ उपलेपित बर भूमि करि मंडप रचै बनाय ॥
शुभग चँदोवा पुष्प फल अंकुर रुचिर लगाय १

पांच बरन को पद्म बनावै ॥ निज आसन तेहि निकट बिछावै
पूजा की सब वस्तु सोहाई ॥ यथा योग तहँ धरै सजाई ॥
आगम मंत्रन सों गुनवाना ॥ करि अभिमंत्रित पीठ सुजाना
आतम शुद्धि करै मन लाई ॥ भूत शुद्धि[१] जेहि विधि मुनि गाई
बीज वर्ण सों बिंदु मिलाई ॥ प्राणायाम[२] तीनि मुनिराई
करिकै साधक प्रेम समेता ॥ कराहि मात्रिका न्यास सचेता
करि पूरो मात्रिका[३] विधाना॥ ध्यावहि परम देव ईशाना

१ पंचभूत शरीर व्यापी ॥

२ अं आ मित्यारभ्य अंअः इत्यंतेन पूरकं कंख मित्यारभ्य मं इत्यंतेन कुंभकं यं इत्यारभ्य क्षं इत्यंतेन रेचकं एवं त्रिवारं ॥

३ ललाटे अं नमः मुखे आं नमः दक्षिण नेत्रे इं नमः इत्यारभ्य हृदयादि उदरं पर्यंत क्षं नमः इत्यंतं ॥

वामभाग गुरु कहँ शिर नावै । दक्षिण दिशि गणनाथ मनावै
[१]अंश उरू युग माहिं सुजाना ॥ करि [२]धर्मादिक न्यास विधाना

सो॰ ॥ [३]अधर्मादि को न्यास करै नाभि अरु पार्श्व महँ
[४]उर मैं सहित हुलाश [५]अनंतादि को पीठ महँ २

दो॰ ॥ [६]मनु आधार शक्ति सों करि आरंभ सुजान ॥
ज्ञानातम लौ क्रम सहित न्यास करै गुनवान ३
हृदय पद्म नव [८]शक्तिमय अति रमणीय अनूप
सावधान साधक बहुरि तहँ ध्यावै सुरभूप ४

पिंग जटा छवि मय शिर छाजैं । रत्न मौलि प्रभु अधिक विराजैं
नीलकंठ वर अंग उदारा ॥ शोभित हृदय नागमय हारा
शंकर परशु अभय कर धारी । वरदायक पशुपति त्रिपुरारी
वलयांगद केयूर मनोहर । कर मुद्रिका धरे गिरिजा वर
बाघचर्म कौमल परिधाना । रत्न पीठ बैठे भगवाना ॥
एहि विधि करि श्री शंकर ध्याना । गिरितन पहि ध्यावै गुनवाना
जापकुसुम इव तन अति सुंदर । उदयभानु सम प्रभा मनोहर

१ स्कंध युग्म उरू युग्म · · · · ·
२ धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य · · · · ·
३ अधर्म अज्ञान अवैराग्य अनैश्वर्य
४ हृदय · · · · · · · · · ·
५-६ पीठ में मनुं अर्थात ॐ नमः शिवाय मंत्र का न्यास

७ ॐ आधार शक्त्यै नमः ॐ कूर्माय नमः ॐ अनंताय नमः ॐ पृथिव्यै नमः ॐ ज्ञानात्मने नमः अयमक
मः
८ वामा रुद्रा इत्यादि नव शक्तयः
ज्येष्ठा - · · · · · · · · ·

चपला पुंज रुचिर छवि हारी । चख मन मोद बढावनि हारी

दो॰ वाल इंदु शेखर सुभग कुंचित कुंतल श्याम
भृंग वृंद सम अति रुचिर नीलालक अभिराम ५
मणि कुंडल की अति प्रभा मुख मंडल रमणीय

नवकुंकुम अंकित विथाद गंड मुकुर कमनीय ६

रुचिर मधुर मुसिक्यानि सोहाई ॥ अरुणाधर पल्लव रुचि राई
कंबु कंठ कुच वर मन हारी ॥ पंकज कुड्मल के अनुहारी ॥
अंकुश पाश अभय वरदाना ॥ चारि भुजा तन तेज निधाना ॥
रत्न समूह रचित वर कंकन ॥ मणि मुद्रिका लोंहि छीनि मन
क्षुद्र घंटिका त्रिवलि सोहाई ॥ हेम रचित सुंदरि मन भाई ॥
अरुण वसन माला तिमि सुंदर ॥ चंदन चर्चित गात मनोहर
दिगपति नारि नमित वर चरनू ॥ सुमिरत सकल अमंगल हरनू
रत्न सिंहासन मध्य विराजैं ॥ सकल शक्ति छवि लखि अति लाजैं

सो· एहि विधि सों करि ध्यान श्री शंकर अरु उमा को ॥
पूजहिं पुनि गुनवान न्यास कर्म सों विधि सहित ७
कहे जौन अस्थान तिनमें अथवा हृदय में ॥ ८ ॥
ब्रह्म मंत्र गुनवान पढि पढि पूजै यथा विधि ८ ॥
दो·॥ तीनि २ पुष्पांजुली मूल मंत्र पढि देय ॥ ९ ॥
एतो पूजन हृदय में जब साधक करि लेय ॥ ६ ॥

बहुरि वाह्य पूजा मन लावै ॥ सोई क्रम वाहेर दर्शावै ॥
प्रथम करै संकल्प सुजाना ॥ हाथ जोरि सुमिरै भगवाना
ऋण पातक दुर्भोगनि काया ॥ विनशनाहित दारिद समुदाया
होहु प्रसन्न शंभु वृषकेतू ॥ अघ अशेष नाशहु दुख हेतू
शोक दुःख पावक गंभीरा ॥ सदा रहत संतप्त शरीरा ॥
रोग विकल भव भय श्रम दीना ॥ त्राहि त्राहि वृष नाथ प्रवीना
महादेव जग अभय विधाता ॥ आवहु देवदेव सुर त्राता ॥
उमा सहित एहु पूजन लेहू ॥ हू प्रसन्न अभिमत वर देहू ॥
दो॰ एहि प्रकार संकल्प करि पूजहि प्रेम हृदाय ॥ २ ॥

॥ ॐनमोहिरण्य इत्यादि

दाहिने गणपति वामदिशि निज गुरु को शिर नाय १०
ईश कोण महँ क्षेत्रपति बहुरि देवै न्रप जान ॥ =२॥
सरस्वती को पूजि पुनि कात्यानि सन्मान ११ ॥ =२॥
सो॰ ॥ धर्म ज्ञान विराग ऐश्वर्य पुनि जानिये ॥ =२॥
पूजहि सह अनुराग आठ दिशा महँ यथाक्रम १२

नमः अंतक हि २ गुनवाना ॥	सबके नाम मन माहिं सुजाना
पीठ पाद क्रम सों मन लाई ॥	ईश कोण आदिक मुनिराई
अधर्मादि पूजे मुनि राई ॥	=२ स्वर में बिंदु विसर्ग मिलाई
मध्य अनंत प्रणव युत सज्जन	चहुं दिशि सत्व रूप कर पूजन
कीजे पीठ तंतु सन्यासा ॥	=३ सत्वादिक जो त्रिगुण विलाश
साहित पूजिये प्रभु त्रिपुरारी	=४ ऊपर माया सिंधु कुमारी ॥
मंडल तीनि कहैं ज्ञाता द्विज	तासु समीप बहुरि वर पंकज
शुभ किंजल्क भरो मृदु वयनी	पत्र तथा केसर गुन अयनी ॥

दो॰ ॥ पंकज त्रय को पूजि कै आदर सहित बहोरि ॥
वर मंडप के मध्य में नव शक्ति न कर जोरि १३

१ अं आं धर्माय नमः इं ईं ज्ञानाय नमः इत्यादि क्रमेण ॥	लक्ष्मी वीज ह्रीं शिव बीज न सह
२ अं अः अधर्माय नमः अं अः अज्ञानाय नमः अविराग अनैश्वर्य इति क्रमेण	५-६ कर्णिका के सर्व दिशि सूक्ष्मतंतु ५= पराग- ६ ॥ ....
३ संसत्वाय नमः तंतम से नमः रं रज से इत्येवं कमलनाल तंतुरूपेण संभाविताः ॥	७ वामा ज्येष्ठा रौद्री काली कलविकारिणी बलप्रमथनी सर्वभूतदमनी नव शक्तयः
४ ऊपर के पत्र में ह्रीं माया बीज श्रीं	



प्रथम माहिं वामा शक्ति सोहाई । वक्रारि ज्येष्ठा कहि दर्शाई ॥
रौद्री आदिक शक्ति सोहाई । [1]नवस्वर युक्त भजै मन लाई ॥
[2]आदि बीज त्रय सों उर पूजन ॥ [3]पीठ मंत्र सों करहिं समर्चन
जो [4]आवरण रीति मुनि गाई ॥ करहिं अंग पूजा सुखदाई
पंच शक्ति मूरति सह भामिनि । अपर त्रिशक्ति सहित गजगामिनि
[5]सुरनिधि सहित प्रेम सरसाई । करै आवरण विधि मन लाई
[6]अनंतादि संयुत मुनिराई ॥ [7]मातृ सहित वृषगण समुदाई
[8]अणिमादिक सब सिद्धि सयानी । इंद्रादिक देवन सन्मानी ॥

सो॰ वृषभ क्षेत्र चंडेश दुर्गा गुह नंदी तथा ॥ २ ॥
गणपति अरु सैनेश निज २ वर लक्षण सहित २४

१ अंबायै नमः ज्येष्ठायै नमः इत्यादिक्रमेण ॥ ....

२ ह्रीं श्रीं ह्रौं इति बीजत्रयेण

३ ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योगपीठात्मने नमः इति पीठमंत्रेण

४ आवरण पूजा प्रकारः ईशानः सर्वविद्यानामित्यादि मंत्रं पठित्वा ईशान कोणे ईशानं पूजयेत् तत्पुरुषाय विद्महे - अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यः - वामदेवाय नमः सद्योजातं प्रपद्यामीत्यादिचतुर्भिर्मंत्रैः तत्पुरुषः अघोरः वामदेवः सद्योजात इति चतुरः पूजयेत् तेषां समीपे निवृत्तिः प्रतिष्ठा विद्या शांतिः शांत्यातीता पंचशक्तयः निवृत्त्यै नम इत्यादिक्रमेण पूजनीयाः ....

५ द्वितीयावरणे षडंगानि पूज्यानि तृतीयावरणे सूर्यमूर्तये नमः इत्यादिक्रमेण सूर्यः[1] इंदुः[2] क्षिति[3] तोय[4] अग्नि[5] पवन[6] आकाश[7] यज्वा[8] पूज्याः चतुर्थावरणे रमा राका प्रभा ज्योत्स्ना पूर्णा उषा पूर्णा सुधी त्विषश्शक्तयः पूज्याः पंचमावरणे विश्वा वंद्या सिता प्रह्वा सरा संध्या शिवा निशा इत्यष्टशक्तयः पूजनीयाः षष्ठावरणे आर्या प्रज्ञा प्रभा मेधा शांतिः कांतिः

धृतिः मतिः इत्यष्ट शक्तयः पूज्याः सप्तमावरणे धरा उमा पावनी पद्मा शांता मेधा जया अमला इत्यष्ट शक्तयः पूज्याः अष्टमावरणे अनंतः सूक्ष्मः सत्त्वः शिवः एकनेत्रः एकरुद्रः त्रिमूर्तिः श्रीकंठः शिखंडी इत्यष्टौ पूज्याः नवमे उत्तराउमा चंडेश्वरः नंदी महाकालः वृषभः भृंगरिटिः स्कंदः इत्येते पूज्याः दशमे ब्राह्मी इत्यादि मातरः पूज्याः

६ संखनिधिभ्यो नमः

७ पद्मनिधिभ्यो नमः

८ अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा ईशत्वं च वशित्वं च प्राप्तिः प्राकाम्यमेव च ९ ॥

—

ब्रह्म मंत्र जे पांच उदारा ॥ तिन सों करि पूजा विस्तारा

हृल्लेखादिक मंत्र सुजाना तिन सों पुजवहिं सकल विधाना

उमाप्रमुख इंद्रादि सयानी अंग पूजा वरनहिं मुनि ज्ञानी

उत्तरादि दिशि क्रम सों मुनिवर पूजै गिरिजादिक चंडेश्वर

एहि प्रकार आवरण समेता तेज रूप शिव रूपानिकेता ॥ २ ॥

पूजन के उपचार वदाई ॥ उमा सहित पूजै मन लाई ॥

शंख प्रतिष्ठित को जल सुंदर पंचामृत अति दिव्य मनोहर

तिन सों करहिं शंभु अभिषेका रुद्र सूक्त पढि सहित विवेका

आसनादि उपचार सयानी विविधि मंत्र पढि २ मृदु वानी

हेमासन कल्पित करि सुंदर वस्त्र समन्वित परम मनोहर

अष्टगंध युत अर्घ सोहावन पादोदक शुद्धोदक पावन ॥

तथा आचमन जल गुनवाना अर्पहिं पुनि मधुपर्क सुजाना

सो॰ पुनि आचमन कराय अन्हवावे वर मंत्र पढि ॥
उपवीतहि पहिराय वसन विभूषन देहि पुनि ॥

अष्ट गंधे युत गंध मनोहर करहिं निवेदन अति पावनतर

बिल्वपत्र कल्हार सोहाये ॥ अरु मंदार पंकज मन भाये ॥

मल्ली गण धत्तूर पिन्नारा॥ कर्णिका रचण पुष्य अपारा

कुश अंकुर तुलसी मतिधीरा चंपादिक न्हहली करवीरा॥

माधव्यादि सुमन जो पावै॥ सहित प्रेम सव प्रभुहि चढावै

वहुरि सुगंधमई वरमाला॥ विविधि रूप की रुचिर विशाला

कालागुरु की धूपन थोरी॥ दीप विमल शुभ देय वहोरी

गुड शर्करा सहित अति सुंदर मधु मिश्रित वर भोग रुचिरतर

पायस मधुर सघृत गुन वाना मोदक पुवा दही जल पाना॥

ताही हवि सों परम सयानी तंत्र मंत्र पढि २ मृदु वानी॥

साधक होम करै मन लाई॥ जैसी विधि निजगुरु दर्शाई

दो॰ करि अर्पन नैवेद्य पुनि आगे राखे पान॥ ॥

धूप देय पुनि तहं करै नीराजन गुनवान १६॥

दर्पण उत्तम छत्र मनोहर प्रभुहि समर्पहि तव साधकवर

पढि २ वैदिक मंत्र सोहाये॥ तथा तंत्र महं जे दर्शाये॥

त्रासित दरिद्र होय नर जोई यथा विभव पूजहि पुनि सोई

प्रेम पुष्य एकहु किन होई॥ गौरीपति सुखदायक सोई

अंगभूत गण घादिक देवा॥ करै यथाविधि सव की सेवा

नाना विधि करि विनय वडाई दंड प्रनाम करै शिर नाई

नव चंडेश्वरादिहि गुनवाना करै प्रदक्षिण वहुरि सुजाना

अर्पण करहि तथा निज पूजा शिवहि मनावै भाव न दूजा

सो॰॥ जय श्री शंभु दयाल सकल देव पूजित चरन॥

जय सुरजन महिपाल गुणातीत जय होय तव १७

जय २ देव सकल जग नायक शंभु सनातन जय सुखदायक

जय शंकर सवके वरदाता॥ जय शिव निजजन अभय विधाता

जय विश्वंभर प्रभु अविनाशी जय हर निराधार सुखराशी॥

१ः गोरष २ः सोवृपाद

जय नागेश विभूषण शंकर ॥ जय गौरी पति दुष्ट भयंकर ॥
जय जग वंदित ईश गोसाईं । जय निशि पति शेखर सुखदाई ॥
जय शंकर अनंत गुन धामू । कोटि दिवाकर द्युति अभिरामू ॥
विरूपाक्ष जय होय तुम्हारी । जय श्री रुद्र शंभु त्रिपुरारी ॥
जय अचिंत्य महिमा गुन गाहा । जयति निरंजन जय सुर बाहा ॥

सो॰ ॥ जय दुस्तर संसार सागर के तारक प्रभो ॥ २ ॥
मेटहु मम दुख भार ह्वै प्रसन्न करुनायतन १८ ॥

सकल पाप भय भीति पुरारी । शंकर रक्षा करहु हमारी ॥
अति दारिद्र मगन जन नाथा । महा पाप हत परम अनाथा ॥
महा शोक आकुल सुरराया । आतुर महा रोग समुदाया ॥
ऋण कर भारी मम शिर भारा । दुख दायक मम कर्म अपारा ॥
ग्रह पीडा अति मोहि कराला । मो पर होहु प्रसन्न दयाला ॥
जो साधक दरिद्र युत होई ॥ एहि प्रकार विनवै प्रभु सोई ॥
जो साधक अति शय धनवाना । अथवा पृथ्वी पति गुनवाना ॥
तासु विनय की रीति सोहाई । मो सन सुनु भामिनि मन लाई ॥
आयु दीर्घ तन में नहिं रोगा ॥ बढै कोश बल अरु बहु भोगा ॥
होहु मोहि आनंद अपारा ॥ तव प्रसाद श्री शंभु उदारा ॥

सो॰ शत्रुन की क्षय होय सुखी होहिं सब मम प्रजा ।
चोर रहै नहिं कोय होंहि लोग आपद रहित ॥
अरि संताप निवारि शमित करहु दुर्भिक्ष सब ।
सस्य समृद्धि सुधारि करहु सकल सुखमय दिशा १९

एहि विधि प्रति प्रदोष शिव पूजन । नरवर सदा करै प्रमुदित मन ॥
विप्रन को भोजन करवाई ॥ पूजहि दै दक्षिणा सोहाई ॥
सर्व पाप नाशक शिव पूजन । सब दारिद्र दोष दुख भंजन ॥

सव अभिमत फलदायक एहा जानहु भामिनि विन संदेहा
महा पाप उपपातक जोई ॥ एहु कीन्हे पुनि रहै न कोई ॥
शंभु द्रव्य अपहार विहाई ॥ और सकल अघ जायन शाई
ब्रह्म वधादिक पाप वडेरे ॥ तिन के प्रायश्चित्त घनेरे ॥
श्रुति पुराण वहु विधि दर्शायो शिवधन हरन पाप वड गायो

दो॰ तेहि कीनिः कृति नहिं कहूं गावे वेद पुरान ॥
सव पापन में परम तेहि वरनहिं विदुष सुजान २१

वहुत कहौं कहँ लौं दर्शाई ॥ थोरेहि में तोहि देहु वुझाई
ब्रह्म घात शत अघ किन होऊ शिव पूजा सव नाशहि सोऊ
शिव प्रदोष पूजा विधि गाई परम रहस्य दियो दर्शाई ॥
सव अभिमत फलदायक एहा भामिनि एहि में नहिं संदेहा
मुनि शांडिल्य केरि एह वानी द्विज वनिता सुनि अति हर्षानी
उभय कुमार सहित अनुरागी पुनि२ मुनि वर के पद लागी ॥
वडे भाग तव दर्शन भयेऊ ॥ प्रभु प्रसाद हमरो दुख गयेऊ
आजु कृतारथ में जग माहीं विनती सुनहु एक मोहि पाहीं
ये द्वौ वालक शरण तुम्हारे तुम इनके गुरु जग उजिआरे

दो॰ ॥ शुचि व्रत संज्ञक मम तनय धर्म गुप्त न्पवाल
हम तीनो तव चरन के किंकर परम दयाल २२

घोर दरिद्र सिंधु मुनि नाथा वूडि रहे हम परम अनाथा
मुनि वर हमहिं करहु उद्धारा दर्शावहु दुख सागर पारा
शरणागत लखि के मुनिराया आसप्रवास कीन्ह करि दाया
मधुर सुधा सम वचन सुनाई द्वौ वालक निज ढिग वैठाई ॥
शिव आराधन विधि दर्शाई परम मंत्र पुनि दियो सुनाई
एहि प्रकार ते मुनि उपदेशा तीनहुं निज शिर राखि निदेशा

मुनि वर चरन शीश तिन नाये। शंभु धाम ते निज ग्रह आये
मुनि उपदेश परम हित जाना। तिहि दिन ते द्वौ तनय सुजाना
अतिप्रदोष शिव पूजा करहीं। शिव को भजन सुखद अनुसरहीं
एहि प्रकार हर भजन सप्रीते। सुख सों चारि मास जब बीते

दो॰॥ न्रप सुत बिन अस्नान हित सरित तट विप्र कुमार
गयो एक दिन तहं कियो लीला सहित प्रचार २३
सरित तट निर्झर घात सो फूटो परिखा बंध ॥ ५
मानहु द्विज सुत विभव को कीन्हो शंभु निबंध २४

तहां एक निधि वर बड वारा॥ चमकि रह्यो द्विज तनय निहारा
ताहि देखि अति कौतुक भयेऊ। तुरत हि तासु निकट चलि गयेऊ
जाना शंभु कृपा करि दीन्हा॥ प्रमुदित हृदय यत्न करि लीन्हा
सहसा सरित तट सों ग्रह आये। अतिबल करि मंदिर पहुंचाये
अति संभ्रम मन जननि बोलाई। तेहि देखा सब कथा सुनाई॥
शिव प्रसाद निधि मिब हम पायो। शंकर करुनानिधि दर्शायो
द्विज वनिता मन विस्मय पाई। न्रप सुत बोलि लियो हर्षाई
शिव पूजा फल मानि सयानी। दुनहु सन बोली मृदु बानी॥
मम वानी गौरव मन धरहू॥ निधि के सम विभाग दुइ करहू
दुनहु लेहु सुने वर वयना॥ सुखी भयो द्विज सुत सुनि अयना

दो॰ न्रप सुत मन शिव भजन की वाटी अधिक प्रतीति
जननी सन बोलत भयो वानी मधुर सप्रीति २५॥

तव सुत के सुकृत फल एहा। पायो निधि घर नहिं संदेहा
मैं न चहौं एहि धन कर भागा। भोगहु जासु सुकृत फल लागा
जासु कृपा निधि घर एहि पावा। सोह मह्हं पर करि है दाया॥
एहि विधि पूजत तिन्हहि सप्रीती। प्रमुदित एक वर्ष गयो बीती

एक समय द्वौ गये वन माहीं । जहँ वसंत शोभा मिति नाहीं
मन कौतुक ते युगल कुमारा ॥ देखहि वन शोभा विस्तारा ॥
वन विहरत जब गे कुछ दूरी । तहँ गंधर्व सुता गण भूरी ॥
सब सुंदरि तहँ क्रीड़ा करहीं । प्रमुदित वन विहार अनुसरहीं
तिन्हहिं देखि द्विज तनय सयाना। नृपनंदन सन कह्यो सुजाना
उचित न आगे गमन हमारा । वहु अबला गन करहिं विहारा
जे बुध विमलाशय जग माहीं । पर नारी ढिग ते नहि जाहीं ॥
मृग नयनी वहु छल वल करहीं । धन यौवन दुर्मद उर धरहीं
वचन चातुरी चित हरि लेही ॥ दृगन चाप मोहित करि देहीं

दो॰ ॥ ताहि ते देखत परिहरैं जाय न तीर सुजान ॥२५॥
तिन सों भाषण नहि करै जो चाहै कल्यान ॥२६॥

जो निज धर्म परायण होई ॥ पर तिय तीर जाय नहि सोई
तजे दूरि अबला गन देखी ॥ ब्रह्मचारि व्रत निरति विशेखी
तेहि कारन मृग नयन विहारा । नहि देखा वहौ राजकुमारा
एह कहि लौटो विप्रकुमारा । दूरि रहा निज धर्म विचारा
नृपकिशोर कौतुक उर माहीं । गारुड़ केल मानी भय नाहीं
तिन सब की सिरदार सयानी । नृपकिशोर देखत हर्षानी
निज मन लागी करन विचारा । कासु तनय एह परम उदारा
सब अंग सुंदर वयसि युवाना । मत्त गयंद गमन गुनवाना ॥

दो॰ ॥ लावण्यामृत जलधि एकु लीला लोल विशाल
लोचन अरु विहसन मधुर पेशल परम रसाल ॥२७

मदन समान रूप कुमारा ॥ तन शुभ लक्षण परम उदारा ॥
दूरि हि ते देखी वहु शोभा ॥ अति अचरज व्यापा मन लोभा
निज सखि सन दिशि देखि वहोरी ॥ वानी नारि चरित रस बोरी ॥

कहनलगी मम आयुस भानी	एहि वन में सव जाय सयानी
चंपक पुन्नग वकुल सुहाये	तरू अशोक फूले मन भाये ॥
कुसुम राशि संचय करिलावो	मम समीप सव मिलि पुनि आवो
में हूं जो तव संग सिधावो ॥	तव वन भ्रमन केर श्रम पावो
तिहि ते तुम्हरे संग नहि जेहों ॥	एही ठोर वैठें सुख पैहों ॥ २७ ॥
सुनि वानी सव सखी सयानी	लेन प्रसून गई हर्षानी ॥
न्रप किशोर दिशि दृष्टि लगाई	सो तहं वैठि गई सचुपाई ॥
नव योवन मद रूप अपारा	सुंदर श्रुभग अंग सुकुमारा

दो॰ ॥ तिलोतमा के रूप को निंदक तासु स्वरूप ॥
न्रप किशोर देखत भयो शोभा परम अनूप २८

अति कौतुक मन कहि नहि जाई	लोचन फूल गये हर्षाई ॥
देव योग मनासिज उर लाई	मदन वान पीडा सरसाई ॥
सो गंधर्व राज वर कन्या ॥	शोभा धाम शील गुन धन्या
न्रप किशोर आयो ढिग जानी	वेग सहित उठि परम सयानी
पल्लव आसन दियो विछाई	यथा योग पूज्यो हर्षाई ॥
रूप शील गुन अनुपम देखी	गाधीरज भा मोह विशेखी
कमें विकल मन देह सयानी	न्रप सुत सों पूछी एह वानी
कौतुक कमल नयन मन भाये	एहि थल कौन देश ते आये
कासुत नय मोहि कहहु वुझाई ।	प्रेम सहित एह गिरा सुनाई
न्रप किशोर वोले एह वानी	हों विदर्भ न्रप तनय सयानी
मातु पिता परधाम सिधारे	रिपुगन लीन्हे देश हमारे
में विदेश में वसहुं सयानी	इत्यादिक निज चरित वखानी
पुनि तेहि सन पूछा म्रदु वानी	कासु सुता तुम परम सयानी

दो॰ ॥ कौन काज केहि ध्यावहु कहो चहो कछु वात ॥

सो॰ मो मन वरनन करौ केहि हित पुलकित गात
सुनहु राजवर कौ द्रविक गंधर्वन को ईश ॥ २ ॥
अंशुमती तिनकी सुता जानहु मोहि महीश ३०

आवत तुम्हहि विलोकि सुजाना। त्यागी सखी सुनाय वहाना
तव संभाषण हित नरनाहा मम उर वाढा परम उछाहा
जेती गान कला जग माहीं ॥ मोहि समान जानत कोउ नाहीं
मोर गान सुनि सब सुर नारी चकित होंहि अरु परम सुखारी
सकल कला जानति हौं नीकी जानि लेहु सब ही के ही की ॥
तुम्हरे हु उर की मैं जानी ॥ राउर मन मो मे रति मानी ॥
तथा मोरि मति परम सुजाना उभय सख्य विरची भगवाना
अब आगे प्रभु है रखवारा नेह भेद नहि होहु हमारा ॥

दो॰ एहि प्रकार कहि मृदु गिरा वर मुक्ता मणि हार
नृप सुत के कर में दियो निज कुच को श्रृंगार
सो॰ लै लीन्हो वर हार प्रेम मगन नरपति तनय
भा मन हर्ष अपार तेहि दुराय बोले वचन ३२

सत्य कही तुम परम सयानी तदपि हमारि सुनो एह वानी
विगत राज नहीं धन मम पासा मम दिग केहि विधि तोर सुपासा
विद्यमान तव जनक सयानी ॥ तिनकी आज्ञा विन मन मानी ॥
कियो चहौं स्वछंदाचारा ॥ उचित होय नहिं असभ्य वहारा
नृप सुत की यह सुनि वर वानी पुनि एहु वोली विहंसि सयानी
जैसी तव रुचि है नरनाहा ॥ तैसोइ ह्वैहै सकल उछाहा ॥
एही ठौर तुम परौ सवेरे ॥ आप देखिऔ कौतुक मेरे ॥
नाथ पधारहु निज ग्रह आजू ॥ आयहु अवासि जानि वड काजू
नाहिं कुतर्क करिऔ मन माहीं मेरे वचन मृषा ये नाहीं ॥ २ ॥

एहि विधि काहि नृप तनय सों निज सखि लई बोलाय ॥
गई भवन तब चलि भयो नृप नंदन हर्षाय ३३ ॥

रहा विप्र सुत तहँ चलि आयो । निज चरित्र सब ताहि सुनायो
पुनि दूनह्रु आये निज धामा ॥ जननी सुनि भई पूरन कामा
परसौं के दिन होत विहाना ॥ नृप किशोर द्विज तनय सुजाना
जेहि वन में पहिले दिन आये । दूनह्रु मिलि तेहि विपिनि सिधाये
देखा गंधर्वन को राजा ॥ तहँ निज तनया सहित विराजा
राजा तिन दूनह्रुं कहँ देखी ॥ कीन्ही अभिनंदना विशेखी
पुनि सुंदर आसन वैठारे ॥ नृप किशोर सन वचन उचारे

दो॰ नृप वालक सुनि काल्हि हम गये रहे कैलाश ॥
तहँ देखे गिरिजा सहित प्रभु त्रैलोक्य निवास ३४
शंकर करुना सिंधु मोहि लीन्हो निकट वोलाय
सव देवन के सुनत एह दीन्हो वचन सुनाय ३५

धर्म गुप्त है नृपति किशोरा ॥ तासु पिता रिपुगन वरजोरा
रन में मारि राज लै लीन्हा ॥ तासु वंधु जन कहँ दुख दीन्हा
धर्म गुप्त हृत नृप सिंहासन । वंधु विगत है परम अकिंचन
गुरु के वचन मानि मम पूजा ॥ सदा करै मन भाव न दूजा ॥
तासु प्रभाव पितर तेहि केरे ॥ मम पद पावत भे वह्रु तेरे ॥
तेहि की तुम अव करह्रु सहाया । मारे जाहिं शत्रु समुदाया ॥
निज सिंहासन पाय सुजाना । सुखी होहि सो करह्रु विधाना
एह आज्ञा शिर धरि ग्रह आयो । मम तनया तव मिलन सुनायो

दो॰ कीन्ही वह्रु तर विनय मम पुनि श्री शंभु नियोग
तुम्हहि देखि हर्षित भयो भलो वनो संयोग ३६

निज दुहिता सह एहि वन आयो । सुखी भयो तव दर्शन पायो ॥

निज तनया तुमको में दीन्ही ॥ करिहौं जो प्रभु आज्ञा कीन्ही
तव रिपु मारि तुम्हहिं नृप आसान। बैठि रहौं निमि शिव अनुशासन
मम तनया सह भोग विलासा। जग में करि बहु सुयश प्रकाशा
दश सहस्र संवत बलवाना ॥ करिहो भूतल राज सुजाना ॥
पुनि पैहो शिव लोक निवासा ॥ एहि मम तनया सहित हुलासा
याही देह सहित नरनाहा ॥ सेवहि गी तोहि सहित उछाहा
एहि प्रकार सब चरित सुनायो। दुहिता पाणिग्रहण करायो ॥
रत्न भार निर्मल बहु तेरे ॥ दायज में उपकरण घनेरे ॥
दीन्हे बहु भूषण समुदाया ॥ कंचन भाजन वस्तु निकाया

दो॰ ॥ दश सहस्र गज श्याम हय दीन्हे नियुत सँवारि
पुनि सहस्र शुभ हेमरथ अर्पे मुनि मन हारि ॥ ३८ ॥
सो॰ बहुरि दिव्य रथ एक अक्षय सायक तूण दुइ
दीन्हे अस्त्र अनेक हेम वर्म निर्भेद पुनि ३८ ॥

धनु वर इंद्र चाप सम सोई ॥ शक्ति दीन्हि रिपु मर्दनि जोई ॥
सेवा हेतु सहस वर दासीं ॥ अति शोभित वपु इंदु प्रभासीं
बहु प्रकार धन अर्पन कीन्हा ॥ निज सेना पति को पुनि दीन्हा
निज गंधर्व सेन चतुरंगिनि रिपु दल भेक समूह भुजंगिनि
एहि प्रकार तिन सहित उछाहा समयोचित करि दीन विवाहा
नृपकुमार बर संपति पाई ॥ मन मानी जाया सुखदाई ॥
धन संपति अरु दल बहु तेरा पायो मन आनंद घनेरा ॥ ३८ ॥

दो॰ ॥ गंधर्वन को नृपति तब करि वर को सत्कार ॥ ३८ ॥
चढि बिमान सुरपुर गयो हृदय प्रमोद अपार ३९

धर्मगुप्त कर भयो विवाहा ॥ कहि न जाय तेहि मन उत्साहा
गंधर्वन की सेन सोहाई ॥ ३८ ॥ लै संग निज पुर पहुँचो जाई ॥

गंधर्वन को जो दल भारी ॥ ८ ॥ तिन सब रिपु सेना संहारी ॥
दुर्मर्षण मारा रण माहीं ॥ रिपु गण शेष बचा कोउ नाहीं
पुनि कीन्हो निज नगर प्रवेशा बीतो मन संताप कलेशा ॥
तासु विजय लखि सब हर्षाने विप्र महाजन सचिव सयाने
राजतिलक को साज संवारी नृप आसन दीन्हो बैठारी ॥
लागे करन अकंटक राजू ॥ ८ ॥ महा मुदित मन प्रजा समाजू
द्विज वनिता सोई प्रिय माता द्विज नंदन भा प्रीतम भ्राता
नृप गंधर्व सुता प्रिय रानी ॥ भै विदर्भ नगरी रजधानी ॥
धर्मगुप्त शिव कहं आराधी एहि विधि पाई राज अबाधी
शौनक मुनि और रहु जो कोई एहि प्रकार शंकर रत होई ॥
शिव प्रदोष पूजन अनुसारी अभिमत फल लहि होय सुखारी
जीवत पावहिं सब मन कामा अंत समय गिरिजापति धामा
एह प्रदोष व्रत पुन्य विधायक तेहि में शिव पूजा सुखदायक

सो॰ धर्म अर्थ अरु काम मुक्ति केर साधन परम ॥ ८ ॥
शंभु भजन सुख धाम प्रति प्रदोष नित कीजिये ४०

जो सुनिहैं अद्भुत एह गाथा ॥ अति पावन अरु होहिं सनाथा
जो प्रदोष व्रत करहिं सुजाना विधि सन पूजहिं गो भगवाना
सावधान एह चरित बहोरी सुनिहैं शिव पद प्रीति न थोरी
नहि दरिद्र अरु दुख निअराई ज्ञान संपदा की अधिकाई
ह्वै है अंत समय शिव धामा सब प्रकार नर पूरन कामा
अति दुर्लभ एह मनुज शरीरा पाय भजैं शिव ते मति धीरा
परम धन्य तिन सम नहिं कोई है त्रिलोक विजयी नु साई ॥

दो॰ ॥ तासु पद्म पद रेणु कन जहं २ परें सुजान ॥ ८ ॥
त्रिभुअन पावन होय सब तेहि सम धन्य न आन ४१

इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी राम-कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाशमार्गे प्रदोषमहिमा प्रकाशनपर: सप्तमो विश्राम: ॥ ७ ॥

श्री गणेशाय नमः श्री शंकराय नमः ॥ चौपाई ॥

सूत कह्यो शौनक मुनिराई ॥ सुनहु शंभु गाथा सुखदाई
नित्य निरंजन आनंद रूपा निर्विकल्प चैतन्य अनूपा ॥
शांत निरामय शिव अविनाशी ॥ आदि अंत निर्गत सुखराशी
ऐसी शंभु तत्त्व जिन जानी ॥ ते शिव रूप होंहि विज्ञानी
जे विरक्त सद काम विहाई ॥ कर्म वासना सकल नशाई
भक्ति अहेतु किरत गत माना परा भक्ति ते करहिं सुजाना
धीर शंभु रत जे जग माहीं ॥ मुक्त होंहि कछु संशय नाहीं
जे पुनि भोग लालसा धारी ॥ अरु सकाम सेवहिं त्रिपुरारी

सो· ते उ शंभु प्रसाद विषयासक्त न होंहि पुनि ॥ १ ॥
प्रमुदित विगत विषाद भोगहिं अभिमत विषय सुख

तेहि कारन जो नर तन धारी ॥ जेहि केहि भाव भजै त्रिपुरारी
तासु विनाश कबहु नहिं होई पावै सुखद परम गति सोई
जे चाहैं शुभ गति नर नारी ॥ सकहिं न त्यागि विषय सुख भारी
कर्म सहित पूजै मदनारी ॥ भोग अंत पुनि होहि सुखारी ॥
बहुधा विषय तजो नहिं जाई तेहि कारन एह सुगम उपाई
कर्म मई पूजा सुखदाई ॥ कामधेनु सम परम सोहाई
माया मय संसार अपारा ॥ जो चाहैं तहं सुख विस्तारा ॥
अंत काल पुनि मुक्ति सोहाई जिन कौं है एह विधि सुखदाई

दो० ॥ शिव पूजा एहि लोक में अभिमत फल दातारि ॥
स्वर्ग मुक्ति की हेतु पुनि मुदित होंहि त्रिपुरारि २ ॥

सोमवार पूजन सुख दाई ॥ शुभ भग प्रदोषादिक गुन पाई
केवल चंद्रवार पुनि पाई ॥ आराधहिं शंकर मन लाई ॥
तिन्हहिं न कछु दुर्लभ मुनिराया। इहां उहां सब सुख समुदाया
चंद्र दिवस व्रत करहि जो कोई निज इंद्री जीते नर सोई ॥
प्रथमहि करि मज्जन आचारा करि सब संध्यादिक व्यवहारा
अथवा करि लौकिक उपचारा पूजहि विधि सों शंभु उदारा॥
वटू गृही कन्या किन होई ॥ सधवा विधवा पुनि जो कोई
तेहि दिन शिव पूजे मन लाई होय सुखी अभिमित वर पाई

दो॰ ॥ श्रोता जन को मन हरन इहां सुनहु इतिहास
मुक्ति लहें शिव भक्ति को सुनतहि होहि प्रकाश ३

रहा आर्यावर्त नरेशा धर्म सहित पाले निज देशा
नाम चित्र वर्मा नरपाला दुष्टन को यम सरिस कराला
धर्म सेतु कर पालन हारा ॥ शरणागत जन को रखवारा
उत्पथ गामिन कर सिख दाता। सब यज्ञन को परम विधाता
जग में सकल पुन्य तेहि कीन्ही। सकल संपदा सब कहं दीन्ही
सकल शत्रु जीते नर नाहा ॥ शिव माधव पद प्रेम निवाहा
बहु रानी अनुकूल सयानी ॥ पुत्र भये तिन में बल खानी ॥
चाह करत बीता चिरकाला ॥ लही एक दुहिता नरपाला ॥

दो॰ ॥ हिमिगिरि जेहि विधि गिरिसुता पाय लह्यो अति मोद
पूरन मन नरदेव तिमि अतिशय लह्यो प्रमोद ४ ॥

एक बार नरपाल बोलाये ॥ द्विज दैवज्ञ सभा महं आये ॥
जातक लक्षण जानन हारे ॥ न्रपति पूजिये वचन उचारे
जन्म घड़ी लखि ज्ञान निधाना दुहिता लक्षण कहहु सुजाना
तिन महं एक रहे अति ज्ञानी सो भूसुर बोला एह बानी ॥

सीमंतिनी नाम एहि केरा ॥ दमयंती सम रूप घनेरा ॥
उमा सरिस ह्वै है पति प्यारी ॥ सकल कला शारद अनुहारी
देव जननि सम प्रजा घनेरे जलधि सुता सम गुन बहुतेरे
पतिव्रत में जानुकी समाना तरणि प्रभा सम तेज निधाना
निशि नायक चंदनि छवि जैसी नृपतनय सुता मनोहर तैसी ॥

दो॰ ॥ अयुत वर्ष लौं पति सहित करि है भोग विनोद
अष्ट पुत्र उत्पन्न करि लहि है परम प्रमोद ५ ॥

एहि प्रकार जब द्विज वर कहेउ नृप तेहि पूजि बहुत धन दयेउ
द्विज वचनामृत सुनि नरनाहा अति प्रसन्न मन परम उछाहा
और हु एक विप्र मति धीरा ॥ बोला निर्भय वचन गँभीरा
चौदह संवत की जब ह्वै है ॥ एह तनया विधवा ह्वै जै है ॥
वज्र सार सुनि निष्ठुर वानी नृपति भयो चिंता की खानी
दुइ घटिका अति व्याकुल रहेउ कुछु उत्तर नरपति नहिं कहेउ
विप्र भक्त नृप धर्म धुरीणा ॥ विदा किये सब विप्र प्रवीणा
सो ह्वै है जो ईश्वर चाहा ॥ एह निश्चय कीन्हो नर नाहा
नृप तनया शिशु वयस बिहाई क्रम सों बढी बंधु सुखदाई ॥
निज सखि आनन मुख सो सुनि पायो ॥ विधवा भाव विप्र वर गायो
अति चिंता आकुल मन वाला भा निर्वेद परम तेहि काला
याज्ञवल्क्य मुनिवर विज्ञानी मैत्रेयी मुनि नारि सयानी ॥
तेहि की शरण गही नृप वाला विनय कीन्ह मन परम बिहाला
मात मोहि शरणागत जानी भय व्याकुल चिंता की खानी

सो॰ ॥ वरनौ कछु उपाय जो सौभाग्य बढावही ॥
मम चिंता दुख जाय असी करुना मातु करु६

निज शरणागत नृपति कुमारी देखि कह्यो मुनि नायक नारी

शिवा सहित गिरिजा पति केरी शरण जाहु वानी गहि मेरी ॥
सोम वार व्रत करहु कुमारी पूजा गिरिजा सह त्रिपुरारी ॥
करि मज्जन धरि निर्मल वासा निश्चल मति मन परम हुलासा
संयम मौन सहित हर्षित मन यथा विधान करहु शिव पूजन
पुनि द्विज वर भोजन करवाई शिवहि प्रसन्न करै मन लाई

छं॰ ॥ श्री शंभु के अभिषेक ते सब पाप क्षय मन पावनो ॥
पुनि पीठ पूजा सों मिलै सम्राज सुख मन भावनो ॥ २७
जो दिव्य चंदन माल अक्षत प्रेम सहित चढावही ॥
सौभाग्य और अनंत सुख नर नारि अभिमत पावही १
दो॰ धूप दिये सौभाग्य सुख दीप दान तन कांति ॥ २ ॥
दियें बहुरि नैवेद्य के भोग मिलै बहु भांति ७ ॥ २७

जो शंकर पर पान चढावै ॥ सो मन मानी दौलति पावै ॥
भक्ति सहित जो करहिं प्रनामा चारिहु फल पावैं मन कामा
अणिमादिक सब सिद्धि सोहाई लहै जो जाप करै मन लाई ॥
होम करै शंकर हित जोई ॥ सकल समृद्धि पाव नर सोई ॥
सब देवनि की तुष्टि सयानी ॥ संयासि भोजन वेद बखानी ॥
एहि प्रकार निश्चय उर आनी शिवा शंभु कहं भजहु सयानी
केसिहु दारुन विपति अपारा तरि पैहो संपति विस्तारा ॥
अति कलेश भय दायक जोई महा घोर कैसहु किन होई ॥
पाय उमापति भजन प्रसादा मिटि जैहैं भय खेद विखादा

दो॰ ॥ एहि प्रकार सीमंतिनिहि मुनि नायक वर वाम ॥
शंभु भजन उपदेश करि गमन कियो निज धाम ८ ॥
नृप तनया जेहि विधि सुनो शंकर भजन प्रकार
तेहि विधि लागी करन मन में प्रेम अपार ॥ ९ ॥

राजा नल निषधेश सुजाना॥ जिनकर यश जग में सब जाना
प्रिया तासु उत्तम गुन खानी॥ लोकविदित दमयंती रानी॥
इंद्रसेन भयो तासु कुमारा॥ तेहि को सुअन लोक उजिआरा
चंद्रांगद नामा गुनवाना॥ प्रियदर्शन भयो चंद्र समाना
सीमंतिनी पिता सुनि पायो॥ मान सहित निज गेह बोलायो
तेहि संग सीमंतिनी विवाहा करि दीनो न्रप सहित उछाहा
जुरी बहुत गुरु विप्र समाजा॥ आये बहु देशन के राजा॥
स्वसुर गेह महं पुनि कछु मासा न्रप तनया पति कीन निवासा
यमुना उतरन हेतु सयाना॥ लीला सहित परम गुनवाना

दो॰॥ न्रपजामाता एक दिन यमुना तट पर जाय॥
निज मित्रन सह मुदित मन नाव चढे हर्षाय॥१०

भ्रमर परी तरनी सो जाई॥ दैवयोग नहिं चलो उपाई॥
केवट सह बूडी जब तरनी॥ तेहि छिन को दुख जाइ न बरनी
दुहु तट पर ठाढे नर नारी ॥२॥ हाय २ तिन सबन पुकारी॥
सेनाजन कर विपुल विलापा दुखमय शब्द व्योम लौं व्यापा
नौका महं जे लोग सवारा॥ कोई बूडि गये जल धारा॥
काहू को जलचर गे खाई॥ कोउ तिन महं करनहि दर्शाई॥
सुनि एह खबरि नदी तट गयेउ पराधरनि व्याकुल न्रप भयेउ
रानिन एह चरचा सुनि पाई॥ भई विकल तन दशा गंवाई॥
सीमंतिनी हृदय दुख भारी॥ भै मूर्छित तन दशा विसारी
मंत्री उपरोहित याचकु जन करहिं विलाप शोक अतिशय मन
इंद्रसेन न्रप जब सुनि पायो॥ प्रियन सहित अति दुख उर छायो
तिन के सचिव प्रजा सब कोई तथा देशवासी नर जोई॥
बालक वनिता वृद्ध सयाने॥ अति विह्वल नहिं जांय बखाने

काहू शिर काहू उर हनेऊ ॥ हा नृप तनय कहाँ तुम गयेऊ ॥
ह्वै नृप को अति विकल निहारी उभय नगर वासिन दुख भारी
गुरु वृद्धन बहु विधि समुझायो सीमंतिनी पिता गृह आयो ॥
बहु प्रकार तनया समुझाई ॥ सब कीउ चित क्रिया करवाई
सती होन की अति अभिलाषा नृप दुहिता उर कियो प्रकाशा ॥
सुता सनेह अधिक मन माहीं सती होन दीन्ही नृप नाहीं ॥
विधवा भै नरनाह कुमारी ॥ यद्यपि प्रिय वियोग दुख भारी
तदपि तजौ नहिं शिव आराधन सोमवार व्रत कर निश्चय मन
जन्म समय जेहि विधि द्विज कहेउ वर्ष चतुर्दश में सब भयेउ ॥
यद्यपि अति दारुन दुख पायो श्री शंकर व्रत को न गँवायो ॥
श्री शिव को ध्यावत अति प्रीती गये तीनि संवत तेहि वीती ॥
इंद्रसेन उर शोक समाना ॥ भयो विकल उन्मत्त समाना ॥
देखि दशा रिपुगन हर्षाई ॥ सपत्नीक बाँधा तेहि जाई ॥
कारागृह में तुरत पठायो ॥ विनश्रम नृप सिंहासन पायो

दो॰॥ चंद्रांगद को चरित अब सुनहु मुनीश सुजान ॥
जब नौका बूडत भई तब नृप सुत बलवान ॥२॥
सो॰॥ चलो गयो बहु दूरि तरे तरे सरि वारि के ॥२॥
नाग कामिनी भूरि नृप सुत को देखत भईं १२॥

जल भीतर ते करहिं विहारा ॥ देखि भयो आश्चर्य अपारा
नृपसुत को नागन की बाला ॥ नाग भवन लै गईं पताला ॥
नाग राज तक्षक पुर आयो ॥ अति अद्भुत रमणीय सोहायो
मानहु सुर पति भवन सँवारा मणिगण को फैलो उजियारा ॥
हीरक माणि वैडूर्य बनाये ॥ विद्रुम के प्रासाद सोहाये ॥
गोपुर माणिक मणि छवि देहीं मुक्ता दाम चौरि चित लेहीं ॥

हेम कपाट द्वार अति सुंदर ॥
हिमकर मणि अस्थली मनोहर
शत सहस्र मणि दीप उजागर
उरग नाथ को धाम सुभगतर
तहाँ जाय तक्षक तेहि देखा ॥
बल प्रताप अरु तेज विशेखा
दिव्य वसन भूषण छवि धारी
कानन में कुंडल मनहारी ॥
रत्न किरीट परम द्युति कारी ॥
चंदन चर्चित तन छवि भारी

सो॰ ॥ फण मणि तेज अपार चित्र विभूषण तन धरें ॥
पन्नग सहस उदार कर जोरें सेवा करें १२ ॥

दो॰ ॥ गति विलास शोभा परम यौवन रूप अपार ॥
पन्नगेश चहुँ दिशि खडी पन्नग सुता हजार १४

कालानल सम अति दुर्द्धर्षा ॥
दिन मणि सरिस तेज उत्कर्षा
सभा मांहि नृप तनय निहारा ॥
चख सों जायव तेज संभारा ॥
नृप किशोर अति धीरज धामा
पन्नग पति कहँ कीन्ह प्रनामा
तक्षक देखि नरेश कुमारा ॥
रूप तेज बल बुद्धि अपारा ॥
पन्नग नारिन सों एह कहेऊ
को एह कहँ सो आवन भयेउ
नाथ न जानाहिं कुल अरु धामू
नाहिं इन कर पूछा हम नामू
यमुना जल भीतर हम पायो
तब समीप इन को पहुँचायो
पन्नेश नृप सुत दिशि देखी ॥
एह पूछा करि प्रीति विशेखी
को तुम कौन देश में रहहू ॥
किमि आये मो सन सब कहहू
वसुधा मांहि निषध वर देशा
नल संज्ञा तहँ भयो नरेशा ॥
दमयंती जिन की पटरानी ॥
पावन यश नहिं जाय बखानी
इंद्रसेन है तासु कुमारा ॥
तेहि कर प्रभु मैं तनय पिआरा
चंद्रांगद है प्रभु मम नामा ॥
अब ही रह्यौ श्वसुर के धामा
विहरत श्री यमुना बर वारी ॥
मग्न भई तहँ तरनि हमारी
पन्नग तिअन यहां पहुँचायो
बडे भाग तव दर्शन पायो ॥

सो॰ निज कुल सह उरगेश आजु धन्य पुनि धन्य में ॥
दया विलोकि विशेश कीन्ही मम संभावना १५
दो॰॥ परम चतुरता मय वचन सुनि मन आनँद पाय
उत्कंठा युत उरगपति पुनि बोला हर्षाय २६॥

भो न्पनंदन जनि कुछ डरहू ॥ अपने मन धीरज तुम धरहू ॥
सव देवन में को अस देवा ॥ जेहि की सदा करहु तुम सेवा॥
पन्नगेश को वचन सोहावा ॥ सुनि बोला उत्तर मन भावा ॥
विश्व केर आतम है जोई ॥ महादेव सम देव न कोई ॥ २॥
उमानाथ शंकर करुनाकर ॥ तिन को हम पूजहिं निशिवासर
जिन के तेज अंश लव लेशा ॥ रजगुन सों विधि भे उरगेशा ॥
ते जग की रचना विस्तरहीं ॥ तिन शिव की पूजा हम करहीं
जासु सतोगुन अंश उदारा ॥ विष्णु सनातन तेज अपारा
विश्व भरन पोषन हरि करहीं ॥ तासु समर्चन हम अनुसरहीं
जासु तमोगुन अंश प्रधाना ॥ भये रुद्र कालाग्नि सुजाना ॥
प्रलय समय जारहिं संसारा ॥ तिन्हहि भजें हम सह परिवारा
कारन हू कर कारन सोई ॥ तिमि विधि केर विधाता जोई
तेजन में जो तेज अपारा ॥ २॥ सो शिव परगति रूप हमारा

दो॰॥ जो महि जल में अग्नि में जो समीर नभ मांहिं ॥
वास करै जगदात्मा जेहि सेवाय कुछु नाहिं २७

सो गौरीपति शंभु महेशा ॥ हम पूजत हैं नित उरगेशा ॥
साखी सव भूतन को सोई ॥ सव के हृदय विराजहि जोई
जेहि की इच्छा के आधीना ॥ सकल लोक नित रहहिं प्रवीना
अंतर्यामि निरंजन जोई ॥ हम पूजहि शिव शंकर सोई
सकल आदि जो पुरुष पुराना ॥ माया पति जग पति भगवाना

मायागुनते सो बहु रूपा ॥ बरनौ जाय अनादि अनूपा
क्षेत्रज्ञ कोउ बरनन करहीं ॥ कोउ तुरीय तेहि कोउ उचरहीं
कोई कूटस्थ कहहिं उरगेशा गति हमारि सो नाथ महेशा
छं॰ ॥ निर्लेप औ अचिंत्य कहि जेहि तत्व को श्रुति ध्यावहीं
जेहि देहधारिन की गिरा मन जानि कबहुं न पावहीं ॥
है जासु धाम दुरंत अनुभव गम्य वेद बतावहीं ॥ २ ॥
तेहि परम शिवजी को सदा हम पूजि ध्यान लगावहीं १
जेहि नाथ केर प्रसाद लव जे संतजन कछु पावहीं ॥ २ ॥
नहिं चहहिं सुरपति लोक नहिं विधि लोक मन तरलावहीं
ते कर्म बंधन काल चक्र विमुक्त है सुख सों रहैं ॥ २ २ ॥
निर्भय फिरैं संसार में सो शंभु हमरी गति अहैं २ ॥ २ ॥
जिन शंभु को सुमिरन सदा सब पाप रोग नशावहीं ॥
पुष्कस हु जिन को सुमिरि अपने सकल पाप गंवावहीं
पुनि जासु रूप समस्त श्रुतिगन सर्वदा खोजत फिरैं
तिन शंभु के हित सर्वदा हम उरगपति पूजन करैं ॥ ३ ॥
सुरसरित जिन के शीश में विश्राम अति सुख सों गह्यो
जगदंबिका जेहि पाय वर त्रैलोक में अति यश लह्यो ॥
भे जासु कुंडल वासुकि अरु आप है भुजगाधिपति ॥
सो चंद्रमौलि महेश शंकर अहहिं नाथ हमारि गति ४
जय निगम चूडा शिरन पर पदपद्म जासु विराजही
जय योगिवर के हृदय में नित जासु मूरति राजही ॥
जय सकल तत्व उलंघि वर्तिनि विमल कीरति जासु की
जय जय विजित गुण सर्ग प्रभु हम करहिं पूजा तासु की ५
सो॰ ॥ एहि विधि सुनि वर वयन तक्षक परम प्रसन्न मन

उरगाधिप गुन श्रयन शंभुभक्ति पूरन भयो ९८॥

न्रपकिशोरपर अति हर्षाई । उरग नाथ एह गिरा सुनाई॥
हौं प्रसन्न नरपाल कुमारा॥ होय परम कल्याण तुम्हारा
यद्यपि बालक वयसि तुम्हारी जानहु परम तत्त्व त्रिपुरारी॥
दिव्य रत्नमय एह वरलोका इहाँ वसत नहिं कछु दुख शोका
चारुविलोचनि ये वर नारी॥ रूप शील लीला गुन भारी॥
ये कल्पद्रुम के तरु भारी॥ वापी रुचिर सुधारस धारी॥
घोर म्रत्यु की कछु भय नाहीं रोग जरा नहिं एहि पुर माहीं
इहाँ रहहु प्रिय राजकुमारा करहु यथारुचि भोग विहारा
नागराज की सुनि एह वानी न्रपकिशोर जोरे युग पानी
परम उदार बुद्धि नरपाला प्रीति सहित एह वचन रसाला
वोला सुनु क्रुपाल भुजगेशा मोर पिता जो है निषधेशा॥
तासु एक मैं प्राण अधारा॥ नहिं तिनके कोउ और कुमारा

दो॰ मेरो पुनि ह्वै गयो है भुजगाधीश विवाह॥ ः ः॥
प्रमगृहणी नित शंकरहि पूजाहि सहित उछाह ९९

हम कहँ ते सब म्रत अनुमानी ह्वै हैं तिनके मन दुख खानी
प्राण वियोग भयो तिन केरा के जीवहिं सहि दुख बहुतेरा
एहि ते मम निवास बहु काला इहाँ उचित नहिं दीन दयाला
ऐसी क्रुपा करहु मोहि पाहीं पहुँचाओ धरती तल माहीं
न्रपकिशोर को वचन सुहायो उरगाधिप के मन अति भायो
करवायो न्रप सुत कर मज्जन कल्पव्रक्ष संभव पुनि भोजन
गंध वसन भूषण अभिरामा विविध भोग सुंदर सुख धामा
एहि प्रकार करि बहु पहुनाई उरग नाथ एह गिरा सुनाई॥

दो॰ ॥ जब जब करिहो मोरि सुधि पैहो दरश हमार

पुनि दीन्हो कामगतुरग सो जो सकल प्रकार २०
नाना द्वीप समुद्र महँ अरु सब लोकन माहिं ॥
जेहि की गति सब ठौर पुनि कहूं रोक कछु नाहिं २१

दीन्हे रत्न भार बहु तेरे ॥ दिव्या भूषन वसन घनेरे ॥
तिन सब को वाहक रजनीचर एक संग दीन्हो भुजगेश्वर ॥
नृप सुत के सहाय के काजा ॥ दियो भुजगपति सुत महाराजा
एह प्रकार सब साज सँवारा विदा कियो नरदेव कुमारा
नृपकिशोर बहु बर धन पाई वाजी निष्कर रुचिर सहाई
कामगतुरग भयो असवारा तिन सह चलि भयो राजकुमारा
दुइ घरिका लागन नहिं पाई यमुना जल पर निकरो जाई
अश्वारूढ नरेश कुमारा ॥ः॥ यमुना तट पर करहि प्रचारा

दो॰ तेहि अवसर सीमंतिनी सुमिरत मन वृषकेतु
सखिन सहित आवत भई यमुना मज्जन हेतु २२
सो॰ ॥ देखा करत विहार नृप सुत को सीमंतिनी ॥ः॥
घोड़े पर असवार संग निष्कर पन्नग तनय २३

पहिलो सो नहिं राजकुमारा ॥ दिव्य वसन भूषण शृंगारा
दिव्य माल अवतंश मनोहर देवी सकल साज सब सुंदर
दिव्य गंध तन मैं मन भाई ॥ सौ योजन सुरभी रहि छाई
देखा सकल अलौकिक वेषा ॥ सो विस्मित मन भई विशेषा
नृपतनया उन्मत्त समाना ॥ भई मनहु जड़ जनु भयमाना
एकटक चितवहि नेह विशेखा तथा नृपति बालक तेहि देखा
अति कृश गात महीप कुमारी मन में परम शोक दुखभारी
केशपाश रचना भई नाहीं ॥ नहिं अंजन है लोचन माहीं
ग्रीवा कंठाभरण विहीना ॥ अंग राग वर्जित अति दीना

प्रथम लखी कवहूं एह नारी | न्रप किशोर निज हृदय विचारी

दो॰ तव उतरो निज तुरग ते वैठो यमुना तीर ॥ २४ ॥
निज समीप वैठारि तेहि वोलो गिरा गँभीर ॥

सो॰ ॥ को हो केहि की नारि केहि की कन्या मोहि कहो
हे भामिनि सुकुमारि किमि पायो दुख वालपन २५

एहि प्रकार नरदेव कुमारा ॥ | नेह भरो जव वचन उचारा ॥
हृदय लाज उपजी वहु तेरी | लोचन जल की धार घनेरी ॥
तासु सखी वोली एह वानी ॥ | चित्रवर्म न्रप सुता सयानी
सीमंतिनि संज्ञा जग जानी | चंद्रांगद न्रप की एह रानी ॥
दैव योग सो राज कुमारा ॥ | वूडि गयो यमुना मँरु धारा ॥
विधवा तेहि दिन ते एह रानी | अति दुख पुष्प सरिस कुम्हिलानी
तीनि वर्ष वीते एहि भांती ॥ | परम शोक व्याकुल दिन राती
आजु चंद्र वासर व्रत पाई ॥ | यमुना मज्जन हित एहि आई
निषध देश को जो नरपाला ॥ | पुत्र दशा सुनि शोक विहाला
रिपुगन तासु राज लै लीन्हा | महिषी सह वंदी करि दीन्हा
यद्यपि पायो दुःख अपारा | ताहू पर एह शुभ आचारा ॥

दो॰ ॥ सोमवार के दिन करै उमा महेश्वर ध्यान ॥
भक्ति सहित पूजहि सदा श्री शंकर भगवान २६

सो॰ ॥ दीन्हो सकल सुनाय सखी द्वार अपनो चरित
पुनि तेहि को रुख पाय न्रप दुहिता वोलत भई २७

को तुम सुंदर मदन समाना ॥ | सुर नर हो किमु सिद्ध सुजाना
किमु किंनर गंधर्व कुमारा ॥ | कौन हेतु पुनि चरित हमारा
पूछहु नेह सहित केहि काजा ॥ | का मोहि जानत हो महराजा ॥
अथवा मोहि कतहुं तुम देखा | तुम्हहि देखि मोहि नेह विशेखा

प्रथमहूं भे जनु दरश तुम्हारे । भान होहु जिमि स्वजन हमारे
सांची कहौ सकल मोहि पाहीं । सत्य सार सज्जन महिमा हीं
एतनौ कहि नरदेव कुमारी ॥ करन लगी रोदन अतिभारी
गद्गद कंठ न कुछु कहि आवा ॥ पति वियोग सुधि कर दुख पावा
मोह विकल मूर्छित तन भयेऊ । सखी जनन तेहि को गहि लयेऊ
सुना सकल प्यारी दुख कारन । न्पसुत परम विकल भा निजमन
रहा मुहूरत भरि अरुगाई ॥ न्पसुत पुनि निज हृदय दृढाई
वचन निपुन बहु भांति सुनाई । विविधि रीति प्यारी समुझाई

दो॰ ॥ हैं देवन की जाति में सिद्ध हमारो नाम ॥ २२ ॥ २ ॥
काम गहैं सब लोक में फिरैं न्पति वर वाम २८

सीमंतिनी सुनी एह वानी ॥ निज मन में शंका एह आनी
जनि कहुं एहू मम कर गहि लेही । पुलकि गात कांपी सब देही
तब अतिशय समीप तेहि आई । प्रिया श्रवण महं दीन सुनाई
काहू लोक विषे वर वयनी ॥ हम देखा तव नाह सुनयनी
तव ब्रत नेम देखि हर्षाई ॥ वेगि मिलहिंगे तव सुखदाई
भामिनि वीते दिन दुइ चारी । हरि लैहैं तेरो दुख भारी ॥
आयो कहन हेतु सुधि एहा ॥ नहि लावो निजमन संदेहा ॥
हौं तव पति को सखा सयानी ॥ मोर कथन मिथ्या नहिं रानी
शिव चरनन की सपथ सयानी । करहु मानु मेरी फुर वानी ॥
जौलौ मिलै न नाथ तुम्हारा ॥ प्रगट करौ जनि वचन हमारा

दो॰ ॥ सुधाधार सौं ते अधिक जवहि सुने वर वयन ॥
संभ्रम वश न्पसुता के घूमि उठे द्वौ नयन २९ ॥

बहुरि चकोर सरस अनुरागी । तासु चंद्रमुख निरखन लागी
प्रेम बंध वर्णीत वर वयना ॥ चतुराई पूरन रस अयना ॥

लीलाधुतविहसनिअतिसुंदर चितवनमधुरापांगमनोहर
निजकरपर्शजनितछविछायो पुलकावलिमयगातसोहायो
अंगाचिन्हजेप्रथमनिहारे॥ भावरणादिपायेतेसारे॥
वयप्रमाणपुनिहृदयविचारी वर्णवेषसोइसकलनिहारी
एहिप्रकारकरिबहुअनुमाना एहनिश्चयअपनेमनआना
हैहैएहुभर्त्तामससोई॥ एहविहायदूसरनाहिंकोई

दो॰॥ जेहिकारन मेरो हृदय एहि में रह्यो समाय॥
प्रेम भरो आसक्त है एहि सों नाहिं बिलगाय॥

बहुरितर्कमनउठीअपारा एहिविधिलागीकरनविचारा
ममपतिजोपरलोकासिधायो सोस्वरूपधरिकेहिविधिआयो
मोसमदुर्भागिनिनाहिंकोई नष्टनाथदर्शनकिमिहोई
हेविधिमेंदेखतिहौंजोई॥ स्वप्नहोयअथवानाहिंहोई
एहुभ्रमअथवाभ्रमनहिहोई अथवाएहुकपटीनरकोई॥
अथवाकोउगंधर्वसुजाना॥ यक्षाकिधौंएहुरूपनिधाना
अथवामुनिपत्नीजोकहेऊ तासुपरमफलप्रकटितभयेऊ

दो॰॥ अथवा द्विजवर को वचन सफल भयो अब आय
अयुत वर्ष सौभाग्य मम जो कहि गयो बुझाय ३९

जोविगरीछिनमांहिसंवारा ईश्वरगतिकोजाननिहारा
शकुनहोंहिदिनप्रतिबहुतेरे बहुमंगलमयस्वप्नघनेरे॥
गिरिजापतिप्रसन्नजेहिकाला। नहिंकछुदुर्लभआशविशाला
एहिप्रकारबहुकियोविचारा सबउरकोसंदेहनिवारा॥
लाजनम्रमुखभईसयानी नृपसुतबहुरिकहीएहबानी
तवपतिजननीजनकदुखारी जाहुतहांमेंनृपतिकुमारी॥
तिनहूंकोसबचरितसुनाई॥ मेंटहुदुखआनंदसरसाई

होहु क्षेम अरु तव कल्याना ॥ वेगि पाइ है नाह सुजाना ॥

दो० ॥ एहि विधि कहि चढि निज तुरग साथ लिये द्वौ वीर
छिन में पहुंचो निषधपुर वेग सहित मतिधीर ३२

सो० पुर उपवन में जाय कियो आपु विश्राम तहँ ॥
पन्नग दियो पठाय निज शत्रुन के बोध हित ३३

दो० ॥ भुजग तनय वर रूप धरि नृपति सभा महँ जाय
नृप रिपुगन को बहु वचन दीन्हो सबल सुनाय ३४

इंद्रसेन जो चतुर नृपाला ॥ तिन को छोरि देहु तत्काला
विनहि विचार किये नृप आसन इंद्रसेन को करहु समर्पन
तिन को सुत चंद्रांगद नामा परम चतुर अतिशय बल धामा
यमुना जल महं डूबत भयेउ ॥ उरग राज मंदिर महं गयेउ
पन्नगेश बहु दीनि सहाया ॥ सो पुनि धरणी लोक महं आया
जो नहिं मानहु वचन हमारा नृप सुत करि है नाश तुम्हारा
एहि प्रकार जब कथा सुनाई बोले पन्नग सों भय पाई ॥
साधु २ बड हर्ष सुनावा ॥ करब तुम्हार वचन मन भावा
सब मिलि इंद्रसेन पहं जाई ॥ पुत्र समागम दीन सुनाई ॥
पुनि कीन्ही तिन विनय घनेरी दूरि कियो दुखवंदनि वेरी ॥
सब रिपुगन पायो भय भारी दीन्हो नृप आसन बैठारी ॥
सुनि २ नगर लोग सब धाये पुर उपवन में लखि हर्षाये
राजहिं आय कहे सुख वयना तिन्हहि दियो बहु धन गुन अयना

दो० ॥ सुत के आवन को चरित सुनि रानी महिपाल ॥
लोक देह की खबर नहिं आनंद भयो विशाल ३५
नगर महाजन सचिव गुरु संग वाहन अतिभीर
आगे लीन्हो भेरि तेहि लै आये नृप तीर ॥ ३६ ॥

उत्सव सहित नरेश कुमारा । हर्षित निज मंदिर पगु धारा ॥
की न्हो मात पिता पद वंदन । प्रेम वारि पूरन द्वौ लोचन ॥
परो चरन सुत नृप नहिं जाना । अति प्रमुदित न देह संधाना ॥
तब मंत्रिन नृप कहँ समुझाये । संज्ञा पाय तनय उर लाये ॥
क्रम सों मातन कहँ शिर नावा । तिनके सब के सनेह उर छावा ॥
सकल मातु आलिंगन कीन्हो । मन अति प्रमुदित आशिरव दीन्हो ॥
सचिव महाजन सब पुरवासी । कहि प्रिय वचन किये सुख राशी ॥
सभा मध्य बैठो हर्षाई ॥ पितहि सकल निज कथा सुनाई ॥

दो० ॥ उरग नाथ की मित्रता कही यथा विधि गाय ॥
रत्न धनादिक जो मिलो पितहि दियो दर्शाय ३७

सुअन चरित्र सुना अरु देखा । प्रेम शिथिल नृप हर्ष विशेखा ॥
बहुत दिवश कीन्हो जो तन मन । मम सुत वधू शंभु आराधन ॥
तासु सोहाग उदय एह भयेउ । नृप उर हृद निश्चय एह ठयउ ॥
अति मंगलमय खबरि सोहाई । निज समधी कहँ तुरत पठाई ॥
चित्रवर्म सन आनंद सानी ॥ चारन आय कही सुखवानी ॥
सुनतहि मन अति आनँद बाढा । अति संभ्रम ह्वै गो नृप ठाढा ॥
तिनको दे बहु भाँति विदाई । नाचन लागो मन हर्षाई ॥
आनँद परवश अति नरनाहा । कहि न जाय मन केर उछाहा ॥
पुनि नरपति निज सुता बोलाई । सजल विलोचन कंठ लगाई ॥
शंभु कृपा वैधव्य गंवाई ॥ २ ॥ दिये नृपति भूषण पहिराई ॥

सो० ॥ अति भय भयो उछाह घर २ पुर ग्रामादि महँ
नीको कियो निवाह सीमंतिनि शिव भक्ति को

एहि प्रकार सब लोग लुगाई । नृप दुहिता की करहिं बडाई ॥
चित्रवर्म नरदेव सयाना ॥ पूछि विप्र गुरु बंधु सुजाना ॥

चंद्रांगद कहँ लियो बोलाई । पुनि विवाह की विधि जो गाई
करि वैदिक लौकिक सब रीती । ब्याहि दई निज सुता सप्रीती
सीमंतिनि पति परम सयाना । पुनरुद्वाह भये हर्षाना ॥
भुजगाधिप ग्रह में जे पाये ॥ रत्नविभूषण परम सोहाये
मनुजन को अति दुर्लभ जोई । पहिराये वरभूषण सोई ॥

दो॰ अंगराग जेहि के लगे कुंदन सम छवि गात ॥
अति सुगंध पुनि जासु की दश योजन लौ जात
कल्पवृक्ष के पुष्प की कंचन वरन विशाल ॥
जो कबहूं सुर राय नहिं पहिराई वरमाल ४०

एहि विधि अति शोभा सरसानी । नृपतनया नहिं जाय बखानी
पुनि कछु दिन तहँ रहि सुख पायो । शुभ अवसर सब विधि जब आयो
सासु ससुर अनुमोदन पायो । महिषी सह निज धाम सिधायो
इन्द्रसेन लखि तरुन कुमारा । शुभ दिन नृप आसन बैठारा
आप गयो वन में तपहेतू ॥ तहँ आराधन करि वृषकेतू
सन्यासिन की जो गति वरनी । अंत लही नरपति दुख हरनी
दशहजार संवत सुख साथा । सीमंतिनी सहित नरनाथा
भोग किये बहु विषय घनेरे । आठ सुअन जाये तिन केरे ॥
भई एक दुहिता अति सुंदर । वर आनन अति रूप उजागर

दो॰ पति समेत सीमंतिनी रमै सदा सुख पाय ॥ ९ ॥
उमा महेश्वर पूजहि दिन प्रति प्रेम बढ़ाय ॥ ४१ ॥
सो॰ ॥ अद्भुत एह इतिहास शौनक में वरनन कियो
करिहौं तहु हरि भकाश माहि मा सोम प्रदोष की ४२

इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी राम कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश

मार्गे सोमवार व्रत महिमा प्रकाशनं नाम अष्टमो विश्रामः
८ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो नारायणाय चौपाई

साधु सूत भल चरित सुनावा	हम सब के मन में सुख छावा
दया करो और कछु कहहू	व्यास कृपा सब जानत अहहू
सुनि मुनि गन के वचन सप्रीती	सूत कहन लागे एहि रीती ॥
है विदर्भ सुंदर जो देशा ॥	वेदमित्र तहँ रहा द्विजेशा ॥
वेद शास्त्र कर जानन हारा ॥	जिन की निर्मल बुद्धि अपारा
तासु मित्र सारस्वत नामा ॥	सोउ द्विज अतिशय गुन धामा
एक नगर में वास बहोरी ॥	रही परस्पर प्रीति न थोरी
वेदमित्र को पुत्र सुजाना ॥	नाम सुमेधा अति गुन वाना
सारस्वत कर तनय सोहावा	सामवान संज्ञा मन भावा ॥

सो॰ समदूतहु कर वेष सम वय सम विद्या उभय
दुहु महँ प्रेम विशेष सह निवास के हेतु सों १

साथ २ दुहु कर संस्कारा ॥	तिन कर सम भास बव्यवहारा
पढे अंग संयुत सब वेदा ॥	तर्क व्याकरण पुनि बिन खेदा
तथा सकल इतिहास पुराना	धर्म शास्त्र पूरन तिन जाना ॥
सब विद्या महँ कुशल सुजाना	सम गुरु द्वौ बालक गुन वाना
निज गुन तिन सब कहँ वश कीन्हा	निज जन कन कहँ अति सुख दीन्हा
षोडश संवत के द्वौ बालक ॥	निज आचार नेम के पालक
महा मनोहर आकृति देखी ॥	उभय विप्र करि प्रीति विशेखी
कहन लगे तिन सों एह वानी ॥	अब तुम भये सकल गुन खानी
ब्रह्म तेज तुम्हरे तन माहीं ॥	विद्या सकल बसहिं तुम पाहीं
अब विवाह कर समय तुम्हारा	मानहु यह उपदेश हमारा ॥
द्वौ विदर्भ नरपति पहँ जाई ॥	तेहि कहँ निज विद्या दरशाई ॥

पावहुगे तुम द्रव्य अपारा ॥ तव ह्वै जैहै ब्याह तुम्हारा ॥
द्वनहु सुनि निज पितु के वयना। न्रप समीप गवने गुन अयना।
अपनो उत्तम गुन दर्शायो। भूपति को तिन वहुत रिझायो।
राजहि अति प्रसन्न मन जानी। बोले द्विज वालक एह वानी।
भा विवाह कर समय हमारा। धन हित तव मंदिर पगु धारा।

दो॰ ज्ञाना अभिमत दुहुन कर विहँसत मुख नरनाह ॥
लोक तत्व के ज्ञान हित वोला साहित उछाह २ ॥

निषध देश न्रप की पटरानी। सीमंतिनी सकल गुन खानी।
सोमवार कर व्रत आचरही। शिव गौरी को पूजन करही ॥
तेहि दिन सपत्नीक भूसुरगन। वेद ज्ञान पूरन जे सज्जन ॥
तिन को भक्ति सहित आराधन। करिकै सदा देय वहुतर धन।
तुम द्वौ आज्ञा मानि हमारी ॥ एक नारि को वेष संभारी ॥
वनहि दूसरो तेहि कर नाहा ॥ दंपति वनि द्वौ सहित उछाहा।
रानी सीमंतिनि ग्रह जाई ॥ ह्वै हौ मुदित वहुत धन पाई।
वहुरि लौटि मम दिग जव ऐहौ। हमहूं सों अभिमत धन पैहौ।
नरपति की द्वौ सुनि एह वानी। द्विज वालकन परम भय मानी।
कर्म नरेश कहा तुम जोई ॥ सो यह करत हमहि भय होई।

दो॰ मातु पिता अरु देव गुरु तथा राज कुल माहिं ॥
करहिं कुटिलता मोह वश ते कुल सहित नशाहिं ३

राजन के अंतः पुर माहीं ॥ केहि प्रकार कोउ छल करि जाहीं
केनहु गुप्त करै किन कोई ॥ कवहूं प्रगट होय पुनि सोई
शीलाचार श्रुतादि घनेरे ॥ जे साधे हम गुन वहुतेरे ॥
कुटिल पंथ दीन्हे पगु राजा ॥ तुरतहि नाशहि सुगुन समाजा
छल मार्ग महँ जिन पगु दीन्हा। कहौ कौन पातक नहिं कीन्हा।

वैर पाप निंदा अरु भीती ॥	तिन महं चारि बसैं एह नीती
दुराचार पापी हम नाहीं ॥	जन्म लह्यो पावन कुल माहीं
दुर्जन सेवित एह आचरनू	कबहुं न हम करिहैं रिपुदमनू
मुनि द्विज बाल कै गिरा सोहाई	पुनि महीश बोला अनखाई

दो॰ मातु पिता गुरु नृपति को जो अनुशासन होय
उल्लंघन नहिं कीजिये तेहि को उत्तर न कोय ४

जो इतिन कर आयुसु होई ॥	शुभ अरु अशुभ गिनै नहिं कोई
जो आपन चाहै कल्याना ॥	सावधान अरु सभय सुजाना
सदा मानि तिन कर उपदेशा	कियें लहै नहिं कबहुं कलेशा
देखहु हम नरपाल तुम्हारे ॥	तुम संमत शुचि प्रजा हमारे
नृप अनुशासन करिहौ जोई	सब प्रकार एउर शुभ होई ॥
जो नहिं मानहु वचन हमारा	ह्वै है तुम कहं भीति अपारा
एहि कारण सब हठ परिहरहू	मोर वचन रुचि सों तुम करहू
एहि विधि जब नरदेव बखाना	भूप वश्य कीन्हो बचन प्रमाना
सारस्वत कर तनय सुजाना	साय वान संज्ञा गुन वाना ॥
नृप तेहि को तिय वेष बनायो	रुचिर वसन भूषण पहिरायो

छं॰ कृत्रिम स्तन उन्नतकुरुचिर वेणी परम छवि छाजही
श्रुति लोल कुंडल देह में वर अंग राज विराजही ॥
चख श्याम अंजन रूप अद्भुत जन मनोहर ह्वै गयो
एहि रीति सों द्विज तनय उत्तम नारि सम छिन में भयो १

दो॰ बनि दोऊ द्विज दंपती नृप आयसु अनुसार ॥ ॥
निषध देश को चलि भये करि निज हृदय विचार ५
जो होनी सो आमिट है होइ न कछु संदेह ॥ २ ॥
सोमवार के दिन गये निषध भूप के गेह ॥ ६ ॥

और द्विजन सह कीन प्रवेशा । भयो दूरि सब पंथ कलेशा ।
प्रथम पाद प्रक्षालन भयेउ । बैठन को शुभ आसन मिलेउ
जवहीं द्विज दंपति प्रमुदित मन । बैठि गये सब निज आसन
सीमंतिनी तहाँ चलि आई ॥ एक २ पूजो मन लाई ॥ २ ॥
कृचिमा द्विज दंपति पहिचानी । हँसी प्रथम नृप नारि सयानी
वहुरि तिन्हहि गौरी शिव मानी । पूजा की रूचि कीनि सयानी
जे भूसुर तिन महँ शिव शंकर । वनितन महँ हिमगिरि तनया कर
एहि प्रकार कीन्हो आवाहन । माला धूप तथा निराजन ॥
पूजि सबहि पुनि कियो प्रनामा । करन लगी पारुस नृप वामा
हेम थार पायस अति रूरी । घृत शर्करा सहित अरु पूरी
शाक मनोरम अरु आपूपा ॥ शाल्योदन वर गंध अनूपा
कृसर तथा संपाव सोहावा । माषपक्व सुंदर मन भावा
औरहु अन्न असंख्य प्रकारा । भक्ष्य भोज्य वर सरस अपारा
दधि ओदन अनूप सुंदर जल । शुचि सुगंध मिश्रित अरु शीतल
तृप्त भये जब द्विज समुदाई । दिये पान आचमन कराई
धेनु हेम अरु वसन सोहाये । रत्न माल भूषन मन भाये ॥

दो॰ दीन्ही एहि विधि दक्षिणा पुनि २ कीन प्रणाम
विदा भये सब भूमिसुर सकल गये निज धाम ७

द्विज बालक जे नृपति पठाये । निषधेश्वर गृह बाहर आये
नारी रूप विप्र जो रहेउ ॥ गौरि वुद्धि पूजन जब भयेउ
सोमवान सांचहु वर नारी । होत भयो नर भाव विसारी
वना रहा जो वर तेहि केरा । ताही में करि प्रेम घनेरा ॥
भई काम पीड़ा तेहि भारी ॥ मदन विवश बोली वर नारी
प्राण नाथ वरनयन विशाला । देखहु मम दिशि करहु निहाला

ठाढ होहु सुंदर कहँ जाहू ॥ निज प्यारी कर सुनहु उछाहू
एहु वन अति रमणीय सुजाना। लताभवन पुष्पित जहँ नाना।
मोर मनोरथ नाथ अपारा ॥ करहु यहाँ मम सहित विहारा
एहि प्रकार तेहि वचन सुनाया अागे वर स्वरूप द्विज राया ॥
तासु वचन परिहास विचारी नहि कछु भूसुर गिराउ चारी
चलो जाय मारग मन लाये पुनि वाला ये वचन सुनाये ॥
कहाँ जाहु ठाढे किन होहू ॥ मोपर नाथ करो किन छोहू
मदन वेग अव नहि सहि जाई तजहु वेगि मन की निठुराई
करहु मोर परिरंभ दयाला। पान करा वहु अधर रसाला।
प्राणनाथ अव नहिं चलि जाई कामवाण पीडा अधिकाई
जैसो वचन कवहूँ नहिँ वोला। रमणी कैसो स्वर अन मोला।
सुनि२ मन शंकित रहि गयऊ सहसा ताहि निहारत भयऊ
जव देखी अति सुंदर नारी ॥ भयो ताहि विस्मय अति भारी
कमलविलोचनि को यह नारी कृश कटि अरु श्रोणी थल भारी
पीनोन्नत कुच वर संघाता। नवपल्लव कोमल सव गाता।
सोई एहु मम सखा सुजाना। तरुनी ह्वै गयो विधि वलवाना।
पूछौ प्रथम दशा एहि केरी ॥ एह निश्चय करि ताहि दिशि हेरी
वोला सुनु प्रिय सखा सुजाना भान होहु मोहि तुमा विधि आना
औराहि रूप और गुन तेरे ॥ औराहि भाँति वचन वहु तेरे
कहहु सखा जिमि कामिनि कोई एहु सव लखि अति विस्मय होई

सो॰ ॥ जानहु वेद पुरान ब्रह्मचर्य्य को व्रत गहे ॥ ५ ॥
द्विज वर परम सुजान सारस्वत के पुत्र तुम ॥
इंद्रीगन वलवान जीति लई तुमने सकल ॥ ६ ॥
शमदम धर्मनिधान अस भाषहु कारन कवन ९

सुनि एह वचन कह्यो द्विज पाहीं
स्वामी सुनहु पुरुष में नाहीं
वाला सोमवती मम नामा
तव रति दायिनि हौं गुन धामा
जो संशय कौ नहु मन तोरे ॥
तौ तुम देखि लेहु अंग मोरे ॥
पुनि तुरतहि वन में लै जाई
सहसा निज अंग दियें देखाई
सहज अशुभ गसुंदर सव रूपा
जघनादिक सव अंग अनूपा
कृत्रिम नहि तहं कौनहु वेखा
जव धरनीसुर वालक देखा
हृदय भई कछु मनासिज पीरा
भयो विकल तद्यपि मति धीरा
वुधवर करि अति यत्न सो हावा
मन विकार सव दूरि वहावा
भयो अधिक विस्मय मन माहीं
दुइ घटिका वोला कछु नाहीं
पुनि कामिनि यह वचन उचारा
गयो नाथ संदेह तुम्हारा ॥
तौ देखहु एह विपिनि सघनतर
परवनिता रति योग मनोहर
चलहु तहां मम सेवन करहू
काम जनित पीड़ा मम हरहू

सो॰ ॥ असे सुनि वहु वयन कह्यो सुमेधा डारि तेहि
तुम पंडित गुन अयन जनि वोलौ एहि विधि वचन १०
मति नाशहु मर्य्याद मदमतवारे पंर्य जग ॥
है एह परम विषाद ज्ञाता है जानौ नहीं ११ ॥
दो॰ कुल विद्या अरु वोध के उचित न एहु व्यवहार
जो तुम कीन्हो चहत हो जार पंथ आचार १२ ॥

सुनहु सखा तुम अवला नाहीं
आपुहि कोन लखो मन माहीं
नाहिन काहू कर अपराधा
एह अनरथ निज कर हम साधा
मातु पिता कर वंचन कीन्हा
वचन कुटिल न्रप कर सुनि लीन्हा
न्रप परवश है अनुचित कीन्हा
विधि हम को तुरतहि फल दीन्हा
सव प्रकार नरश्रेय विनाशक
कियाऽनुचित दुख दोष प्रकाशक
जे तुम विप्र तनय विज्ञानी ॥
पायो नारि भाव अघ खानी

मारग तजि वन में जो जैहै ॥	सो नर कांटे न को दुख पैहै ॥
हिंसक जीव जाहि तेहि खाई	जो सुपंथ तजि कानन जाई
एहि प्रकार बहु वोधु विचारी	चले चलहु गृह मौन संभारी ॥
ह्वैहै द्विज गुरु देव प्रसादा ॥	मिटिहै नारि स्वभाव विखादा
दैव योग नव नारि स्वभावा ॥	जैहै नहिं जो कासु प्रभावा ॥
पिता करै जब तव मम व्याहा ॥	तब रमिहो नित सहित उछाहा
अहो चित्र बड दुख समुदाया ॥	कहि न जाय अतिशय बल माया
शिव आराधन जनित सोहावा	अहो मही पति नारि प्रभावा
बार बार बहु विधि समुझायो	मद न विवश मन में नहिं आयो
बल करि करि लीन्हो आलिंगन	कियो अधर पल्लव कर चुंबन
एहि विधि यद्यपि नवल किशोरी	करी तासु धर्षण नहिं थोरी
तदपि सुमेधा अति मति धीरा	करि बहु यत्न परम गंभीरा
धर्म सहित गृह में लै आयो ॥	ह्वै विप्र न कहं चरित सुनायो
सुनि अति कोप भयो मन माहीं	तुरतहि गये महीपति पाहीं ॥
सारस्वत नरपति कहं देखी ॥	बोला करि अति क्रोध विशेखी
मम सुत देखु कुटिल नर नाहा	तव अनुशासन करि निर्वाहा
कर्म जुगुप्सित में मन लायो	तेहि कर फल मम सुत एह पायो
तनय हमार भयो एह नारी ॥	नष्ट भई संतान हमारी ॥
अब नहिं पुत्र जन्म की आशा ॥	भये हमारे पितर निराशा ॥

सो॰ ॥ शिखा यज्ञ उपवीत मौंजी दंड कमण्डलू
तजि बटु धर्म पुनीत भई पुत्र की एह दशा ९३

दो॰ ब्रह्म सूत्र सावित्र व्रत जप संध्या अस्नान ॥
सब तजि अबला ह्वै गयो पावै किमि कल्यान ९४

कीन्ही संतति नष्ट हमारी ॥	गति हमारि न्रप कहहु विचारी

एहि प्रकार सुनि विप्र विलापा । भयो नृपति उर अति संतापा
सीमंतिनि कर परम प्रभावा ॥ लखि नरेश अति विस्मय पावा
राजा सब ऋषि राज बुलाये ॥ पूजि भली विधि वचन सुनाये
जेहि प्रकार तजि कामिनि भावा । पुरुष होहि एहु नाथ प्रभावा
करहु वेगि प्रभु तौन उपाई ॥ मम दुर्मति भव कोप विहाई
ऋषय कह्यो सुनिये नरपाला । ऐसो को समरथ एहि काला
गिरिजा शंभु समीहित जोई । तेहि अन्यथा करै किमि कोई
तासु भक्त संकल्प उदारा ॥ को जग में भयो मेटन हारा ॥

दो॰ ॥ भरद्वाज मुनि राज की करि विनती महिनाथ ॥
हो द्विज वर हो द्विज तनय लै लीन्हे नृप साथ २५

गयो भवानी भवन नरेशा ॥ भरद्वाज मुनिजस उपदेशा ॥
निशिदिन श्री गिरिजा पद सेवा करहिं सप्रेम अचल नरदेवा
तजि दीन्हो भोजन महिपाला गृहण किये वर नेम विशाला
पूजा जाप कबहुं पुनि ध्याना ॥ कबहूं पाठ विनय विधि नाना
बार बार करि दंड प्रनामा ॥ एहि विधि वीती तीनि त्रियामा
नरपति की लखि भक्ति घनेरी पूजा अरु विनती बहुतेरी ॥
ह्वै प्रसन्न निज रूप देखावा ॥ कोटि कलाधर सम छवि छावा
कह्यो देवि नरपति कह चहहू ॥ आपन अभिमत हम सन कहहू

सो॰ देवि देहु वरदान पुरुष होय द्विज तनय जिमि ॥
सुनु महिपाल सुजान दुर्घट भाषहु वंचन तुम २६
कर्म शुभाशुभ जोय हमरे भक्तन को कियो ॥ ॥
सो अन्यथा न होय यत्न करै बहु कल्प लौं २७

सुनि नरनाह कही एह बानी सुनु वरदायनि मातु सयानी
द्विज वर के एह एक कुमारा ॥ देखि दशा तेहि शोच अपारा

जैसे सुअन विना तेहि को दुख
मिटै कौनि विधि द्विज पावै सुख
सुनु महीपाल प्रसाद हमारा
ह्वै है तेहि कें और कुमारा ॥
विद्या गुन संपन्न सुजाना ॥
दशौ आयु उर ज्ञाननिधाना
सामवती एह विप्र कुमारी ॥
होय सुमेधा की प्रिय नारी ॥
एहि विधि दै गिरिजा वरदाना
तुरंतहि ह्वै गई अंतर्ध्याना ॥
नृप भूसुर निज २ ग्रह जाई
गिरिजा ११ पूजा कीन्हो हर्षाई
सारस्वत पुनि देवि प्रभावा
गुन मंदिर दूसर सुत पावा
भयो सुमेधा केर विवाहा ॥
सामवती सह सहित उछाहा
देवि प्रसाद लह्यो संयोगा
भोगे वहुत काल वर भोगा ॥

दो॰ ॥ नृपति प्रिया सीमंतिनी तासु प्रभाव अपार ॥
मुनिवर मैं वरनन कियो शिव महिमा विस्तार ९७
सो॰ ॥ कहौं वहुरि मैं गाय शिव भक्तन को शुभ चरित
सुनि मंगल सरसाय अति प्रभाव विस्मय जनक ९८

इति श्री मत्परम हंस परिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी राम कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाशमार्गे सीमंतिनी प्रभाव प्रकाशन परो नवमो विश्रामः ९

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः अथ दशमो विश्रामः

दो॰ ॥ अति विचित्र शंकर चरित अरु महिमा विस्तार
शिव भक्तन की चरित पुनि तिमि पावन अघहार १

स्वर्ग मुक्ति कर साधन जोई
मुनि नायक वरनत हैं सोई
पुरी अवंती नाम सुहाई ॥
तहां वसै मंदर द्विज राई
अति लंपट धन संग्रह कारी
नारी वश विषई अति भारी
त्यागि दियो संध्या अस्नाना
प्रिय सुगंध भूषण परिधाना
कुस्त्री सक्त कुमारग गामी
रहो अजामिल को अनुगामी

गनिका एक पिंगला नामा ॥ मंदर वसहि सदा तेहि धामा ॥
इंद्रीगन परवश द्विज मंदर ॥ रमत रहै तेहि संग निशिवासर ॥
एक समय बैठे ग्रह द्वारा ॥ तहं शिव योगि ऋषभ पगु धारा ॥
मानहु तिनकर सुकृत सोहावा ॥ शिव योगी स्वरूप धरि आवा ॥
देखि प्रिया प्रीतम हर्षाने ॥ करि प्रणिपात विविधि सन्माने ॥
प्रीति सहित ग्रह में ले आये ॥ सिंहासन पर छौम विछाये ॥
चरन धोय आसन बैठायो ॥ चरनोदक निज सीस चढ़ायो ॥
स्वागत भाखि अर्घ पुनि दीन्हा ॥ विधि समेत बहु पूजन कीन्हा ॥
मधुर रूचिर भोजन करवायो ॥ अति सुगंध मुख वास खवायो ॥

सो॰ ॥ करवाई तब सयन पुनि मंदर अरु पिंगला
कहि२ द्वौ मृदु वयन लगे पाद सेवा करन २ ॥

दो॰ दैव योग अति भक्ति सों करि सेवा मन लाय ॥
मन प्रसन्न करि ऋषभ को दीन्हो पलंग सोवाय ३

एहि प्रकार सो रयनि गंवाई ॥ प्रात होत मुनि गे हर्षाई ॥
एहि विधि ते द्वौ रहहिं सप्रीती ॥ बहु रहु गयो काल बहु वीती ॥
छूटि गयो पुनि विप्र शरीरा ॥ कछु दिन पर गनिका मति धीरा ॥
तजी देह पाई तिन जो गति ॥ सुनहु ताहि मुनिराज महामति ॥
दाशारण संज्ञा वर देशा ॥ वज्रबाहु तहं रहा नरेशा ॥
सुमती नाम तासु पटरानी ॥ न्रपति प्रिया अति चतुर सयानी ॥
मंदर विप्र देह जब त्यागी ॥ तासु गर्भ आयो वड भागी ॥
गर्भ जनित अति मान वड़ाई ॥ न्रप सनेह की लखि सरसाई ॥
सहि न गयो तेहि कर उत्साहा ॥ सौतिन के उर दारुन दाहा ॥
गर्भ नाश हित तिन अघ कीन्हा ॥ रानी कहं छल करि विष दीन्हा ॥

दो॰ विन जाने खायो गरल तदपि गयो न शरीर ॥

दैव योग जीवत रही तन वाढी अति पीर॥ ५॥

मरन सरिस तेहि दुख वहु पायो। समय पाय वालक एक जायो।
विषवश रानी तन वहु पीरा। फूटि गयो सव रुचिर शरीरा।
तैसेइ नृपसुत केर शरीरा। व्रणमय अंग अतिशय तन पीरा।
जाया पुत्र दुखी अति देखी। करवायो नृप यत्न विशेखी
वैदन कीन्हे विविध उपाया। तदपि गयो नहिं रोग निकाया।
राति दिवस ह्वै नींद विहीना। परम दुखी आकुल अति दीना।
वीति गये एहि विधि कछु मासा। भयो न जननी सुअन सुपासा।
मृतक समान दुनहु तन धारी॥ तिन्हहि देखि सव लोग दुखारी
दशा देखि नृप कियो विचारा। मम जाया पुनि पुत्र हमारा।
नरक त्यागि जनु मम गृह आये। निरय भोग सम वहु दुख पाये
व्रण पीडित अति रोदन करहीं। सम निद्रा निशिदिन परहरहीं
नहिँ जीवहिँ नहिँ मरहिँ अभागी। निज कृत पाप जनित दुख भागी
इन पापिन को करव उपाया॥ मिटिहि जौन विधि दुख समुदाया।
तिनकर त्याग सुखद अनुमाना। एह निश्चय नरपति उर ठाना।
सौतिन कर नृप नेह संभारे॥ तिन के सुत नृप कहँ अति प्यारे
महिपति तुरतहि सूत वोलाई। गुप्त कह्यो तेहि को समुझाई
सुत रानी द्वौ रथ वैठारी॥ तजहु जहाँ पावहु वन भारी॥
जेहि प्रकार नृप आयसु दीन्हा। नरपति सूत तथा सव कीन्हा
सूत गयो रानिहि जव त्यागी॥ क्षुधा तृषा अतिशय तहँ लागी
देह व्यथा कछु कहि नहिँ जाई। भयो त्याग दुख अति अधिकाई
चली लिये वालक निज गोदा॥ पद २ गिरत दुखित गत मोदा।
नयन सजल अरु लेहि उसासा। वन जीवन की मन अति त्रासा।
कहुँ कंटक वेधत सव अंगा॥ वाघ शब्द सुनि धीरज भंगा।

कहूं आय सर्प न तेहि घेरा ॥	दियो पिशाचन दुख बहुतेरा
बहु निशाचर अरु बेताला ॥	कहूं ताहि भय दियो कराला
अति तीखे क्षुर धार समाना	पग फूटैं लग २ पाखाना

सो॰॥ गिरत परत नृप नारि महाघोर वन में भ्रमत
बहुरि कर्म अनुसारि वंणिगन को मारग लह्यो ५

गोवाजी नर सेवित जोई ॥	गहि लीन्हो तेहि मारग सोई
बहुत यत्न करि अरु श्रम भूरी	वणिग नगर देखा चलि दूरी
अति शोभित जहं बहु नर नारी	विचरहिं प्रमुदित सकल सुखारी
वैश्य धनी पद्माकर नामा ॥	नगराधीश रहा गुण धामा
पद्माकर दासी लखि पाई	नृपगृहणी के ढिग चलि आई
चरित सकल जाना तेहि केरा ॥	भई दया उर प्रेम घनेरा ॥
नगराधीश तीर चलि आई	रानी को सब कथा सुनाई ॥
नगरनाथ निज निकट बोलायो	तासु कष्ट लखि अति दुख पायो

सो॰ रहसि बहुरि लेजाय पूछा नृपतिअ को चरित,
रानी दई सुनाय सकल अवस्था आपनी ६॥

अहो कष्ट भामिनि अति पायो	मृदुल वचन कहि शोच नशायो
निज समीप इक गृह दीन्हा	सेवा को उपाय सब कीन्हा ॥
जाना तेहि निज मातु समाना	देहि उचित भोजन परिधाना
करहिं यत्न रक्षा बहुतेरी ॥	रोग गयो नहिं पीर घनेरी
बैदन कीन्हों यत्न अपारा ॥	कछु दिन बीते नृपति कुमारा
निज प्रारब्ध विवश मरि गयऊ	रानिहि महा शोच तब भयऊ
मूर्छित परी धरनि विलखाई	गज भग्न जिमि बेलि सोहाई
नयन बहे आसुन की धारा ॥	रही नाहिं तन बसन संभारा
पद्माकर नारिन समुझायो	प्रीति सहित गहि भुजा उठायो

अतिदुख लागी करन विलापा । कहि २ यहि विधि वचन कलापा ।
तात तात हा पुत्र हमारे ॥ हा मम प्राणन के रखवारे ॥
अहह तात आनंद विधायक । हा न्रपकुल पूरन निशिनायक ।
दूरि कुटुंबी बंधु हमारे ॥ तुमही रहे प्राण रखवारे ॥
दीन अनाथ जननि कहं त्यागी । कहां गये न्रपसुत बड भागी ॥

दो॰ इत्यादिक बहु दीनतर वचन कहे बिलखाय ॥
द्रवत हृदय सुनि कोउ नहिं सकै तासि समुझाय ७

सो॰ रानिहि शोच विशाल ऋषभदेव शिव योगिवर
आय गये तत्काल कह्यो प्रथम जिन को चरित ८॥

विधिवत् पूजन कीन्ह यथा करतिन को जबहि
न्रप वनिता लखि दीन शिव योगी बोलत भये ९

वृथा शोच केहि कारण करहू । भामिनि मूढबुद्धि परिहरहू ।
कासु जन्म पुनि कासु विनाशा । होत भयो तुम करहु प्रकाशा ।
जीव सदा चेतन अविकारी । तासु न नाश कबहुं न्रप नारी ।
देहादिक जल फेन समाना । क्षणभंगुर जग में सब जाना ।
कबहूं प्रगट होंहि जग माहीं । काल पाय पुनि कबहूं बिलाहीं ।
बुद्बुद सरस सदा तन एहा ॥ नष्ट होहि नहिं कछु संदेहा ॥
रहा शोक अवसर कछु नाहीं । बुधजन नहिं शोचहिं एहि माहीं ।
त्रिगुण रचित सब भूत पसारा । भरमत रहहिं कर्म अनुसारा ।
काल विवश खैंचे सब फिरहीं । सयन वासना महं सब करहीं ।
गुन त्रय माया के उपजाये ॥ गुणमय सकल देह न्रप जाये ॥
सत्तगुन ह्वाहि देवतन पावै ॥ रज सों मनुज योनि में आवै ॥
तम सों तिर्यग्योनि सयानी ॥ निज वासना विवश अज्ञानी ॥

सो॰ ॥ भामिनि एहि संसार कर्म बंध वश जीव सब ॥

पावहिं गति विस्तार दुर्विभाव्य दुख सुख मई १०
लहहिं विपर्य्यय सोय कल्पायुष जे देव वर ॥
बहुत रोग बश जोय मनुजन की तहं का कथा ११

देह हेतु कालहि कोउ मानहिं कोई कर्म कोइ गुन जानहीं ॥
काल कर्म अरु गुन आधीना ॥ पंचरचित एहि देह मलीना
जन्म देखि बुध सुख नहिं मानहिं मृतलखि शोच नहीं उर आनहिं
जो अव्यक्त रूप भगवाना ॥ प्रगट होंहि तिहि सो जग जाना
पुनि ताही में लय ह्वै जाई ॥ मध्य व्यक्त इव जग दर्शाई
जिमि बुद्बुद जल में प्रगटाहीं बहुरि वारि महं सकल बिलाहीं
गर्भ मध्य जब जीव समाना ॥ लहहिं दुख बहु नाश समाना
गर्भहि में केते मरि जाहीं ॥ जन्म होत कोउ तुरत बिलाहीं
कोई युवा वृद्ध ह्वै कोई ॥ मरि है अवशि प्रगट भा जोई

दो॰ ॥ प्रथम जन्म कर कर्म जस जेहि प्राणी कर होय ॥
तैसोई तन लहत है तैसोइ दुख सुख सोय १२ ॥
सो॰ माया प्रबल प्रभाव मातु पिता के सुरत सों ॥
जीव सदा तन पाव पुरुष नारि अरु क्लीव को १३

सुख दुख आयु पुण्य अरु पापू धन विद्या कीरति संतापू ॥
जो ललाट महं विधि लिख दीन्हा पावहिं सकल जन्म जहं लीन्हा
काल कर्म उल्लंघ सयानी ॥ करि न जाय बरनहिं सब ज्ञानी
क्षणभंगुर पुनि लखि संसारा नृप वनिता तनु शोक अपारा
नहिं थिरता जिमि स्वप्न माहीं सांचो इन्द्रजाल जिमि नाहीं ॥
चपल मेघ जिमि निष्फल होई ॥ जानु कलेवर की गति सोई ॥
जन्म कोटि शत समुझि तुम्हारे बीते बिन परतत्त्व विचारे ॥
भयो तोहिं अतिशय भ्रम भारी लोक दशा नहिं कबहुं विचारी

काहू की तनया ह्वै जाई ॥२॥ काहू की तैं जननि कहाई॥

दो॰॥ काहू की गृहिणी भई कोटि जन्म एहि रीति॥
बहु भूम को अनुभव कियो जग में अति विपरीति १४

महि जल पावक व्योम समीरा पंच भूत सों रचित शरीरा
त्वचा मास शोणीत अरु मेदा मज्जा अस्थि भरे अति खेदा
विष्टा मूत्र केर एह भाजन॥ तन मल रूप कहहिं सब सज्जन
तव तन कोमल रूप सयानी ताहि तनय अपनो अनुमानी
वृथा कियो तुम शोच अपारा तजहु वेगि सुनि वचन हमारा
मृत्यु केर जो होत उपाया॥ नहिं सहते दुख नृप मुनि राया
विद्या तप अरु मंत्र रसायन बुधि बल मृत्यु पार को उपायन
आजु मौत के वश कोइ होई होत प्रभात मरै गो कोई ॥३॥
क्षणभंगुर एह तन अनुमानी वृथा शोच जनि करहु सयानी

सो॰॥ मौत बसै निज पास लोगन को कहु कौन सुख
नहिँ पशु लहै सुपास बैठ सन्मुख सिंह के १५
जो तैं सुमुखि सयानि जन्म मृत्यु जीतो चहसि॥
उमानाथ वरदानि मृत्युंजय की शरण गहु १६
दो॰ जन्म जरा और मृत्यु की तौलो भय मन माँहिँ॥
जौलो शंकर चरन की शरण गही नर नाहिँ १७॥

अति दाहन भामिनि संसारा अनुभव करि तहँ दुःख अपारा
मन में उपजै जबहिं विरागा ध्यावै शिवहि सहित अनुरागा
शंभु ध्यानमय सुधा सोहाई मन सों जबहि पान करि पाई
भवविषयन कर आसव जोई बहुरि तहाँ तृष्णा नहिँ होई॥
सर्व संग वर्जित जब भयेउ॥ विमल विराग परम उर छयेउ
शिवपद मगन जबहि मन होई पद निर्वाण कहावै सोई॥

तेहि ते सुनु नृप नारि सयानी । मनहि ध्यान को साधन जानी
शोक मोह मन को परिहरहू । शंभु भजन निशि वासर करहू

दो० एहि विधि कहि बानी मधुर समुझाई नृप वाम ॥
शिव योगी सन एह कह्यो करि पद पद्म प्रनाम १८

नाथ मोर बालक तन त्यागा । विगत बंधु मम परम अभागा
महारोग आतुर तन मेरा ॥ मौत बिना मोहि दुख बहुतेरा
एहि कारन मम निश्चय एहा । त्याग किये चाहौं एह देहा ॥
मरन समय भा दर्श तुम्हारा । भयो कृतारथ जन्म हमारा
एह सुनि रानी की दुखबानी । शिव योगी करुणा रस खानी
सुमिरन कीन्ह प्रथम उपकारा । मृत बालक समीप पगु धारा
पुनि कर में बिभूति लै लीन्ही । शंभु मंत्र अभिमंत्रित कीन्ही
मृत बालक मुख में मुनि डारी । प्राणदान दै किया सुखारी

सो० ॥ भयो जीव को लाह खोलि दिये लोचन तुरत
दुग्ध पान की चाह करि बालक रोदन किया १७
मृत सुत जीवन देखि पद्माकर अरु सकल जन ॥
प्रमुदित भये विशेषि सब के मन विस्मय परम १८

जननी लखि अतिशय सुख पायो। परमानंद नहिं हृदय समायो
मोद वेग उन्मत समाना ॥ किये बिमल बिभूषन तेहि नाना
नयन बही आनँद जल धारा । हृदय लगायो प्राण पिआरा
नृप महिषी अति आनँद पाई । मोद मगन तन दशा भुलाई
व्रण युत देखि पुत्र जननी तन । बढी कृपा शिव योगी के मन
दिव्य मंत्र पढि भस्म सोहाई । दुनहुं के अंग दीनि लगाई
लगत भस्म तिन को तन सुंदर । देव सरिस ह्वै गयो मनोहर
जो सुख होहि अमर पद पाई । तेहि सुख ते सौ गुन अधिकाई

जो नरपति गृहिणी मन मोदा कहि न जाय सो परम प्रमोदा
सो॰ ॥ गिरीचरन हर्षाय प्रेम मगन महिपाल तिन्ह
मुनिवर दई उठाय परितोषी प्रिय बचन कहि २१
छं॰ ॥ चिरजिन्ह्र्हु भामिनि लोक महँ नहिं जरा तव ढिग आइहै
भद्रायु सुत को नाम ह्वै है बिपुल कीरति पाइहै ॥ २ ॥
तौ लौ रहो एहि भुवन जौ लौ लहै सुत विद्या घनी ॥
पुनि शंभु गौरि प्रसाद तें एहु राज पैहै आपनी १
दो॰ ॥ शिव योगी एहि भाँति नरपति सुतहि जिआय
गये यथा रुचि देश कंहँ भस्म प्रभाव दिखाय २२
इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी राम
कृष्ण भारती शिष्य माधुवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश
मार्गे भद्रायुराख्यानं नाम दशमो विश्रामः १० ॥ शिव
श्री गणेशाय नमः श्री शंकराय नमः अथैकादशः
सो॰ ॥ हे शौनक मुनिराय गनिका वर जो पिंगला
प्रथम महिं दियो सुनाय जेहि कर तुम को चरित में १

शंभु भक्त सेवा अनुरागी ॥	गनिका प्रथम कलेवर सागी
सीमंतिनी गर्भ महँ जाई ॥	लह्यौ जन्म कन्या तन पाई
पायो कीरति मालिनि नामा	भई रूप शोभा गुण धामा ॥
राज पुत्र भद्राय सुजाना ॥	बढत भयो शुचि भानु समाना
पद्माकर को पुत्र उदारा ॥ २ ॥	रहा एक सब गुन उजिआरा
राज पुत्र संग तासु मिताई ॥	प्रीति परस्पर बरनि न जाई

दो॰ मणि भूषण मंडित उभय क्रीडहिं नित हर्षाय ॥
मुंडनादि भे दुहुन के संग २ अवसर पाय ॥ २ ॥
पद्माकर जो धर्म धुरीना ॥ २ ॥ अति उदार मन परम प्रवीना

निज बालक सम राजकुमारा । जानि करै नित प्रेम अपारा ॥
कालपाय कीन्हो उपनयना । तव सों ते दोऊ गुन अयना ॥
श्री गुरु के ढिग नित प्रति रहहीं । शुश्रूषा करि विद्या गहहीं
राजपुत्र की द्युति सरसाई ॥ जवहीं वर्ष सोरहीं आई ॥
ऋषभ देव योगी उदारा । राजपुत्र के गृह पगु धारा ॥
नृप गृहणी अरु राजकुमारा । उठे देखि मन हर्ष अपारा ॥
कीन्हो वारहिं वार प्रनामा ॥ पूजे भक्ति सहित गुन धामा
शिव योगी वैठे शुभ आसन । वोले नृप सुत सों हर्षित मन

दो॰ ॥ तात तुम्हारी कुशल है तव माता की क्षेम ॥ २ ॥
विद्या संग्रह कियो तुम पालत हो वटु नेम ॥ ३ ॥

गुरु सेवा तुम करहु कि नाहीं ॥ आपन चरित कहो मोहि पांहीं
तव गुरु सुहृद प्राण रखवारा । करहु तात सुस्मरण हमारा ॥
योगीश्वर की सुनि एह वानी ॥ विनय सहित नृप नारि सयानी
निज सुत सों प्रणाम करावा । पुनि सप्रेम एह वचन सुनावा
एह तुम्हार सुत तुम गुरु ताता । तुम एहि के पितु प्राण प्रदाता
एहि को सवन त्याग करि दीन्हा । तुम करुना करि पालन कीन्हा
करहु अनुग्रह शिष्य वनाई ॥ सन्मारग प्रभु देहु सिखाई ॥
एहि विधि जव वहु विनय सुनाई । तव शिव योगी मन हर्षाई ॥
जेहि सेवत सव दूरि कलेशा । कीन्हो सन्मारग उपदेशा ॥
नृप किशोर सुनिये सुस्थिर मन । सोई जानहु धर्म सनातन ॥
श्रुति स्मृति पुराण दर्शायो ॥ वर्णाश्रम को नेम सोहायो ॥
ताहि सदा तुम सेवन करहू ॥ सदाचार नित प्रति अनुसरहू
जग में जे दैवज्ञ सुजाना ॥ ३ ॥ सदा करहु तिन कर सन्माना
कवहुं देव गुरु की परिहेलन । मनहूं सौं ना करो तुम सज्जन ॥ तिरस्कार

गुरु गो देव विप्र सेवकाई ॥ सदा करहु तुम भक्ति दृढाई १०
सो॰ ॥ यदपि होय चांडाल अतिथि केर सन्मान तुम ॥
करौ सदा महिपाल परम धर्म एह जानि उर ॥ ४ ॥
कैसहु संकट काल तजहु सत्य नहिं कबहुं तुम ॥
मिथ्या कहहु भुआल रक्षा हित गो विप्र के ५ ॥

पर को धन औरन की नारी ॥ देव विप्र की वस्तु पिआरी ॥
मानि करहु तृणा जनि कबहूं दुर्लभ यदपि तजहु तुम तबहूं
सदाचार सत्कथा मनोरम सज्जन व्रत अरु सुंदर आगम
शुभ धर्मादिक संग्रह के हित राजपुत्र करि औ त्र्लानित ॥
वेद पाठ तर्पण अस्नाना ॥ गो सुर पूजन होम विधाना ॥
मंत्र जाप अतिथी आराधन ॥ इन में जनि आलस करु सज्जन

सो॰ ॥ द्वेष क्रोध शठ भाव असदाग्रह भय पाप शुनता
दंभहि कुटिल स्वभाव उद्वेगहि त्यागहु सदा ६ ॥

राज धर्म यद्यपि अनुसरहू ॥ वृथा जीव हिंसा जनि करहू ॥
शुष्क वैर मिथ्या परिहरहू ॥ पर निंदा कबहूं जनि करहू ॥
मृगया सुरा द्यूत अरु नारी ॥ अबला जित विषयी जे भारी ॥
पाप परायण दुर्विनई जे ॥ इन में अति सनेह नहिं कीजे
सुखी नरन सों करहु मिताई दुखित देखि करुना अधिकाई
सुकृती लखि मुदिता अनुसरहू कुमति विलोकि उपेक्षण करहू
अति श्रम निद्रा अति आहारा ॥ अति क्रीडा अति क्रोध अपारा ॥
अत्यालाप सदा नहिं करहू ॥ रती अति अतिशय परिहरहू

दो॰ अति विद्या अति निपुणता अति यश अति उत्साह ॥ ८ ॥
अति श्रद्धा धीरज स्मृति संपादहु करि चाह ॥ ७ ॥
सो॰ ॥ निज तिय मांहि सकाम अरु सरोष निज शत्रु महं

लेहु न पापी नाम होहु पुण्य महँ लोभ युत ९

पाखंडी संग द्वेष अपारा ॥ सज्जन के संग प्रीति उदारा ॥
पिशुन कथा महँ बाधि रस माना । दुष्ट मंत्र लावहु जनि ध्याना ।
जड़ जठ क्रूर पतित अरु चंचल । नास्तीक अरु धूर्त कितव खल ।
एतेन थाकुटिल नर जोई ॥ तजिओ दूरि हित तुम सोई ॥
अपनि प्रशंसा जनि मुख आनहु । लोगन को इंगित पहिचानहु ।
धन बालक अरु प्रिय परिवारा । करहु न तहँ आसक्ति अपारा ।
पतिव्रता जो नारि तुम्हारी ॥ तथा ससुर अरु जननि पिआरी ।
गुरु साधु इन सब की बानी ॥ करहु प्रतीति सदा हित जानी ।
आपनि रक्षा जानि प्रधाना ॥ सदा परायण होहु सुजाना ।
सावधान हृद ब्रत अनुसरहू । नेम भंग कबहूं जनि करहू ॥

सो॰ ॥ करहु न प्रिय विश्वास कबहूं सेवक जनन को ॥
चोरहु केर विनाश करि प्रतीति नहिं कीजिओ ॥ ८ ॥

दो॰ ॥ वृद्ध निराग स कृपण अरु अबला बाल अनाथ
बल बुधि धन अरु प्राण सों नित पालहु महि नाथ १०

निष्कुल में शंका जनि करहू । सत्य नेम तुम जनि परिहरहू
बध के योग शत्रु किन होई ॥ शरणागत मारहु नहिँ कोई
पात्र अपात्र होय नर जोई ॥ उत्तम नीच होय किन कोई ॥
यद्यपि शिर मांगे कोउ तेरा ॥ दीन्हे पै हो सुयश घनेरा ॥ ९ ॥
करि उपाय बहु यत्न घनेरा ॥ संचय करहु सुयश बहु तेरा
नृप कर पंडित कर जग मांहीं । यश के सम भूषण कोउ नांहीं
कीरति सों कमला गृह आवै ॥ पुनि कीरति बड़ पुन्य बढ़ावै
वर कीरति सों लोक विराजहिँ । जिमि चंदनि सों विधु अति राजहिँ
हय गज हेम राशि बहु तेरी ॥ पर्वत सरस रत्न की ढेरी ॥ ९ ॥

जेहि सों तव अप कीरति होई ॥ तजि अहु तरुण सम तुरत हि सोई

दो॰ मातु पिता गुरु कोप अरु सुत भूसुर अपराध ॥
धन के व्यय को सहहु नित नृप सुत बुद्धि अगाध ॥

सो॰ जेहि विधि सों द्विज राय मुदित होहिं सोइ करहु तुम
भूसुर करहिं सहाय नरपति कहँ संकट परे १२ ॥

धन आयु र्बल पुन्य उदारा कीरति सुख उत्कर्ष अपारा ॥
इन की वृद्धि होय जेहि कीन्हे सोई कर्म करि आचित दीन्हे
कार्याकार्य रूप व्यवहारा जो कछु तुम नेह्र दय विचारा
देश काल निज शक्ति विचारी यत्न सहित नित करहु सभारी
काहू को बाधा जनि करहू ॥ नित प्रति पर बाधा अपहरहू
रिपु गन दुष्ट चोर दुख दाई बाधहु सदा शक्ति सरसाई ॥
जप अरु होम तथा अस्नाना देव पितर हित कर्म विधाना
इन में आतुरता परिहरहू ॥ निद्रा भोजन में आचरहू ॥

सो॰ सत्य मनोरम होय अल्याख रपुनि अर्थ वहु ॥
वानी कहिआ सोय सठता गत चातुर्य्य मय १३ ॥

दो॰ शत्रु पक्ष अरु विपति में निर्भय होहु सुजान ॥
द्विज गुरु अरु पाप की भय करि आ गुन वान १४

जाति वंधु द्विज वालक जाया पुनि जे राउर मित्र अमाया ॥
इन सब सों समान अनुसरहू पाँक्ति भेद कवहूं जनि करहू ॥
साधु करहिं जेहि हित उपदेशा जहां होय प्रभु चरित सुदेशा
विद्या सभा धर्म विधि माहीं ॥ कवहूं होहु विमुख तुम नाहीं
जहां होय शुचि वारि निवासा करहिं जहां भूसुर कुल वासा
महादेश शंकर मय जोई ॥ करव निवास खोजि तुम सोई
कुल रागनि का गन वहुतेरी वसती जहँ विषयीजन केरी

नीचसंग अरु जे दुर्देशा ॥ः॥ तहाँ न कबहूं करहु प्रवेशा ॥

सो· त्रिभुअन नाथ दयाल एक शंभु की शरण गहि ॥
सब सुर को महिपाल करहु उपासन भक्ति सों १५

देवपर्व को पुनि सन्माना ॥ रुचि सों करत रहेउ गुनवाना
सदा शांत धर्म स्थित रहहू ॥ नित शुचि दक्ष भाव पुनि गहहू
जीतहु अरि षड्वर्ग सुजाना ॥ रहु विविक्त सेवी गुनवाना
भूसुर जे दैवज्ञ सुजाना ॥ः॥ तथा यतीजन ज्ञान निधाना
तीरथ पावन महा सरोवर पुण्य नदी अरु पावन तरुवर
धेनु वृषभ पति दैवत नारी ॥ महा रत्न निशिनाथ तमारी
होंहिं देवता जे निज धामा ॥ इनको सह सा करहु प्रनामा

दो·॥ उठि प्रभात ह्वै विमल मन करि आचमन सुजान
प्रथमहि गुरुहि प्रणाम करि करहु शंभु को ध्यान १६

श्रीपति नारायण सुरनायक चतुरानन गणनाथ विनायक
षन्मुख अरु जग जननि भवानी सरस्वती कमला जग जानी
लोकपाल मुनि ऋषि तपसाला जे पावन कीरति महिपाला
इन्हहिं सुमिरि नित प्रति गुन धामा। करहु उदित दिनमणिहि प्रनामा
पुष्प सुगंध पक्क फल पाना ॥ प्रिय नवीन भोजन गुनवाना
पहिले शिवहि निवेदन करहू बहुरि आपु सेवन अनुसरहू
जो बोलहु जो जपहु सुजाना ॥ करहु जो कछु मज्जन अरु दाना
जो तप व्रत सुमिरन आहवन् शिवहि समर्पहु सब रिपुदमन्

सो· बोलत पीवत खात सोवत देखत सुनत पुनि ॥ः॥
विहरत आवत जात सुमिरहु श्री शंकर सदा १७॥

छं·॥ वर अक्ष कंकण लसत ह्वै भुजदंड मांहि सुहावनो।
उरमाल भस्म त्रिपुंड मस्तक विमल अति मन भावनो।

शिव मंत्र राज षडाक्षरी कंह जपत अपने चित्त सों ॥
पशुनाथ पद सुमिरन करत नित रमहु तुम आनंद सों १७
सो॰ दीन्हो तात सुनाय संग्रह सब रे धर्म को ॥ २ ॥
कह्यो पुरानन गाय जेहि को बहु बिस्तार सों १८
दो॰ ॥ सब पुराण में गुप्त जो नाशक पाप अपार ॥
अति पावन अरु विजय प्रद विपति विमोचन हार १९
ऐसो शंकर वर्म अब वरनऊं तात सुजान ॥ २ ॥ २ ॥
जेहि सों एउर परम हित ह्वै है सब कल्यान २०॥
इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे सदाचारोपदेशनं नाम एकादशो विश्राम: ॥ ११ शिव ॥
श्री गणेशायनम: श्री शंकरायनम: ॥ चौपाई ॥

ऋषभ कह्यो सुनु राजकुमारा । सब रक्षा कर हेतु उदारा ॥
करि प्रनाम शिव शंभु महेशा । शिवमय वर्म करहुं उपदेशा
प्रथम पाठ विधि सुनहु सुजाना । जीतहि इंद्री गन अरु माना ॥
निज आसन विधि सहित बिछाई । बैठै थल पावन सुखदाई ॥
करहि सदाशिव को पुनि ध्याना । जो व्यापक प्रभु व्योम समाना
हृदय कमल वासी अविनाशी । परानंद चिद्घन सुखराशी
जासु तेज सब दिशि महँ छावा । मन वानी जेहि जानि न पावा ॥
आदि अंत सूक्ष्म सुखदाई । चिर ध्यावहिं एहि विधि मन लाई

दो॰ कर्म शुभाशुभ जानि तसब छुटहिं बंध बिस्तार ॥
चिदानंद में मगन मन चिर लौ भली प्रकार ॥ २ ॥
कराहिं षडक्षर मंत्र सों कर अंगन को न्यास ॥ २ ॥
सावधान शिव वर्म पुनि गावै सहित हुलास २ ॥

ॐ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः ॐ मं मध्यमाभ्यां नमः ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ यं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ॐ ॐ हृदयाय नमः ॐ नं शिरसे स्वाहा ॐ मं शिखायै वषट् ॐ शिं कवचाय हुं ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ यं अस्त्राय फट् ॥—

मैं भव रूप परो श्री शंकर ॥
दया करो करुणा मय सागर ॥
दिव्य मंत्र वर नाम तुम्हारा ॥
विश्व रूप श्रुति ज्योति स्वरूपा
सकल ठौर सो मम रखवारी ॥
अणु से अणु मूरति जेहि केरी
सो अशेष भय ते मोहि नाथा
जेहि शंकर गहि धरनि स्वरूपा
अष्ट मूर्ति शंकर त्रिपुरारी ॥
जो प्रभु जल को रूप संवारी
उमानाथ सो शंभु सुजाना ॥

सकल देव मय नाथ कृपाकर
मेरी रक्षा करहु निरंतर
नाश करौ उर पाप हमारा ॥
चिद्घन आतम आनंद रूपा
सदा करहु मद नारि पुरारी ॥
वड ते वड अरु शक्ति घनेरी
रक्षा करि नित करहिं सनाथा
धारन कीन्हो विश्व अनूपा ॥
करौ धरणि महं मम रखवारी
करत लोक जीवन सुखकारी
रक्षहु जल सों मोहि भगवाना

सो॰ प्रलय काल कहं पाय जारि देहिं जो भुअन सब ॥:॥
उर लीला सुरराय नृत्य करैं जो हर्ष युत ३ ॥ : : ॥
काल रुद्र त्रिपुरारि दावानल अरु पवन सों ॥:॥
रक्षा करहु हमारि सब भय सब संताप ते ४ ॥:॥

चपला कनक सरिस अवभासा
विद्यावर अरु अभय कुठारा
जो तत्पुरुष नाम गुन अपना
सो प्रभु पूरुव ओर हमारा ॥
नील स्वरूप धरे मुख चारी ॥

चारि वदन धर भूरि प्रकाशा
सदा धरहिं जो जग रखवारा
गौरी पति सुख धाम त्रिनयना
शंकर सदा होहु रखवारा ॥
आठ भुजा धर प्रभु मद नारी ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

अंकुश वेद कुठार कपाला ॥ डमरू शूल अक्ष गुण माला
करलीन्हे जो नाथ त्रिनयना ॥ जो अघोर वरन्यो गुन अयना
सो प्रभु सकल भीति अपहरहू दक्षिण दिशि रक्षा मम करहू
फटिक शंख कुंदेंदु प्रकाशा ॥ जासु दिव्य मूरति अवभासा ॥
अति प्रभाव हर त्र्यक्ष पुरारी ॥ चारि वदन धरति भिभुज चारी

सो॰ ॥ वेद अक्ष की माल वरदाभय धर चिन्ह वर ॥ ८ ॥
सद्योजात कृपाल पश्चिम दिशि मोहि रक्षहू ॥ ५ ॥
दो॰ ॥ अक्ष माल वर अभय पुनि धरें दकै शुभ हाथ ॥
जो सरोज किंजल्क सम गात रुचिर सुर नाथ ६ ॥
सो॰ ॥ चारि भुजा त्रय नयन वामदेव जिन सों कहैं ॥
सो शंकर गुन अयन उत्तर दिशि रक्षा करै ७ ॥
दो॰ वेद अभय अरु इष्ट पुनि अंकुश टंकै कपाल
धरे पाश डमरू विशिख शूल अक्ष की माल ८

दश भुज धर शंकर मति धीरा पंचानन वर गौर शरीरा ॥
मम ऊपर दिशि प्रभु ईशाना रक्षहु पर प्रकाश भगवाना
चंद्रमौलि शंकर असुरारी ॥ करहु सदा मम शिर रखवारी
भालु विलोचन शंभु उदारा ॥ सो प्रभु मम ललाट रखवारा
जो गिरिजा पति भग चखहारी सो करु मम लोचन रखवारी
विश्वनाथ शंकर मदनारी ॥ रक्षहु प्रभु नासिका हमारी
श्रुति वर्णित यश शंभु सुजाना करहु कर्ण रक्षा भगवाना ॥
गिरिजा नाथ कपाली नामा ॥ रक्षहु नित कपोल गुन धामा

सो॰ ॥ पंच वक्त्र गुन धाम मुख की नित रक्षा करैं ॥ ९ ॥
वेद जिह्व अस नाम सो रक्षहु रसना मेरी ॥ ६ ॥ १० ॥
कंठ गिरीश कृपाल नील कंठ रक्षा करैं ॥ ११ ॥

कर रखवार दयाल शंकर पाणि पिनाकधर १०

भुजा मूलकी मम रखवारी ॥	करिओ धर्म बाहु त्रिपुरारी
दक्षयज्ञ जिन कियो विनाशा	रक्षहु वक्षस्थल चहुं पासा
जो गिरिंद्र धन्वा श्रुति गाया	उदर मोर रक्षहु सुरराया ॥
आशुतोष पशुपति मद नारी	करहु मध्यस्थल रखवारी ॥
जो प्रभु श्री गणपति कर ताता	सो हर मम नाभी कर त्राता ॥
जो ईश्वर धूर्जटि भगवाना	मम कटि त्राता होहु सुजाना
जो कुवेर को मित्र कृपाला ॥	रक्षहु सो मम उरू दयाला ॥
जगदीश्वर जग क्षेम विधाता	सो मम होहु जानु युग त्राता
पुंगव केतु जासु वर नामू ॥	रक्षहु मम जंघा गुन धामू ॥
जो महेश सुर वंदित चरनू ॥	सो मम पद रक्षक दुख हरनू ॥

दो॰ ॥ दिन के पहिले याम में माहेश्वर भगवान ॥
रक्षहु मोहि मध्याह्न में वामदेव गुनवान ॥ ११ ॥

सो॰ जो त्र्यंबक जन पाल मेरी तीजे पहर महँ ॥
रक्षा करहु दयाल वृषभध्वज संध्या समय १२

दो॰ ॥ शशिशेखर निशि आदि में गंगाधर अधरात
मृत्युंजय सब काल में गौरी नाथ प्रभात १३ ॥

गरहू भीतर शंकर रखवारी ॥	स्थाणु नाम बाहिर त्रिपुरारी
उभय मध्य पशुपति सुरराया	मम रक्षा करिओ करि दाया
शंभु सदाशिव जन सुखदाता	सो सब ठौर होहु मम त्राता ॥
जब मैं ठाढो होहुं कृपाला ॥	तेहि छिन भुवन नाथ जन पाला
प्रथमनाथ जो प्रभु सुरनायक	चलत बार मम रक्षा दायक
जो वेदांत वेद्य सुरसांई ॥	रक्षहु बैठे मोहि गोसांई ॥
शिव अविनाशी सुगुन अपारा	सोवत समय मोर रखवारा

दो॰ नीलकंठ मम पंथ महँ श्री शंकर त्रिपुरारि
पर्वतादि दुर्गम थल न रक्षा करहिं हमारि
सो॰ ॥ जो मृगव्याध उदार शाक्र शंभु करुनायतन
होहु मोर रखवार सो वनवास प्रवास में २५

वीरभद्र वपु शंभु उदारा ॥	प्रलय काल करि क्रोध अपारा
प्रकटहिं अट्टहास विकराला	प्रचालितएहु ब्रह्मांड विशाला
रिपुदल सागर मांहि हमारा	दुर्निवार भय सों रखवारा ॥
गजरथ हय पदाति वलवाना	सहस लाख अरु अयुत प्रमाना
असोहिनि शत अतिभय दाता	आततायि जे जन सुर त्राता ॥
तिन सब कहँ मृदु परम उदारा	छेदहु प्रभु कुठारि की धारा ॥
त्रिपुर विनाशन कर त्रिशूला	सव प्रकार जग रक्षा मूला
प्रलयानल सम तेज अपारा	नाशहु सकल चोर परिवारा
शार्दूल वृक भालु कराला ॥	सिंहादिक दुर्जंतु कृपाला ॥
तव पिनाक धनु ईश सुजाना	त्रास देहु सव को भगवाना ॥

दो॰ ॥ दुष्टस्वप्न दुःशकुन पुनि दुर्गति दुर्मन भाव ॥
दुष्ट व्यसन दुर्भिक्ष वहु दुर्यश दुष्ट स्वभाव २६
सो॰ ॥ विषभय पुनि मम पाप ग्रह पीडा उत्पात सव
जगनायक संताप नाश करौ सव व्याधि मम २७

अथ सहस्राक्षमंत्र

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकल तत्वात्मकाय सकल तत्वविदूराय सकल लोकैक कर्त्रे सकल लोकैक भर्त्रे सकल लोकैक हर्त्रे सकल लोकैक गुरवे सकल लोकैक साक्षिणे सकल निगम गुह्याय सकल वरप्रदाय सकल दुरितार्तिभंजनाय सकल जगदभयंकराय शशांक शेखराय शाश्वत निजाभासा

यनिरमयायनिष्प्रपंचायनिष्कलंकायनिर्द्वंद्वायनिःसंगाय
निर्मलायनिरूपमविभवायनिराधारायनित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्ण
सच्चिदानंदाद्वयायपरमशांतप्रकाशतेजोरूपायजयजयम
हारुद्रमहारौद्रावतारमहाभैरवकालभैरवकल्पांतभैरवक
पालमालाधरखट्वांगखड्गचर्मपाशांकुशडमरूशूलचापबा
णगदाशक्तिभिंडिपालतोमरमुसलमुद्गरपाशपट्टिशपरशु
परिघभुशुंडीशतघ्नीचक्रायुधभीषणकरसहस्रमुखदंष्ट्रा
करालविकटाट्टहासविस्फारितब्रह्मांडमंडलनागेंद्रकुंडल
नागेंद्रहारनागेंद्रचर्मधरमृत्युंजयत्र्यंबकत्रिपुरांतकविरू
पाक्षविश्वेश्वरविश्वरूपवृषभवाहनविषभूषणविश्व
तोमुखसर्वतोरक्षरक्षमांज्वलज्वलमहामृत्युमपमृत्युभ
यंनाशयनाशयममशत्रूनुच्चाटयोच्चाटयशूलेनविदारय
विदारयकुठारेणभिंधिभिंधिखड्गेनछिंधिछिंधिखट्वांगेनविपोथ
यविपोथयमुसलेननिष्पेषयनिष्पेषयबाणैःसंताडयसंताडय
रक्षांसिभीषयभीषयभूतानिविद्रावयविद्रावयकूष्मांडवेतालम
रीगणब्रह्मराक्षसान्संत्रासयसंत्रासयममाभयंकुरुकुरुवित्रस्तं
मामाश्वासयाश्वासयनरकभयान्मामुद्धारयोद्धारयसंजीवयसं
जीवयक्षुत्तृड्भ्यांमामाप्याययाप्याययदुखातुरंमामानंदयानंद
यशिवकवचेनमामाच्छादयाच्छादय त्र्यंबकसदाशिवनम-
स्तेनमस्ते ॥ ——

दो॰॥ परमदिव्यएहवर्म हम तुम कहं दीन सुनाय ॥
अतिरहस्यबाधासकल तुरतहि देहि नशाय २६
शंभुकवचएहपरमसुहाई॥ धारहिजोनरवरमनलाई॥
तेहिपरशंभुअनुग्रहहोई॥ भीतिसमीपआवनहिंकाई॥

आयू जासु भई बहु छीना ॥ मृत्यु ग्रसित रोगातुर दीना ॥
ताहू को अति शय सुख होई वड़ी आयु पावै पुनि सोई ॥ २५ ॥
सब दारिद्र केरि क्षय कारी ॥ सो मांगल्य बढावनि हारी ॥
शंभु कवच धारहि जो नर वर तेहि कहँ पूजहिं औरन वहिं सुर
जे पातक उपपातक जोई ॥ मुक्त होय सब सो नर सोई ॥
अंत समय शिव वर्म प्रभावा लहहि उमापति पद मन भावा

सो॰ तुमहू धरहु सुजान श्रद्धा करि शिव कवच को ॥
लहिहो अति कल्यान अतिउत्तमा शिव वर्म एह २७

अस कहि योगीश्वर गुनवाना ॥ एक शंख अति रौद्र निधाना ॥
अरिनाशनि वर खड्ग सोहाई नृप सुत कहँ दीन्ही हर्षाई ॥
अभिमंत्रित पुनि भस्म सोहाई सब अंगन महँ दीनि लगाई
बारह सहस नाग बल जोई ॥ नृपसुत को दीन्हो पुनि सोई
भस्म प्रसाद परम बल पावा स्मरति धृति ऐश्वर्य सोहावा ॥
अति शोभित नरदेव कुमारा शारद भानु सम तेज अपारा ॥
कर जोरें बैठा गुरु आगे ॥ बोले बहुरि ऋषभ अनुरागे
तात खड्ग जो एह हम दीन्हा ॥ तपो मंत्र अनु भावित कीन्हा

सो॰ ॥ सो एहु खड्ग उदार दर्शै हो जेहि शत्रु कहँ ॥ २ ॥
देखत तीक्ष्ण धार मरिहैं जिमि नर मृत्यु लखि २०
शंख केर अति नाद जे जे सुनिहैं शत्रु तव ॥ २ ॥
गिरिहैं सहित विखाद मूर्छा खाय अचेत ह्वै २१

खड्ग शंख द्वौ दिव्य उदारा ॥ एकरिहैं रिपु सेन संहारा ॥
निज सेना के ये रखवारे ॥ तेज प्रताप बढावन हारे ॥
इन दुहु के प्रभाव नरपाला ॥ शंभु कवच के तेज विशाला
द्वादश सहस नाग बल पायो भस्म प्रभाव तेज सर सायो ॥

इन सब को तुम पाय महाबल जीतहुगे निज शत्रुनि को दल ॥
निज पितु कर सिंहासन पाई ॥ पालहुगे भूतल हरषाई ॥ २५

सो॰ ॥ एहि करि उपदेश जननि सहित भद्रायु कहँ ॥
गये यथारुचि देश वर पूजन लहि अभय इत २२

इति श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री ३ स्वामी राम कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे श्री शिव धर्म प्रकाशनं नाम द्वादशो विश्रामः ॥ १२ ॥ शिव ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः अथ त्रयोदशः

दो॰ ॥ नृप नंदन को चरित में सकल कह्यो मुनिराय ॥
सुत नारिहि तजि नृप दुखी भयो सो देहु सुनाय १

वज्रबाहु जो रह्यो नृपाला ॥ तासु शत्रु मागध महिपाला
नाम हेम रथ बाहु विशाला रणउत्कट अति तेज भुआला
लै निज साथ सेन बहु तेरी ॥ नृप कर देश लियो तेहि घेरी
मागध सेना पति बलवाना लागे करण उपद्रव नाना ॥
वसु मणि गन लूटहिं जो पावैं घरन मांहि कोउ अग्नि लगावैं
गृहण करैं कोई कन्या धन ॥ २ ॥ कोई धाय धरहिं तरुनी गन ॥
कोई गृहण करैं नर गोधन ॥ एकहि अन्न राशि कोउ भाजन
कोइ नाशहिं गृह पुर उद्याना ॥ कोउ आराम सस्य बलवाना
एहि विधि करि बहु देश विनाशा लिये धनादिक सहित हुलासा
बहुविधि करि उत्पात घनेरा ॥ वज्रबाहु कर पुर तिन घेरा ॥

दो॰ एहि प्रकार निज नगर बहु लखि पीडित निज देश ॥
समर हेतु सेना सहित निकरा प्रबल नरेश ॥ २ ॥

जे नरपति भूपाल साहायक सचिव सहित सेना के नायक
लरन लगे मागध संग जाई ॥ निज बल तेज प्रताप देखाई ॥

वज्रबाहु रथ बैठि सयाना ॥ पहिरि कवच कर गहि धनु बाना
करत भयो शर वृष्टि घनेरी ॥ मारि रिपु सेना बहुतेरी ॥ २ ॥
वज्रबाहु का देखि प्रतापू ॥ २ ॥ सब मागध सँभारि शर चापू
वेग सहित नरपति दिग जाई घेरा सब दिश शर बर्षाइ
बहुत काल करि समर अपारा कीन्हो बहु दल कर संहारा ॥
एहि प्रकार अति बल दर्शाई लही विजय शोभा अधिकाई
काहू धनु कर छेदन कीन्हा ॥ काहू ताहि विरथ करि दीन्हा ॥
एक आय सारथि संहारा ॥ ३ ॥ काहू कारो खड्ग उदारा ॥ ३ ॥

दो॰ टूटो रथ हत सारथी छिन्न खड्ग अरु चाप ॥ २ ॥
बाँधि लियो नरपाल कहँ अति दर्शाय प्रताप ३॥

सो॰ ॥ मागध अति बलवान जीत सेन सब मंत्रिगन
मुदित बजाय निशान घुसि आये सब नगर में ४

रथ गज बाजि ऊँट पशु नाना अबला गण धन बहु परिमाना
नरपति की कन्या बर दारा ॥ तथा अमित दासी परिवारा
बहु मणि भार कोश समुदाया मागध गहि लीन्हो मुनिराया
एहि प्रकार करि नगर विनाशा गोधनादि लै सहित हुलासा
वज्रबाहु कहँ रथ महँ बाँधी ॥ चले शत्रु निज कारज साधी ॥
एहि विधि भा कोलाहल भारी देश नाश आकुल नर नारी ॥
नृपकिशोर भद्रायु सुजाना ॥ सकल खबरि पाई बलवाना
सपत्नीक निज पितु कर बंधन देश विनाश सेन परिमर्द्दन
कीन्हो सिंहनाद बलवाना ॥ साथ लियो निज सखा सुजाना
महा शंख अरु खड्ग विशाला शंभुवर्म वर्मित महिपाला ॥
सखा सहित ह्वै तुरग सवारा गयो तहाँ करि वेग अपारा ॥
नगर लोग देखे तेहि जाई ॥ शत्रुजनित पीड़ा अधिकाई

एक बंधे कोई रोदत भारी ॥:॥ हतधन गोधन दुहिता नारी ॥
सूनो राज भयावन देखी ॥:॥ प्रगट भयो उर क्रोध विशेखी

दो॰॥ रिपुदल माँहिं प्रवेश करि न्रप सुत अति वलवान
निज कोदंड चढाय के वर्ष न लागे वान ॥ ५ ॥ :॥

फिरी मगध सेना तेहि देखी घेरि लियो करि क्रोध विशेखी
तिन मारे अति उल्वण वाना तन वेधित न्रप सुत वलवाना
शंभु कवच रक्षित गत पीरा ॥ रन त्यागे नहिं अति रणधीरा
यथा मत्तगज कुसुम प्रहारा सहि लीन्ही शर व्रष्टि अपारा
रथ पदाति गज तुरग सोहाये न्रप सुत कोटिन मारि गिराये
न्रप नंदन पुनि कीन्ह प्रहारा ॥ सारथि सहित एक न्रप मारा
वनिग पुत्र कहँ सूत वनाई ॥ ताहि रथ पर चढि हर्षाई ॥
रण भीतर विचरहिँ रनधीरा जिमि पंचानन म्रग कुल भीरा
एहि विधि न्रप नंदन लखि योधा धनु चढाय धाये करि क्रोधा ॥
चमूपाल ते अति वलवाना ॥ घेरत भे सव समर सुजाना

दो॰ न्रप सुत देख्यो शत्रु वल घेरि लियो मोहि आय ॥
तिन सव के सन्मुख भयो निज पौरुष दर्शाय ६ ॥
सो॰॥ दारुन परम कराल काल जीभ सम चपल अति
मनहुं हुताशन ज्वाल दर्शाई निज खड्ग वर ७ ॥

देखी जिन २ खड्ग उदारा ॥:॥ तत्प्रभाव लहि मोह अपारा
निहत भये वहुरिपु समुदाई यथा कीट पावक ढिग जाई ॥
सकल सेन कर घात विचारा महाशंख वर राज कुमारा ॥
वहुरि महाभुज दीन वजाई सव दिशि रही तासु ध्वनि छाई
जे गज के जे तुरग सवारा ॥ जे रथ पर वैठे वरि आरा ॥
ते सव सुनत महाध्वनि भारी गिरे धरन तन दशा विसारी ॥

मृतसमान वह सेन निहारी । नहिं मारी एए धर्म विचारी ॥
पितु समीप तुरतहि चलि आयो । रिपुबंधन सें ताहि छुडायो ॥

दो॰ ॥ नृपगृह एणी गुरयोषिता अरु मंत्रिन की नारि ॥
बालक बाला धेनु धन सब कर बंध निवारि ॥ ८ ॥

आत्माश्वास सबन कर कीन्हा । सब कहँ अभयदान तेहि दीन्हा ॥
बहुरि शत्रुगन की बर नारी ॥ तथा मत्तगज गिरि अनुहारी ॥
वाजि पवन मन वेग अपारा ॥ कंचन स्यंदन रुचिर उदारा ॥
दासी चंद्राननि बहुतेरी ॥ रिपुगन की बर वस्तु घनेरी ॥
वेग सहित एह सब हरि लायो । मागधेश के ढिग तब आयो ॥
बांधि लियो तेहि को करि क्रोधा । मंत्री सेनापति बर योधा ॥
बज्रबाहु सेन नृप बलवाना ॥ तथा मंत्रिगन परम सुजाना ॥
प्रथम भग्न ह्वै सब दिशि धाये । नृपसुत विजय देखि पुनि आये ॥

दो॰ ॥ देख्यो राजकुमार बल विस्मय भयो अपार ॥
आयो है कोई देव बर मन कीन्हो निर्द्धार ९ ॥

सो॰ अहो हमारो भाग उदय भयो तप केर फल ॥
कहैं सहित अनुराग नृपसुत महिमा गुन कथन १० ॥

एहु कोउ प्रबल वीर बर आयो । मृतसम हम कहँ बहुरि जिवायो ॥
योगसिद्ध तपसि ह्वै सुजाना । अथवा एहु कोई अमर प्रधाना ॥
इन कर है अति बल मन भायो । कियो अमानुष कर्म सोहायो ॥
इन की जग ठकुराथिनि माता । पिता शंभु जग क्षेम विधाता ॥
जेहि ते इन की शक्ति अपारा । नव अक्षौहिणि दल संहारा ॥
एहि विधि अति अचरज बहुताई । परम हर्ष नहिं हृदय समाई ॥
करहिं परस्पर बहुत बड़ाई ॥ पूछहिं तासु चरित शिर नाई ॥
नृपसुत आपुहि नहिं प्रगटायो । बहुरि पिता के तीर सिधायो ॥

सो॰ विस्मय हर्ष अपार वज्रबाहु के उर भयो ॥ ॰॰॰ ॥
आनंद जल की धार ह्वै नयनन न्रप के श्रवै ११ ॥

दो॰ न्रप सुत कियो प्रनाम तब निज पितु कहँ शिर नाय
न्रपति प्रेम कातर हृदय लियो ताहि उर लाय १२ ॥

को तुम तात सुमति गंभीरा ॥ | कै गंधर्व देव नर बीरा ॥ ॰॰ ॥
कौनि मातु को जनक उदारा ॥ | कौन देश कहु नाम तुम्हारा ॥
रिपु गन परबश हम सुख हीना | म्रतसमान हत तेज मलीना ॥
कौन हेतु करुना सरसाई ॥ | सपत्नी कमोहि लियो छुडाई
धीरज तेज प्रताप सोहावा ॥ | बल उत्कर्ष कहां तुम पावा ॥
मनुज सुरासुर त्रिभुअन माँही | जीति सकै कोहि को तुम नाहीं ॥
बरु मम जन्म सहस चलि जाहीं | तुम सों कबहुँ उरिन हम नाहीं
पुत्र दार पुर राज बिहाई ॥ ॰ ॥ | तब दिशि हृदय प्रेम सरसाई
हमरे प्रानन के रखवारे ॥ ॰ ॥ | तेहि कारन मम प्राण पियारे
मम तीय जीवन तव आधीना | सकल कहौ निज चरित्र प्रवीना
एहि प्रकार पूछा नरनाहा ॥ | न्रप सुत बोला सहित उछाहा
वैश्य नाथ कर तनय पिआरा | सुनय नाम एह सखा हमारा ॥
इनके ग्रह में जननि समेता | बास करौं निज कृपानिकेता ॥

सो॰ ॥ भद्रायु मम नाम पुनि कहिहौं आपन चरित ॥
जाहु नगर गुन धाम निज दारा प्रिय सुहृद सह १३
ह्वै है तव कल्यान शत्रुन को भय जानि करी ॥ ॰ ॥
सुख बिहरहु गुनवान न्रप सिंहासन बैठ के १४

जनि छोडहु इन को रिपु दमनू | जौलौं होय न मम आगमनू
जैहौं भवन भई मोहि देरी ॥ | तहाँ होत ह्वै है अबसेरी ॥ ॰ ॥
एहि विधि न्रप सन राजकुमारा | बिदा मांगि निज ग्रह पगु धारा

जननीकहँ सब चरित सुनायो । हर्ष वारि चख हृदय लगायो ॥
पद्माकर पुनि हृदय लगावा । पूजा परम प्रेम उर छावा ॥२॥
प्रमुदित वज्रबाहु नरपाला । प्रविशे पुनि निज भवन निहाला ॥
सुत वनिता सह कियो निवासा । सचिव सहित मन परम हुलाशा ॥
सो रजनी गत भयो विहाना । ऋषभ योगिवर परम सुजाना ॥

सो॰॥ गो निषधेश्वर धाम चंद्रांगद जिन सो कहैं
कह्यो अमानुष काम भद्रायु कर जन्म पुनि २५
दो॰॥ सब चरित्र कहि न्रपति कहँ एह अनुशासन दीन
निज तनया तेहि देहु तुम सुनि न्रप शिर धरि लीन २६

प्रेम सहित एहि विधि समुझाई । योगीश्वर गवने हर्षाई ॥२॥
सीमंतिनि पति परम उदारा । बोलि पठायो राजकुमारा ॥
लगन शोधि पुनि सहित उछाहा । न्रप सुत को करि दीन्ह विवाहा ॥
कीर्त्तिमालिनी जो न्रप कन्या ॥ वय माधुर्य्य रूप गुन धन्या ॥
हेम सिंहासन उभय विराजे ॥ दिव्य वसन भूषन छवि छाजे ॥
वर पत्नी सोहें तहँ कैसे ॥२॥ विधु रोहिणि द्वौ सुंदर जैसे ॥
वज्रबाहु कहँ नेवत पठायो ॥२॥ ब्याह भये पीछे सोउ आयो ॥२॥
निषधेश्वर आगे ह्वै लीन्हा । भवन लाय पूजन बहु कीन्हा ॥

सो॰॥ न्रप किशोर शिर नाय वज्रबाहु चरनन परे ॥२॥
बल करि लियो उठाय हृदय लगायो प्रीति अति २७

पुनि बोला निषधेश्वर पांहीं । इन कौ मैं जानत हौं नांहीं ॥२॥
निषधाधिप एह तनया भ्राता । है हमरे प्राणन कर दाता ।
शत्रु विनाशक अति बलवाना । महा वीर अरु परम सुजाना ॥
एहि की कुल उत्पत्ति सोहाई । मोहि कृपा करि देहु सुनाई ॥
एहि विधि पूछा जब नरनाहा । निषधेश्वर तब सहित उछाहा ।

भुजगाहि ताहि रहसि बैठारा। विहँसत मुख एह वचन उचारा।
एह तुम्हार है राज कुमारा॥ रहा रोग व्याकुल एहु बारा॥
तासु मातु पुनि रोग दुखारी॥ उभय तजे तुम विपिनि मँझारी

दो॰॥ रानी वन भर मत फिरी अति कलेश दुख दीन॥
वैश्याधिप ताहि को वहुरि सब विधि पालन कीन ९८

दैव योग एह मरो कुमारा॥ योगी नाथ ऋषभ पगुधारा
रानी को दुख शोच मिटाई॥ मुनिवर एहि को दियो जिआई
योगी राज प्रभाव उदारा॥२॥ लहो जननि सुत रूप अपारा
तिनही खड्ग शंख वर दीन्हा जेहि वल रिपु दल इन क्षय कीन्हा
वारह सहस नाग वल धारी॥ शंभु चर्म इन की रखवारी॥
विद्या सकल जान नर नाहा॥ मम दुहिता संग भयो विवाहा
जननी सहु अवसहित उछाहू इन कहँ निज मंदिर लै जाहू॥
इन पर हैं प्रसन्न भगवाना पावहुगे अतिशय कल्याना

सो॰॥ एह सव चरित सुनाय श्री निषधेश्वर न्रपति वर
महिषी दई दिखाय वैठी जो रनि वास महँ॥९९॥

सव सुनि लखि वालक प्रिय नारि वाढी ताहि लाज अति भारी॥
वनो मूढता वस जो काजा॥ कीन्ही निज निंदा वहु राजा॥
उभय दरश वाढो अति मोदा॥ लह्यो परम आश्चर्य्य प्रमोदा
पुलक शरीर न कछु कहि आयो महिषी वालक हृदय लगायो
वहुत भाँति पुनि भा सत्कारा॥ भई रुचिर भोजन जेवनारा
निज महिषी सुत वधू समेता विदा भये न्रप गये निकेता॥
न्रप किशोर जव मंदिर आयो पुर ग्रह सव लोगन सुख पायो
प्रमुदित सव परिवार सप्रीती एह विधि गयो काल कछु वीती
वज्रबाहु सुरलोक सिधायो॥ न्रप सुत न्रप सिंहासन पायो॥

करन लगे प्रथिवी कर पालन	भयो न तोहि समान महिपालन
मागधेश नृप बंध निवारी ॥	ब्रह्म ऋषिन के दिग बैठारी ॥
तेहि सन संधि मिलाप हृढाई	मगध देश को दियो पठाई ॥

छं॰ ॥ शिव योगि वर की एक निशि पूजा जो विधि सों वनि परी ॥
मुनि राज तासु प्रभाव नृप सुत केरि सव आपद टरी ॥२॥
पायो नृपासन तेज पौरुष वढत भा दिन प्रति नयो ॥२॥
निषधेश कन्या सहित प्रमुदित भोग सुख पावत भयो॥१
इति श्री मत्परम हंस परि व्राज कार्य्य श्री ७ स्वामी राम कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे भद्रायु विजय विवाह प्रकाशन परो त्रयोदशो विश्रामः १३

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः ॥ अथ चतुर्दशः ॥
सो॰ पितु सिंहासन पाय भा भद्रायु नरेश जव ॥२॥
एक दिवस मुनि राय प्रिया सहित वन महं गयो १॥

जहं अशोक विकसत अनुकूला	नव पल्लव रुचि सुंदर फूला॥
मल्लि खंड कुसुमित अति नीके	गूंजहिं भ्रमर भावते जी के ॥
नव केसर सौरभ जहं आवे ॥	भोगि हृदय उत्साह वढावे ॥
वर अशोक तरु वर की माला	श्यामल छाया सघन तमाला
माधवि लता भवन जहं सुंदर	पुष्प भार महि झुकत मनोहर
अरुन पत्र वर वौर विशाला ॥	अति शोभित जहं विटप रसाला
वन पुन्नाग परम रस खानी॥	आवति जहं वर कोकिल वानी
ऋतु वसंत लखि राजकुमारा	कियो नारि सह विपिन विहारा
कछुक दूर पर वाघ कराला ॥	आगे देखत भा नरपाला ॥
सो हि ज दंपति पाछे धायो ॥	तिन दूनहुं वहु रुदन मचायो

दो॰ ॥ पाहि २ महाराज नृप करुना सिंधु भुआल ॥

हमरे भक्षण करन हित शार्दूल विकराल ॥ २ ॥

आवत सकल प्राणभय कारी । गर्जत घोर महारव भारी ॥
जेहि विधि खावन देह हमारी । करहु तथा हमरी रखवारी ॥
एहि प्रकार सुनि विप्र गोहारी । चाप लियो नरपति भयहारी
तौलौ द्विज गृहिणी कहं आई । पकरिसि यो मृगपति दुखदाई
हा प्रीतम मम परम सुजाना । हा जगपति शंकर भगवाना
द्विज नारी बहु कीन्ह पुकारा । बहुत बाण नृप किये प्रहारा
गनैन कछु मृगराज उदारा । गिरिवर यथा वृष्टि जलधारा
मृगपति बार बांक नहिं भयउ । विप्रवधू कहं सो लै गयउ ॥
भूसुर उर भा अति संतापू ॥ करन लाग एहि भांति विलापू
हा पति दैवत प्राण पिआरी । मोहि त्यागि प्रिय परम दुखारी
जो तुम परम लोक पगु धारा ॥ केहि विधि रहिहैं प्राण हमारा
महा धनुष नृप तव कहं भयऊ । बारह सहस नाग बल गयऊ
कहां गये वे अस्त्र तुम्हारे ॥ वनचर देखि शक्ति सब हारे

दो० ॥ शास्त्र खड्ग तव कहं गयो धनुर्वेद को ज्ञान ॥
परम प्रभाव प्रताप तव पुनि बल अमित प्रमान ३

जो न रहा तव तेज अपारा ॥ विफल भयो सब आजु तुम्हारा
वनचर क्षुद्र जीव जेहि कारन । तुमसों है नहिं सको निवारन
दुखी प्रजा रक्षा जिमि होई ॥ परम धर्म नरपति कर सोई
निज कुल धर्म न तुम निर्बाहा ॥ वृथा तोर जीवन नरनाहा ॥
शरणागत रक्षा नृप करहीं । निज धन प्राणनहूं परिहरहीं
तेहि विहीन जो नृपति अयाना । सो नृप जीवत मृतक समाना
दान विहीन जिअत धनवाना । धिग जीवन सो मरन समाना
करहि न जो आरत रखवारी । तेहि गृहस्थ सन भला भिखारी

दो॰ ॥ वरविष भोजन न्रपति कहं उत्तम अग्नि प्रवेश ॥
रक्षा दीन अनाथ की नहिं करि सकै नरेश ४ ॥ ८ ॥

सो॰ कियो विलाप अपार न्रप निंदा एहि भांति द्विज
लागो करन विचार शोच भयो न्रप हृदय अति ५

अहो नष्ट पौरुष मम भयेऊ दैव विपर्य्यय मम ह्वै गयेऊ ॥
नाश भई कीरति उजि आरी ॥ लगो मोहि पातक अति भारी
धर्म कुलोचित नष्ट हमारा ॥ भयो प्रगट दुर्भाग अपारा ॥
निश्चय मम संपति क्षय ह्वै है आयू सहित राज मम जैहै ॥
आयू पुत्र भोग धन दारा ॥ दैव योग संपति परिवारा ॥
उदय होंहि छिन महं सब आई छिन महं पुनि सब जांहि विलाई
तेहि ते लखि नश्वर संसारा ॥ हरिहैं द्विज कर शोच अपारा
द्विज हित अपन प्राण परिहरिहैं जेहि विधि सुखी होव सोइ करिहैं
एह निश्चय निज मन ठहरायो पद गहि द्विजवर कहं समुझायो
मो पर विप्र क्रृपा अब करहू ॥ ज्ञानधाम शोक परिहरहू ॥
लेहु विप्र धन रत्न अपारा ॥ एह रानी एहु राज हमारा ॥
तथा मोर तन तव आधीना ॥ मांगहु जो रुचि होय प्रवीना
धर्म नीति करुना रस सानी ॥ सुनि बोला द्विजवर एह बानी
नयन हीन दर्पण केहि काजा ॥ पुस्तक जिमि मूढहि महराजा
धवल धाम भिक्षू कहं जैसे ॥ प्रिया हीन हम कहं सब तैसे ॥
भोगे नाहिं यथा रुचि भोगा ॥ भयो मोहि प्रिय नारि वियोगा
कियो चहौ जो मम दुख दूरी ॥ तौ न्रप देहु प्रिया निज रूरी ॥
गुरु अनुशासन बिन नहिं विचारी बोलहु नहिं द्विज धर्म सँभारी
परदारा अभिमर्ष गोसाई सुगति सुकीरति देहि नशाई

दो॰ ॥ दाता हैं गज बाजि के देहिं राज धन प्रान ॥ ९ ॥

ग्रहणी दाता नहिं सुने करि देखहु अनुमान ॥ ८८ ॥
परदारा के भोग में द्विज वर जो अघ होय ॥ ८९ ॥
सो निः क्रांति कीन्हो बहुरि मेंटि सकै नाहिं कोय ७ ॥

सुनि भूसुर एह उत्तर बखाना । तप प्रभाव का तुम नहिं जाना
ब्रह्म घात अघ नृप किन होई ॥ सुरापान कर पातक जोई ॥
तप बल मोहि तिन कर भय नांहीं । परदारा केहि लेखे माहीं ॥ ८ ॥
अपनि प्रतिज्ञा जनि परिहरहू । तुरतहिं नारि दान मोहि करहू
नतरु नर्क ह्वै है नरपाला ॥ तुमने जो न धर्म प्रतिपाला ॥
विप्र गिरा सुनि नृप भय पायो । निज मन में एहि विधि ठहरायो
द्विज रक्षा जो नहिं वनि आई । तौ ह्वै है पातक आधिकाई ॥
एहि कारन देहौं निज दारा ॥ तरि जैहौं में पाप अपारा ॥
पुनि पावक महं एह तन जारी । पालहुंगो कीरति उजिआरी
एहि प्रकार निज मनहि दृढाई । चितारोपि तहं पावक लाई ॥
बहुरि बोलि द्विज नृपति सुजाना । करि दीन्हो महिषी कर दाना ॥
कियो निमज्जन नृप गुन धामा । देवन कहं पुनि कीन्ह प्रनामा ॥

दो० ॥ अग्नि प्रदक्षिण तीनि करि कियो शंभु को ध्यान ॥
गिरो चहै ज्यों अनल महं नृप शिव भक्त सुजान ८
सो० ॥ त्यों प्रगटे भगवान नरपति को वारन कियो ॥
देखा नृपति सुजान पंचानन विश्वेश कहं ९ ॥

कोटि भानु सम तेज अपारा ॥ गौर मृणाल गात उजिआरा
नैन विशाल तीनि छवि देहीं । नाग विभूषन मन हरि लेहीं
चंद्रकला अवतंश कृपाला । पीत जटा शिर रुचिर विशाला
तेहि पर गंग तरंग सोहाई ॥ रूप मनोहर बरनि न जाई ॥
अति शोभित गज चर्म सोहावा । नाग किरीट परम छवि छावा

शूल[१] पिनाक[२] अभय[३] वर[४] दाना ॥	मृग[५] कुठार[६] अरु चर्म[७] कृपाना[८]
शुभ खट्वांग[९] पद्म[१०] कर सोहैं	वृषभारूढ मुनिवर मन मोहैं
नीलकंठ प्रभु दीन दयाला ॥	सरं। नयन सन्मुख महिपाला
देव कुसुम वर्षा नभ करहीं ॥	ऋषि मुनिवर जय २ उच्चरहीं
बाजहिं रुचिर देव सहनाई	नाचहिं देव वधू कल गाई ॥
लोकपाल मघवादि सयाने	शंकर रुख देखहिं सचुपाने ॥
चारिहु दिशि सनकादि सुजाना	देव ब्रह्म ऋषि ज्ञान निधाना
सबके मध्य सोह करुनाकर	उमा सहित त्रिभुअनपति शंकर
भक्ति नम्र ठाढे नरपाला ॥	वर्षहिं करुनासार कृपाला
दर्शन सों अति आनंद बाढा ॥	नरपाति हृदय प्रेम अति गाढा
प्रेम वारि लोचन मन माना	अंग रोम भे पनस समाना ॥
गद्गद कंठ मनोहर बानी ॥	हाथ जोरि विनती नृप ठानी

छं॰ ॥ प्रणमामि देवमनादिमजमव्यक्त शंभुमुमापतिं
श्री सकल देव प्रधान मव्यय मगुन गुनमय सद्गतिं ॥
वंदेत्य कारण कारणं तं सर्वगं कारण परं ॥ ॥
आनंद चिद्घन मीश्वरं महयामि गिरिजापति हरं १
तव गूढ धाम अपार महिमा जग हृदय वासी सदा ॥
हे विश्व कारक साक्षी तोहि भक्तजन खोजहिं मुदा
तव मिलन कारन विदुरव नित मति बुद्धि मन करि ध्यावहीं
बहु योग यत्न उपाय करि तव चरन में चित लावहीं २
जे एक भाव विचारि सुमिरहिं तिन्हहिं एक स्वरूप हौ
जे करहिं नाना बुद्धि तिन को अमित रूप अनूप हौ ॥
नित विगत माया भ्रम सनातन नौमि शंभु अगोचरं
किमि कहौं ध्यावहुं नाथ तोहि मन पंथ सों तव पद परं ३

सो आपु मन बानी अगोचर योगि राज दुराप जो ॥ ८ ॥
परमात्म रूपहि विगत मोहहि तुमहिं विन तोहि ज्ञान की
जो गुन प्रकृति महँ लीन अति विषयानुराग वढावहीं ॥
सो गिरा मम तव सिंधु गुन कर पार केहि विधि पावहीं
जे जानि भ्रमतारति विभंजन शरण तव पद की गहैं
ते भक्ति भावित हृदय सब संसार दुख छिन में दहैं ॥
सोई जानि मैं भव दाव पीडित भजहुँ राउर चरन को ॥
नहिं और सुगम उपाय कोउ भवभीति दुख के तरन को
सो० ॥ नमो नमो देवेश महादेव श्री शंभु हर ॥ ८ ॥
पद वंदौं अखिलेश तीनि रूप गिरिजा रमन १० ॥

भव भव विभव पराभव हेतू । वंदौं श्री शंकर वृषकेतू ॥ ८ ॥
नमो नाथ विश्वादि स्वरूपा । सब जग प्रत्यसाक्षि अनूपा
सत चित तत्त्व रूप भगवाना । वंदौं प्रभु सुख बोध निधाना ॥
वंदौं सकल क्षेत्र के वासी ॥ क्षेत्राऽभिन्न शक्ति अविनासी
नौमि प्रसक्त स्वरूप सुजाना ॥ सक्ताऽऽभास रूप भगवाना
वंदौं निराभास गुण सागर । सतत नित्त आतम बोध उजागर
वंदौं शुद्ध रूप जगदीशा ॥ दूर समीप चराचर ईशा ॥
नौमि नाथ सब कर्म विहीना । वंदौं सब गुनमय गुन हीना ॥
जो वेदांत वेद्य त्रिपुरारी ॥ वेद मूल वासी असुरारी ॥
वंदौं विविधि कृपा गुन वाना । गुन वृत्तिन सों भिन्न सुजाना

दो० ॥ नमो नमो कल्यान वर फल दायक कल्यान ॥
नमोऽनंत गुन प्रांत प्रभु शंकर ज्ञान निधान ११

नौमि अघोर रूप सुखदाई । जो सुघोर दुर्जन दुखदाई ॥
घोर अघौघ विदारण शंकर । नौमि पाप तम तरुन दिवाकर

वंदौं भर्ग सदा जन रंजन ॥८॥ नौमि नित्य भव बीज बिभंजन
नौमि शिवं गुरुरूप अमायं ॥ विशदी कृत निज गुन समुदायं
पाहि २ प्रभु त्रिभुअन नाथा ॥ शंभु सनातन करहु सनाथा
पाहि रुद्र म्रत्युंजय शंकर ॥ विरूपाक्ष अव्यय करुनाकर
हे शशांक शेखर सुरराया ॥ शांत रूप हम पर करु दाया ॥
गौरी पति गोपति गुन अयना विश्वनिवास हुताशन नयना

दो॰ ॥ गंगाधर जग मथन शिव पावन कीरति धाम
भूतनाथ भूधर भवन पुनि २ करौं प्रनाम ॥८॥

सो॰ ॥ एहि प्रकार नरपाल कीन्ही अस्तुति भक्ति सों ॥
गिरिजा सहित कृपाल ह्वै प्रसन्न बोलत भये ॥१३

हौं प्रसन्न तोहि पर नरदेवा सुनि तव अस्तुति लखि तव सेवा
कीन्ही मन अनन्य सेवकाई मम पूजा नित प्रेम दृढाई ॥
राउर भाव परीक्षा कारन ॥ आये विप्र भेष करि धारन
द्विज नारी गिरिराज कुमारी ॥ जेहि लै गयो म्रगपति भयकारी
मायामय म्रगराज शरीरा ॥ तव शर वेधित भै नहिं पीरा ॥
तव धीरज अवलोकन काजा तव महिषी मांगी महिराजा
अमपद अहे प्रीति जिमि तोरी रानिहुं कहं मम भक्ति न थोरी
मोहि अतिशय परितोषित जानी दंपति मांगहु वर अनुमानी
सुनी गिरा करुनाम्रत सानी ॥ हाथ जोरि बोला न्रप बानी ॥
गिरा अगोचर ज्ञान निधाना भयो नयन गोचर भगवाना
मांगहुं और कहा वरदाना ॥ तदपि देहु यह कृपानिधाना
एह रानी अरु मम पितु माता सह सुत पद्माकर सुखदाता
मोहि समेत ये सकल गोसांई निज समीप वासी करु सांई ॥
कीरति मालिनि न्रपपटरानी प्रेम सहित बोली एह बानी ॥

निषधेश्वर मम पितु यश खानी॥ सीमंतिनि मम जननि सयानी॥
ते द्वौ बसहिं नाथ तव तीरा॥ मुदित सदा गहि दिव्य शरीरा॥

सो॰ जन वत्सल भगवान एवमस्तु कहि दुहुन सों॥
दै अभिमत वरदान शंकर अंतर्हित भये २४॥

जेहि वर को सुर लोग सिहाहीं। सो पायो नरपति शिव पाहीं॥
प्रिया सहित बहु भोग सोहाये। भोग किये महिपति मन भाये॥
अव्याहत बल सहित समाजू। कीन्हो अयुत वर्ष लौं राजू॥
निज पुत्रन कहँ दै नृप आसन। प्रिया सहित नरपति मुदित मन॥
गवनो श्री गिरिजापति धामा॥ शंभु प्रसाद लह्यौ मन कामा॥
चंद्रांगद नृप कीरति खानी॥ सीमंतिनी सहित प्रिय रानी॥
प्रेम सहित करि शिव पद पूजन। पायो शंभु धाम जन रंजन॥

सो॰॥ एह विचित्र अघ हारि अति रहस्य त्रिपुरारि यश॥
कहहिं सुनहिं नर नारि शिव पावहिं बहु भोग सुख २५॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे भद्रायु महिमा प्रकाशनं नाम चतुर्दशो विश्रामः १४॥

श्री गणेशाय नमः॥ अथ पंचदशो विश्रामः॥ १॥

सो॰॥ मुनिवर दई सुनाय ऋषभदेव महिमा परम॥
वरनत हौं मन लाय चरित अपर शिव योगि को॥

दो॰ महिमा रुचिर विभूति की अब कहिहौं मुनि नाथ॥
जाहि सुनत ही होंहिगे पापिहु लोग सनाथ २॥

हैं शिव योगि महा तप धामू॥ वामदेव जिनकर शुभ नामू॥
हैं निर्मम अरु द्वंद विहीना॥ समदर्शी निःसंग प्रवीना॥
निज आत्मा राम जित क्रोधा। ग्रह दारा वर्जित अति बोधा॥

गति जिन की जानी नहिं जाई ॥ फिरहिं तुष्ट मन माहि हर्षाई ॥
शांत मौन व्रत नित आचरहीं कछु संग्रह कवहूं नहिं करहीं
लोक अनुग्रह वस मन मांहीं दूसरा जिन्हहिं काज कछु नांहीं
एक वार अति घोर गंभीरा ॥ कौं चारन्य गये मति धीरा ॥
मानुष केरि जहां गमि नांहीं वसै ब्रह्म एकस तेहि मांहीं ॥
क्षुधा त्रषा दुख परम दुखारी ॥ रूप भयंकर दारुण भारी ॥
शिवयोगी कहं तेहि जब देखा रही ताहि बहु क्षुधा विशेखा
मुनि सन्मुख भक्षण हित धायो महा भयानक मुख फैलायो
आवत देखि ताहि निज तीरा ॥ शिवयोगी विचले नहिं धीरा

दो॰ ॥ धाय गह्यो तेहिं खान हित यदपि कियो अघ भूरि ॥
पर्श होत मुनि देह के भयो पाप सव दूरि ॥ ३ ॥

नहीं अधम कोउ जासु समाना मुनि प्रसंग भा निर्मल ज्ञाना
जिमि चिंतामणी के ढिग जाई तुरत लोह कंचन ह्वै जाई ॥
जंवू नदी पाय मुनि राई ॥ ॰ ॥ जिमि माटी सुवर न ह्वै जाई ॥
मानसरोवर वायस जाई ॥ हंस होय निर्मल तन पाई ॥
कीन्हो जवहि अम्रत रस पाना अमर होय जेहि विधि गुनवाना
तथा साधु संगम मुनि राया ॥ हरै पाप दलि दुख समुदाया
दर्श पर्श सेवन अरु भाषन ॥ कौन सुसंगति लहि भयो सज्जन
सतसंगति दुर्लभ मुनि राई ॥ मिलैन विन वहु पुन्य सहाई

दो॰ ॥ ब्रह्म निशाचर घोर अति क्षुधा विकल मुनिराय ॥
वेगि त्रप्त अति ह्वै गयो उर आनंद न समाय ॥ ४ ॥
सो॰ ॥ शिवयोगी तन योग श्वेत भस्म संपर्क सों ॥ ॰ ॥
भा घन पाप वियोग तम स्वभाव सव दूरि है ५ ॥
वहु जन्मन कर ज्ञान लहि योगी वर पद गहे ॥ ॰ ॥

कीन्हो बहु सन्मान विनय सहित बोलत भयो ६॥

योगि राज अब करहु प्रसादा	मेटहु करुना सिंधु विखादा
आनंद वारिधि जन सुख दायक	भव तापित जन क्षेम विधायक
कहँ मैं पाप बुद्धि अति घोरा ॥	कहाँ कृपानिधि दर्शन तोरा ॥
परो नाथ दुख सिंधु अपारा ॥	मेरो प्रभु कीजे उद्धारा ॥१॥
जब से मैं तव दर्शन पायो ॥२॥	छिन २ मम आनंद अधिकायो
एह सुनि ब्रह्म निशाचर वानी	बोले वाम देव मुनि ज्ञानी ॥
को तुम घोर जंतु मोहि कहहू	केहि कारन एहि वन में रहहू ॥
अतिशय घोर महा दुख दाई	एह गति केहि प्रकार तुम पाई
योगि गिरा करुना रस सानी	सुनि बोला निश्चर एह वानी ॥
सुनो नाथ मम चरित सप्रीती	चौविस जन्म गये मम वीती ॥
तेहि ते पहिले नाथ कृपाला	यवन देश को मैं नरपाला ॥
रह्यो मोर प्रभु दुर्जय नामू ॥	परम दंड धारी वल धामू ॥
परम मदो त्कर पापा चारी ॥	दुराचार पुनि स्वैर विहारी ॥
दयाहीन खल प्रजा विनाशक	विषयासक्त सदा जन त्रासक
मम ग्रह में ग्रहणी बहुतेरी ॥	तदपि तृप्त नाहिं गो गण मेरी ॥
प्रतिदिन आवहिं नूतन नारी	देशन सों मम रुचि अनुसारी

सो॰ एक २ के साथ विषय भोगि पुनि तजों में ॥२॥३॥

एहि प्रकार मुनि नाथ नारिन सों बहु ग्रह भरे ७

ग्रामाकर पुर व्रज निज देशा	तथा नगर बहु शैल विदेशा
जहं २ रूपवती सुनि पाई ॥१॥	पठै दास जन तुरत मंगाई ॥
रमन कियो जेहि संग एक वारा	फिरि न दीख तेहि वदन हमारा
औरो नहिं कोउ भोग न पावा ॥	एहि विधि तिनकर दुख सरसावा
परवश परीं सकल ग्रह मांहीं	शोचत हीं निशि वासर जांहीं

द्विज क्षत्री वनिगन की दारा॥ दास नारि हरि लई अपारा॥
जिन द्विज वरन के रत हँ वासा दारन सहित भजे करि त्रासा

दो॰॥ कन्या और रजस्वला सधवा विधवा जोय॥ ॥
रमी मदन वश नाथ मैं तजी जाति नहि कोय ८॥
द्विज वर नारी तीनि सौ क्षत्रिन की सौ चारि॥ ॥
वनिगन तिय षट् शत बहुरि सहस दास की नारि ९

सो॰॥ सौ चंडालिनि नारि वामा सहस पुलिंद की॥
रजक नारि सौ चारि शैलूषी पुनि पंच शत २०

गनिका की संख्या मोहि पाहीं योगीश्वर कहि आवति नाहीं
यद्यपि भोगी तिय बहु तेरी भई न काम तृप्त प्रभु मेरी॥
मदिरा पान विवश मतवारा एहि विधि विषयासक्ति अपारा
यक्ष्मादिक रोगन के मारे॥ भयो न कोउ संतान हमारे॥
रोगविवश अरु पुत्र विहीना सेवक मंत्रिन मोहि तजि दीना
रिपुगन पीडित सहि दुख भारी कर्म विवश भै मौत हमारी॥
आयुर्बल कर होत विनाशा करै विवर्द्धित अयश प्रकाशा
वरप्रारब्ध क्षीण ह्वै जाई॥ ॥ दिन प्रति दुर्गति की अधिकाई
पितर स्वर्ग सों च्युत ह्वै जाहीं बहुरि रहन न पावत तहँ नाहीं
धर्म हीन नर कहँ मुनिराया॥ उक्त रीति बहु दुख समुदाया
तन तजि यम मंदिर जब गयेऊ घोर नर्क तहँ पावत भयेउ
रत कुंड में लह्यो निवासा॥ देंहि जहाँ यम किंकर त्रासा॥
तीनि अयुत संवत तहँ रहेउ पुनि प्रभु वन पिशाच ह्वै गयेउ
क्षुधा प्यास व्याकुल निशि वासर दुख पायो तहँ अति करुनाकर
देवन की सौ वर्ष गँवाई॥ ॥ बहुरि बाघ काया मैं पाई॥
तीसर अजगर को तन पाया चौथो हक शरीर मुनिराया

पंचम शूकर षट् कृकलासा ॥ श्वान देह में बहुरि निवासा
अष्टम पायो जन्म शृगाला ॥ गवय देह पुनि गही कृपाला

दो॰ ॥ दशमो मृग को तन भयो ग्यारहों मर्कट रूप ॥
गीध बारहें जन्म महँ तेरहों नकुल स्वरूप
काक चतुर्दश जन्म महँ बहुरि भालु को रूप
षोडश वन कुक्कुर भयो पुनि खर तन मुनि भूप १२

अष्टादश भव भ्रम जब आयो ॥ मारजार को तन तब पायो ॥
दादुर कस्यप को पुनि रूपा ॥ मीन मूष को बहुरि स्वरूपा
पुनि उलूक तन लह्यो सुजाना बहुरि भयो वन गज बलवाना
पंचविंश एह जन्म हमारा ॥ ब्रह्म निशाचार को तन धारा ॥
सदा बसौं निर्जन वन मांहीं खान पान पावहुँ कछु नाहीं
तुम्हहिं नाथ मैं आवत देखा ॥ लगी रही मोहि क्षुधा विशेखा
धाय गहो प्रभु भक्षण काजा ॥ तब तन छुअत हि श्री मुनिराजा
सहस जन्म की सुधि मोहि आई अगटो उर विराग अधिकाई
अति प्रसन्न मम हृदय सुजाना तिहि ते पूछत हौं भगवाना ॥
एह प्रभाव केहि विधि तुम पायो योग प्रभाव कि तप बल आयो

दो॰ ॥ तीरथ सेवन करि लह्यो के सुर भक्ति दृढाय ॥
मंत्र शक्ति अथवा मिलो मुनिवर देहु सुनाय

सो॰ ॥ लगी भस्म मम देह तेहि कर जानु प्रभाव एह ॥
तब मति बिन संदेह ताही सौं उत्तम भई १४ ॥

भस्म महातम शिव हि विहाई कोउ न जान सुर नर समुदाई
शिव महिमा जिमि जानि न जाई तिमि विभूति महिमा मुनिराई
बरनत हौं तोहि सन इतिहासा जेहि सुनि होहि सकल अघ नाशा
तुम समान कोउ धर्म विहीना द्रविड देश वासी द्विज दीना ॥

ऐसो नीच कर्म बनि आयो ॥ द्विज पदवी तजि दास कहायो
मूढ महा शठ चोरी करही ॥ कामी वृषली रति अनुसरही
एक बार दासी गृह आयो ॥ जार भाव गृहपति लखि पायो
महा क्रोध करि तेहि वध कीन्हा बाहेर ग्राम डारि तन दीन्हा ॥
क्रिया हीन यमपुर महँ गयेउ नर्क वास दारुन तहँ भयेउ ॥

दो॰ कछु दिन पहिले पथिक तहँ कीन्हो पाक सुजान ॥
तेहि विभूति महँ लिप्त पद शव तन पर है श्वान १५

दैव योग विचरो वहु वारा ॥ लागी शव तन सोई छारा ॥
शिव दूतन तन देखि सोहावा सब अँग वर विभूति सों छावा
वेग सहित यम लोक सिधारे यम किंकर तिन डाटि निवारे
विप्रहि रुचिर विमान चढाई शिव पद कहँ चलि भे हर्षाई ॥
धर्मराज शिव गन दिग आई ॥ एहि प्रकार निज गिरा सुनाई ॥
अति पापी एहु विप्र अयाना ॥ किमि पैहै शिव लोक सुजाना
बोले श्री शिव दूत सुजाना ॥ शव तन देखहु ज्ञान निधाना
उर ललाट द्वौ भुजा सोहाई ॥ रुचिर विभूति सकल अँग छाई
एहि कारन शिव शासन पाई याहि लेन आये यम राई ॥२॥
धर्मराज संशय परिहरहू ॥ हम कहँ तुम वारन जनि करहू

सो॰ ॥ एहि विधि यमहि सुनाय द्विज वर को शिव दूत ते
शंभु लोक हर्षाय सव के देखत लै गये १६ ॥ २३८ ॥

तेहि ते पाप समूह नशावनि सदा विभूति धरहु मैं पावनि
शिव भूषण विभूति श्रुति गाई एह माहिमा निश्चर सुनि पाई
सुना चहै विस्तार सहीता ॥ पुनि बोला एह वचन विनीता
साधु २ मुनि नाथ सुजाना ॥ पायो तव दर्शन भगवाना ॥
आजु कृतारथ मैं मुनि नाथा भयो धन्य पद देखि सनाथा ॥

सोउपाय अव कहहु कृपाला जेहि विधि छूटै देह कराला ॥ २२ ॥
तव प्रसाद भव बंध बिहाई ॥ ह्वै हौं मुक्त सुरति मोहि आई
अहै नाथ कछु सुकृत हमारा जेहि वल पायो दर्श तुम्हारा

सो॰॥ रही नृपति की देह तव दीन्ही शिव भक्त कहँ ॥
प्रथिवी सहित सनेह सस्या ऽऽ राम समन्विता १७
यमहूं दियो बुलाय पंच विंश भव मांहि तव ॥ २ ॥
शिव योगी सँग पाय जैहै संसृति छूटि सब १८

प्रथम जन्म संचित वह भोरी सफल पुन्य लहि पद रज तोरी
न तरु कहां प्रभु दरश तुम्हारा एहि वन में जो घोर अपारा
घोर पाप वश योनि अपारा ॥ भ्रमत फिरे लहि दुख परिवारा
मोहि उधारहु करि निज नेहू अभिमंत्रित विभूति मोहि देहू
केहि विधि धारन करहिं गोसाईं कौन मंत्र मोहि देहु सुनाई ॥
देश काल सव कहहु सुजाना तुम मम गुरुवर ज्ञान निधाना
प्रभु समान जे साधु सुजाना जनहित निरत नेम नहिं आना
निज स्वारथ देखहिं नहिं काऊ कल्प विटप सम सहज सुभाऊ

सो॰॥ सुने निशाचर वयन शिव योगी बहु विनययुत
कहन लगे गुन अयन महिमा बहुरि विभूति की १९

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामीराम-कृष्णभारतीशिष्यमाधवानंदभारतीप्रदर्शिते कैलाशमार्गे विभूतिमहिमाप्रकाशनं नाम पंचदशो विश्रामः १५॥

श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीशंकराय नमः॥ अथ षोडशः॥

नाना धातु विचित्र सोहावा मंदर शैल पुरानन गावा ॥
विविध जीव संकुल तरु नाना नाना कुसमित लता विताना
तहँ कालाग्नि रुद्र भगवाना जग वंदित प्रभु कृपानिधाना

भूतनाथ सुखप्रद पगु धारा ॥ साथ रुद्र शत कोटि अपारा ॥
बैठे तिन के मध्य सुजाना ॥॰॥ देव त्रिलोचन ज्ञान निधाना ॥
देवन युत सुरपति तहँ आये वरुण अनल कुबेर छवि छाये
गवने तथा वायु यम राजा ॥ आयो गंधर्वन को राजा ॥
चित्र सेन तहँ परम विनीता गंधर्वन के वृंद सहीता ॥
वैवस्वत किंपुरुष निकाया सिद्ध साध्य गुह्यक समुदाया

दो॰ ॥ खेचर पन्नग रजनिचर विद्याधर मुनिराय
दक्षादिक सब प्रजापति आये सहित सहाय १
वशिष्ठादि सब ब्रह्म ऋषि आये सहित समाज
नारदादि पुनि तहँ गये देवन में ऋषि राज २

अर्यमादि सब पितर सयाने आये दर्श पाय हर्षाने ॥॰॥
उरवश्यादि अमर वर दारा चंड्यादिक सुर मातु उदारा
अष्ट वसू द्वादश सविता गन विश्वे देवा सकल मुदित मन
आये तिमि अश्वनी कुमारा भूतनाथ बल तेज अपारा ॥
महाकाल नंदीश्वर दोऊ ॥ शिव समीप आवत भे सोऊ
आये वीरभद्र भगवाना ॥ शंकुकरण पुनि अति बलवाना
शंखकपाल नाम वर शिवगन प्रभु समीप आये प्रमुदित मन

छं॰ ॥ घंटाकरण दुर्द्धर्ष अरु मणिभद्र कुंडोदर तहाँ ॥
पुनि विकट कुंभोदर पधारे रहे श्री शंकर जहाँ ॥
गणनाथ मंदोदर प्रबल अरु करणधार महोजसा
तिमि केतु भृंगीरिटी गवने वर्द्धमान स्वतेजसा ॥१

सो॰ ॥ और हु बहु मुनिराय भूतनाथ आवत भये ॥॰॥
महा प्रबल अति काय चित्र वरन अरु वेष बहु ३ ॥

कोउ अति कृश पर्वत अति एका दादुरि के सम वरन अनेका ॥

हरितधूमसम धूसर नाना ॥ कोई कर्बुर वरन समाना ॥ २ ॥
पीत वरन कोउ लोहित कोई ॥ चित्र वरन कहि जाय न सोई ॥
चित्रविचित्र अंग सब केरे ॥ २ ॥ लीलाधर वल विपुल घनेरे ॥
नानायुध पुनि नाना भूषन ॥ तिनके नाना विधि के वाहन ॥
वाघ वदन भूकर मुख एका ॥ नक्र श्वान गज वदन अनेका ॥
उंट श्रृगाल वदन वहुतेरे ॥ सिंह वाजि वक वदन घनेरे ॥
गीध वदन कोई खरभानन ॥ कोउ भे रुंड वदन एकानन ॥

दो॰ दुइ मुख कोई तीनि मुख बिन मुख के गन एक ॥
एक तीनि अरु पांच कर बिन कर विकट अनेक ४

कोउ बिन पाद एक वहु चरना ॥ कोउ श्रुति हीन एक बहु कर्ना ॥
एक नयन के गण वहुतेरे ॥ चारि चक्षुधर तथा घनेरे ॥
दीर्घ देह कोई तन वामन ॥ प्रभु कहँ सेवैं सब हर्षित मन ॥
तेहि अवसर मुनि ज्ञाननिधाना ॥ आये सनतकुमार सुजाना ॥
जगदीश्वर दर्शन मन लोभा ॥ देखी श्री शंकर की शोभा ॥
कोटि दिवाकर सरिस प्रकाशू ॥ सुमिरत होय मोह तम नाशू ॥
प्रलयकाल मर्याद विसारी ॥ सप्त सिंधु कर स्वन अति भारी ॥
तैसो शब्द महा गंभीरा ॥ २ ॥ गौर वरन अति विमल शरीरा ॥
संवर्तानल ज्वाल समाना ॥ जटायूट शोभित भगवाना ॥
भाल नयन ज्वाला आधि काई ॥ तेहि सों मुख द्युति की रुचिराई ॥

दो॰ ॥ चूडामणि शशि खंड सों शोभित श्री भगवान ॥
तक्षक वायें श्रवण में वासुकि दाहिने कान ५ ॥ २ ॥

नील रत्न सम हनु थल शोभा ॥ नीलकंठ देखत मन लोभा ॥
महा वाहु अति शय छवि छाजैं ॥ नाग हार अति रुचिर विराजैं ॥
अंगद कंकणादि आभूषन ॥ फणि मय सों भूषित सिगरो तन

॥ अनंतगुणितसहस्रमणि

जो अनंतगुन सहस बनाई॥ मणि रंजित मेखला सोहाई॥
बाघचर्म परिधान सोहायो घंटा दर्पण अति छबि छायो
महापद्मकर कौरक विषधर अरु ध्वज राष्ट्र धनंजय अहि वर
सोहैं नूपुर सम पद माहीं॥ वर आयुध सोहैं प्रभु पाहीं॥
तोमर टंक प्रास धनु भारी॥ अरु खट्वांग शूल भय हारी॥
रत्नसिंहासन प्रभु आसीना करि प्रनाम मुनि गिरा प्रवीना

सो॰ प्रेम सहित मुनिराय भक्ति वेग पूरन हृदय॥ ॥
बिनती दई सुनाय श्रुति सम्मत अति मृदु वचन
हाथ जोरि शिर नाय पूछे धर्म अनेक मुनि॥ ॥
कहे रुद्र हर्षाय जे मुनि पूछे धर्म सब॥ ७ ॥ ॥

पुनि बोले मुनिनाथ सुजाना तुम सन धर्म सकल भगवाना
सुने पाप नाशक त्रिपुरारी मुक्ति प्रदायक भव भ्रम हारी॥
अब करुना करि कहिये सोई अल्पाऽऽयास महा फल होई
बरने निगमागमन घनेरे॥ धर्म हजारन श्रम बहुतेरे॥
भली भाँति सेवन तिन केरा॥ जब जन करै काल बहुतेरा॥
देहिं न देहिं सिद्धि को जाना तेहि ते विनय करौं भगवाना
भुक्ति मुक्ति कर साधन जोई तथा लोक हित दायक होई
ऐसौ धर्म सकल उपकारी॥ जानां चहौं नाथ भय हारी॥

सो॰॥ सुनि मुनिवर के वयन बोले श्री शंकर सुखद॥
सुनहु तात गुन अयन सब धर्मन महँ जो परम ८

जो त्रिपुंड धारन मुनिराया॥ अति रहस्य वेदन दर्शाया॥
सुनि बोले मुनि सनतकुमारा विधि वरनौ प्रभु तासु उदारा
अरु अस्थान कहौ दर्शाई॥ द्रव्य शक्ति सुर देहु जनाई॥
पुनि प्रणाम कर्त्ता समुझावो॥ मंत्र तथा फल मोहि सुनावो॥

एह सब कहियेजन सुख दाई ॥ अरु त्रिपुंड लक्षण सुरराई
लोक अनुग्रह जो हहि विधि होई ॥ जगन्न्याय वरनौ विधि सोई ॥
गो मय दग्ध जनित जो होई ॥ मुनिवर भस्म कहावै सोई ॥
सोइ त्रिपुंड की द्रव्य सुजाना ॥ अव तुम मंत्र सुनौ दै काना
पंच ब्रह्म मय मंत्र सोहाये ॥ सद्योजातादिक श्रुति गाये ॥
इन मंत्रन सों कर में लीजै ॥ अग्नि मंत्र अभि मंत्रित कीजै

दो॰ मानस्तोक मंत्र सों मर्दन करि मुनिराय ॥ [illegible] ॥
त्र्यंवके तिएहि मंत्र सों शिर में देहि लगाय [illegible] ॥
पुनि ललाट भुज कंध में लेपाहि भस्म सुजान
त्रियायुषादिक मंत्र वर पढि पढि ज्ञान निधान २०

वेद मंत्र अधिकार न जाही ॥ ज्ञाननिधान उचित एह ताही
पंचाक्षर जो मंत्र उदारा ॥ तेहि सों करै सकल व्यवहारा
यती भस्म जव अंग सँवारै ॥ प्रणव मंत्र मन में उच्चारै ॥
जो अस्थान कहे में गाई ॥ तीनि तीनि रेखा मुनिराई ॥
करिवो उचित न कछु संदेहा अव प्रमाण सुनु सहित सनेहा
जहँलौ द्वौ भौं हैं मुनिराई ॥ तहँलौ रेखा तीनि सोहाई ॥
मँझिली अंगुरी ज्ञाननिधाना पुनि अनामिका जो गुनवाना
इनहुँ सो दुइ रेख सँवारै ॥ मध्य रेख प्रतिलोम सुधारै ॥
सो अंगुष्ठ सो श्रुति दर्शावै ॥ एहि को नाम त्रिपुंड कहावै
तीन रेख जो हम कहि गाई ॥ इनके देव सुनौ मुनिराई ॥
प्रति रेखा नव देव सुजाना कहहुँ सकल अव ज्ञाननिधाना

छं॰ ॥ अवर्ण अरु ग्रहे पत्य पुनि ऋग्वेद मुनिवर जानिये
भूलोक रज गुण आत्मा तामि क्रपा शक्ति वखानिये ॥
पुनि कहैं काल प्रभात श्रुतिगन महादेवहि जानहू ॥

१ = प्रणव के तीन अक्षर अ॰ उ॰ म॰ = २ गार्हपत्य

एहि रीति पहिली रेख के नव देव तुम पहिचानहू ॥ ॥
उवर्ण पावक दक्षिणाग्नि नभ लोक सत गुन जानिये ॥
यजुवेद अरु मध्यान अवसर ऋषि प्रवर पहिचानिये
पुनि शक्ति इच्छा अंतरात्म अरु महेश्वर जानहू ॥ ॥
एहि भांति दुसरी रेख के नव देव वर पहिचानहूं ॥ ॥
मवर्ण आहवनीय परमातम महा मुनि जानिये ॥ ॥
दिवि लोक सायंकाल तम गुन साम श्रुति उर आनिये ॥
शिव ज्ञान शक्ति तृतीय रेखा देव नव पहिचानिये ॥
जब करिय ताल त्रिपुंड सब को प्रणति करि मन्मानिये ॥
सो॰ ॥ गायो वेदन मांहि माहेश्वर एकु परम व्रत ॥ ॥
पुनि भव में भव नाहिं जो मुमुक्ष सेवन करै ॥ ११ ॥

एहि विधि सों जो नर मुनिराई। करै भस्म धारन सुखदाई ॥
गृही ब्रह्मचारी वनवासी ॥ अथवा यती प्रपंच उदासी ॥
महापाप संघात घनेरे ॥ ॥ कूरहिं उपपातक बहुतेरे ॥
वीर अश्वहत्या करि जांहीं ॥ जानि अजानौ संशय मन मांहीं
बिन महिमा जाने गुन बाना ॥ बिनहू मंत्र जो पुरुष सुजाना
भाल भस्म को पुंड सवारा ॥ नाशहीं हि पातक परिवारा ॥
और न के धन को अपहारा ॥ जिहि ने भोग करी परदारा ॥
ऐसो तमगुन हृदय प्रकाशा ॥ कीन्हो सस्याऽऽराम विनाशा
गृहदाहादिक पाप घनेरे ॥ परनिंदादिक अघ बहुतेरे ॥
पर को क्षेत्र हरन पर पीडन व्रत को त्याग नीच को सेवन ॥
असत्काव्य पै मून्य सुजाना ॥ परुष भाव तिमि ज्ञान निधाना
विक्रय वेदन को मुनिराया ॥ सारेवी कूट तथा छल माया ॥
गो भू हेम माहिष तिल कंवल अन्न वस्त्र धान्यादि तथा जल

कंठेरी ॥

नीचजनन सों इन कर दाना॥ लीन्हे करजो पाप सुजाना॥

दो॰ दासी गनिका अरु नटी वृषली तथा भुजंग॥ २॥
कन्या विधवा ऋतुवती नारी केर प्रसंग॥ २५॥

सो॰॥ चर्म रसादिक लोन आमिष को जो वेचि बो॥
इत्यादिक पुनि जोन विविध भाँति को गनि सके॥
पाप होंहिं सब खीश वेगि लगावत भस्म के॥
महिमा महा मुनीश श्रुति वर्णित बहु भस्म की

शिव धन को अपहरन सुजाना। शिव निंदा तिमि ज्ञान निधाना
निंदा शिवजन की करु जोई॥ निष्कृत कीन्हेहु शुद्ध न होई॥
जासु अंग रुद्राक्ष सोहावन॥ भाल त्रिपुंड तथा तन पावन
सो चंडाल जाति किन होई॥ पूजनीय उत्तम है सोई॥ २॥
जेतीरथ पावन संसारा॥ २॥ गंगादिक जो सरित उदारा॥
सब मज्जन फल पावै सोई॥ भस्म त्रिपुंड करै नर जोई॥
सप्त कोटि शिव मंत्र सोहाये॥ पंचाक्षर आदिक श्रुति गाये॥
और कुकोटिन मंत्र उदारा॥ जे कैवल्य हेतु संसारा॥ २२॥
सकल जाप फल पावहि सोई भाल त्रिपुंड लगावहि जोई॥

दो॰॥ भूत सहस अरु भावि निज कुल के लोग हजार॥
जो त्रिपुंड धारन करै करै सकल उद्धार॥ १५॥

जे त्रिपुंड नित धरहिं सुजाना। सब प्रकार तिन कहँ सुख नाना
चिरजीवहिं भोगहिं सब भोगा विगत आधि वाधैं नहिं रोगा॥
देह त्याग अवसर जब आवै॥ नजे सुखेन न कछु दुख पावै॥
दिव्य शरीर पाव पुनि सोई अणिमादिक गुन युत वपु जोई
बहुरि चढै अति दिव्य बिमाना। देव वधू सेवहि विधि नाना॥
बिद्याधर सिद्धन को लोका॥ गंधर्वन को लोक विशोका॥

आठहु लोकपाल के धामा ॥ क्रम सों जाय लहै विश्रामा ॥
भोगहि तहँ बहु भोग सोहाये बहुरि प्रजेश लोक मन भाये

दो॰॥ सर्वोपरि जो ब्रह्म पद पावहि अति कमनीय ॥
तहाँ कल्प सौं लौं रमै लहै भोग रमणीय ॥ ९५ ॥

सो॰ विष्णु लोक महँ जाय तौ लौं सुख सों तहँ रमै ॥
जौ लौं सुन मुनिराय बीतें ब्रह्मा तीनि सौ ॥
शंभु लोक महँ जाय विहरहि अक्षय काल लौं
मुक्ति चतुर्थी पाय पुनि नहिं जन्महि लोक महँ ९८

सब उपनिषद केर जो सारा ॥ वार वार बहु कियो विचारा ॥
भाएहि निर्णय बिन संदेहा ॥ परम श्रेयकारी विधि एहा ॥
एहु त्रिपुंड महिमा सुखदाई संक्षेपहि हम दीनि सुनाई ॥
अति रहस्य एहि जानि सुजाना गोपनीय सब विधि गुनवाना
एहि प्रकार मुनिवरहि सुनाई अंतर्ध्यान भये सुरराई ॥ ९ ॥
तव मुनि नायक अति हर्षाये चतुरानन के धाम सिधाये ॥
भस्म प्रभाव विलोकु निशाचर तेरहु मति ह्वैगे निर्मलतर ॥
तुम हु भस्म अति पावन जानी धरहु त्रिपुंड मानि मम वानी

दो॰॥ वामदेव शिव योगिवर एहि प्रकार समुझाय ॥
अभिमंत्रित करि भस्म वर दीन्ही तेहि मुनिराय ९९

ब्रह्मनिशाचर अति हर्षाई ॥ लीन्हो भाल त्रिपुंड लगाई
सुनु शौनक मुनि तासु प्रभावा ब्रह्मनिशाचर भाव नशावा ॥
भई वेगि सविता सम काया ॥ चहुँ दिशि मंडल तेज निकाया
दिव्य अंग अति रूप सोहायो ॥ दिव्य माल अंवर छवि छायो
शिव योगी गुरु की प्रमुदित मन प्रेम सहित करि तीनि प्रदक्षिन
दिव्य विमान चढ़ो हर्षायो ॥ पुण्य लोक कहँ तुरत सिधायो

वामदेव शिव योगि कृपाला ॥ देय परम गति कियो निहाला
लगे बहुरि विचरन सुख दाता मनहु आपु शंकर जग चाला
एह विभूति महिमा सुखकारी श्रवण करै जो कोउ नर नारी ॥
अथवा जो कोउ पठहि सुनावै ॥ सो मुनि नाथ परम गति पावै ॥

छं॰ ॥ जो मुक्ति हेतु सोहावनी गौरीश कीरति गावई ॥
शिव योगि वंदित शंभु पद पाथोज कहं शिर नावई
शिव भक्त मानस काय निर्मल रचहि भाल त्रिपुंड जो
नहिं बहुरि जननी गर्भ को दुख दोष दारुन भजहि सो ५

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे विभूति महिमा प्रकाशो नाम षोडशो विश्रामः ॥१६॥ शिव ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः ॥ अथ सप्तदशः चौ॰

शौनकादि ऋषि धर्म धुरीना कीनि प्रश्न एह परम प्रवीना ॥
ब्रह्म वादि गुरु ज्ञान निधाना वेद अंग तत्त्वज्ञ सुजाना ॥१॥
जेहि उपदेश करहिं मुनिनायक वेगि सों होहि अवशि सिधि दायक
नीति निपुन जे नर गुनवाना ॥ तिन कीन्हों उपदेश सुजाना
केहि प्रकार की सिधि मुनिराया होहि सुनावहु सो करि दाया ॥
एहि प्रकार सुनि प्रश्न सोहाई ॥ कह्यो सूत मुनिवर हर्षाई ॥
श्रद्धा जननी सम हितकारी ॥ सो सब धर्म वढावनिहारी ॥
उभय लोक महं मुनिवर नायक श्रद्धा लोगन कहँ सिधि दायक
श्रद्धा सहित भजहि जो कोई ॥ अश्म शिला फल दायिनि होई
यद्यपि गुरु मूढ किन होई ॥२॥ भक्ति सहित पूजै जो कोई ॥३॥
दोहा ॥ सोउ गुरु सिधि दायक न संदेहा श्रुति पुराण कर संमत एहा ॥
विन विधि भजै मंत्र किन कोई श्रद्धा सों फल दायक होई ॥

श्रद्धा सहित भजै भगवाना ॥ नीचहु पावै सिद्धि सुजाना ॥

सो॰ ॥ यज्ञ तपो व्रत दान विन श्रद्धा जो कुछ कियो ॥
निः फल होय सुजान वंध्य वृक्ष को सुमन जिमि १॥

सकल ठौर जेहि संशय होई ॥ श्रद्धा विगत सु चंचल जोई ॥
परमारथ पथ पार न जाई ॥ तेहि कहँ संसृति अति दुखदाई
मंत्र देव द्विज तीरथ गुरु वर ॥ तथा भिषज ज्योतिष ज्ञाता नर
जहँ २ होय भावना जैसी ॥ ५ ॥ सिद्धि होय मुनि नायक तैसी
सब असिद्धि की हेतु सुजाना एक अश्रद्धा अति बलवाना ॥
तेहि ते भाव भई संसारा ॥ पुन्य पाप सब भाव पसारा ॥
भाव हीन जो कोउ जग माहीं ॥ दूनउ होंहि कबहु तेहि नाहीं ॥
इहाँ एक तुम सन इतिहासा ॥ अति अचरज मय करहुँ प्रकाशा

सो॰ ॥ सिंहकेतु अस नाम पाँचाल न्रप को तनय ॥
सकल गुनन को धाम राज धर्म महँ रत सदा २॥

एक दिवस न्रप सुत बलवाना म्रगया हित वन कियो पयाना
शवर एक न्रप सुत संग केरा ॥ म्रगया हेतु विपिन वडु तेरा
विचरत देवालय तेहि देखा ॥ गिरा जीरण स्फुटित विशेखा ॥
तहाँ एक शिव लिंग उजागर भिन्न परो अर्घा के बाहर ॥
सरल सूक्ष्म भाविदी पर पायो मनहु भाग निज दर्श दिखायो
प्रथम कर्म प्रेरित मुनिराई ॥ वेग सहित तेहि लीन्ह उठाई
राज सुअन कहँ आनि देखायो देखहु शिव विग्रह मैं पायो
एहि को पूजन मैं नर नाहा ॥ करब यथा मति सहित उछाहा
जे पूजहिं विधि मंत्र समेता ॥ जे नहिं जानहिं मंत्र अचेता ॥

दो॰ मुदित होंहि जेहि रीति सों पूजित श्री गिरिराय ॥
सो पूजा विधि मोहि प्रभु सादर देहु सुनाय ॥ ३ ॥

एहि विधि जब तेहि विनय सुनाई । हँसि बोला नृपसुत हर्षाई ॥
प्रथमहि करि संकल्प सुजाना । बहुरि करै अभिषेक विधाना ।
पुनि पावन आसन बैठारी ॥ चंदन अक्षत पान सुपारी ॥
वनभव पत्र पुष्प मुनि राई ॥ धूप दीप सब वस्तु सोहाई ॥
चिताभस्म उपहार सुजाना । नित सप्रेम पूजै भगवाना ॥
अपने हित जो अन्न बनावै ॥ ताही को निज भोग लगावै ॥
बहुरहु धूप दीप उपचारा ॥ करि प्रणिपात विनय विस्तारा
पुनि प्रसाद सादर नित लेहू । साधारन पूजा विधि एहू ॥

दो॰ । चिताभस्म उपहार सों वेगि द्रवैं गिरि राय ॥ ॥
नृपसुत इमि परिहास रस वश तेहि कह्यो बुझाय ४

चंडशबर मुनिनाथ सिखावन । शिर धरि गुरु वचन सोहावन
तेहि दिन सो नित निज गृह जाई । पूजहि प्रभु मूरति हर्षाई ॥
चिताभस्म उपहार सुजाना । करहि चंड नित प्रेम निधाना
गंध सुमन आदिक जो इ सोई । जो कुछ अपने को प्रिय होई ॥
शिवहि निवेदन सो नित करई । बहुरि प्रसाद आपु अनुसरई
एहि प्रकार अति भक्ति दृढाई । पूजहि प्रिया सहित हर्षाई ॥
नित पूजत आनंद सहीते ॥ तेहि शबरहि कछु संवत बीते
एक समय पूजन अनुरागी । उद्यत भयो शबर बड भागी

दो॰ चिताभस्म भाजन भरा धरा रहा तेहि धाम ॥
नहिं देखी तहं स्वल्प हू रहा न चित विश्राम ५

तुरत हीं गृह बाहर सो गयेऊ । भ्रमत दूरि लौ खोजत भयेऊ ॥
पाई चिताभस्म जब नांहीं ॥ आमित लौटि आयो गृह मांहीं
निज वनिता पुनि टेरि बोलाई । प्रीति सहित एह गिरा सुनाई
चिताभस्म हमने नहिं पाई ॥ कहहु प्रिया कह करहुं उपाई ॥

भई आजु खंडित शिव पूजा ॥ सो मम पाप हेतु नहिं दूजा ॥
जियो चहौं छिन भरि मैं नांहीं नहिं पूजा विन सुख मन मांहीं
पूजा की वर वस्तु सोहाई ॥ हा हत भै कछु काहि नाहिं जाई
गुरु अज्ञा पुनि टारि न जाई ॥ सकल अर्थ दायक श्रुति गाई

दो॰॥ शावर नारि व्याकुल लख्यो निज भर्त्ता तेहि काल॥
बोली जिनइ रपहु सुनहु कहौं उपाय विशाल ६ ॥२॥

लगो जहां अति दारु निकाई देहौं ग्रह में आगि लगाई ॥
तहं करिहौं शरीर निज दाहू चिता भस्म भै करहु उछाहू
शावर सुनी बनिता की वानी कहन लगो मन में सुख मानी
चारिहु फल के साधन योगा केहि हित चहसि शरीर वियोगा
नाहि जन्मे अव लौ संताना ॥ अधिक भोग रस तुम नहिं जाना
भोग योग एह देह तुम्हारी ॥ दाहु करै केहि हेतु गंवारी ॥
नीतियुक्त सुनि पति की वानी शावरी वोली परम सयानी
जन्म तथा जीवन फल एहा ॥ पराहित लागि तजै निज देहा
किमु कहिये तेहि भाग वडाई जासु देह शंकर हित जाई ॥
कह कीन्हो तप घोर अपारा ॥ अथ वा कियो दान विस्तारा
अथ वा शिव अर्चन मोहि पांहीं कह वनि परो जन्म शत मांहीं

दो॰॥ कौन पुन्य मम तात की जननी को वड भाग ॥
जो शिव के हित देह एह तजौं सहित अनुराग

सो॰॥ ऐसी दृढ मति देखि तथा भक्ति शिव चरन महं
करि सत्कार विशेखि कह्यो तथा इति शवरने ॥

प्रीतम को अनुशासन पाई ॥ तव शवरी शुचि सहित नहाई
अलंकार धारन सव कीन्हा ॥ पुनि ग्रह में पावक दै दीन्हा
पुनि २ अनल प्रदक्षिन दीन्ही गुरु कहं वहुरि दंडवत कीन्ही

प्रेम सहित कीन्हौं शिव ध्याना॥	अनल प्रवेश वक्करि मन आना
कर संपुट करि शीश नवाई॥	शवरी एहि विधि विनय सुनाई

छं॰ मम होंहि गो गण पुष्प राउर धूप सम तन जानिये
एहु हृदय होउ प्रदीप प्रभु को प्राण आहुति मानिये
नख होंहि आखत रूप इमि सब अंग पूजा लीजिये
जो नाथ पूजन फल परम मम जीव को प्रभु दीजिये॥
नहिं चहौं सब धन स्वामिता नहिं स्वर्ग सुख मन भावनो
नहिं अचल महि को राज मैं नहिं ब्रह्म धाम सोहावनो॥
जो होहि भव तव जन्म जन्मनि नाथ एह वर मांगहूं॥१॥
तव पद्म पद मकरंद मैं भौंरी सरिस अनुराग हूं २॥
मम जन्म होउ अनेक शत एह विनय प्रभु सुनि लीजिये
अज्ञान हेतुक प्रकृति वश मम हृदय जनि प्रभु कीजिये
कुछ वेर आधेहु छिन हृदय सों चरन जनि विसरावहूं॥
प्रणमामि पुनि २ ईश एहु वर दान शंकर पावहूं ३
सो॰॥ एहि विधि विनय सुनाय शवरी अति दृढ निश्चया
पावक गई समाय भस्म भयो तन छिनक महं॥९॥
चिता भस्म तव पाय दग्ध भवन के तीर तव॥८॥
शवर हृदय हर्षाय शिव पूजा लागो करन १०॥

नित एह नेम रहा मुनि राई॥	हुँ जाती पूजा सुख दाई॥८॥
विनय सहित कर अंजुलि बाधी	तहं आवति प्यारी चुप साधी
ताहू दिन करिकै शिव पूजन॥	सुमिरी प्राण प्रिया हर्षित मन
लेन हेतु सुचि शंभु प्रसादा	जबहीं सुमिरी नारि विषादा
पीछे आप भई सोइ ठाढी॥	देखि ताहि चिंता अति बाढी
निज मन लागो करन विचारा	मम गृह प्रथम भयो जरि छारा

यथा प्रथम मोहि रत्न देखाई ॥ दग्ध नारि केहि विधि पुनि आई
अनल तेज सों सब करु क्षारा ॥ निज कर सों सब दिनमणि जारा ॥
दंड द्वार जारै निज राजा ॥ २ ॥ मन द्वारा द्विजराज समाजा ॥

दो॰ ॥ स्वप्न रहा हौं देखि विधि कै माया भ्रम सार ॥ २ ॥
एहि प्रकार बहु शवर मन भा विस्मय विस्तार ११

गृह समेत भामिनि तव देहा ॥ प्रथम दग्ध भा विन संदेहा ॥
भस्म शेष तें केहि विधि आई यथा प्रथम पुनि गृह दर्शाई
तव शवरी पति सन्मुख आई साहित प्रेम एह गिरा सुनाई ॥
जेहि अवसर एह गृह में दाहा प्रविशी पावक सहित उछाहा
रही न तन की खबरि विशेखी तेहि छिन पावक मैं नहिं देखी ॥
ताप लेप ज्वाला में नाहीं ॥ २ ॥ बैठी जनु शीतल जल मांहीं ॥
सोय गई छिन में जनु जागी देखा गृह अचरज मति पागी
कहुं न जरो जस प्रथम सोहावा तैसोइ सब देखा मन भावा ॥
भयो शंभु पूजन अवसाना ॥ आई लेन प्रसाद सुजाना ॥
एहि विधि दंपति अति वडभागी करहिं वतकही शिव अनुरागी
दूतन्ह के सन्मुख तेहि काला ॥ आयो दिव्य विमान विशाला
सीतारापति सरिस उजागर तेहि में चारि ईश के अनुचर ॥
शवर दंपती सहित शरीरा ॥ बैठारे शिव गण मति धीरा ॥
शंभु दूत कर परश प्रभावा ॥ तुरतहि देव रूप तिन पावा ॥
तेहि कारन शौनक मुनिराया श्रद्धा कारज सिद्धि उपाया ॥
नीचहु शवर जीव दुखदाई ॥ श्रद्धा सों उत्तम गति पाई ॥

छं॰ ॥ कह लाभ उत्तम वरण सों जो शंभु प्रेम न मन भयो ॥
फल भयो विद्या सों कहा आगम विचारत नित नयो ॥
है जासु उर शिव भक्ति पावनि धन्य सो नर जानिये ॥

तेहि सरिस और त्रिलोक महँ कोई न निज उर आनिये ५

इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री ७ स्वामी राम कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती मद्दर्शिते कैलाश मार्गे गुरुवचन श्रद्धा माहात्म्य प्रकाशनं नाम सप्तदशो विश्रामः १७ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशंकराय नमः ॥ चौपाई ॥

बहुरि सूत बोले हर्षाई ॥१॥ सुनहु मुनीश कथा मन लाई
धर्मन में अति उत्तम जोई ॥ बरनहुँ गो तुम सन अब सोई
उमा महेश्वर व्रत मुनि नायक सकल अर्थ को है सिधि दायक
रहै विप्र वर सब गुन धामा ॥ विद्यासिंधु वेदरथ नामा ॥
दार पुत्र संपन्न सुपासी ॥ परम यशी आनर्त निवासी ॥
एक भई कन्या तिन केरी ॥२॥ नाम शारदा रुचिर घनेरी
पंकज लोचनि रूप विशाला भई वर्ष द्वादश की बाला ॥
पद्मनाभ संज्ञक द्विज राजा ॥ अति धनि जासु सखा पुनि राजा
अति सुशील सुत दार सुजाना माँगी कन्या रूप निधाना ॥३॥

दो॰॥ यांचा भंग न करि सक्यो द्विज वर सहित उछाह ॥
शुभग लग्न महँ करि दिओ शारद केर विवाह १॥

मध्य दिवस भा मंगल काजा ॥ सायं समय श्रीवर महराजा ॥
संध्या करन हेतु मुनि राई ॥ सर तट गमन्यो जन सुखदाई
संध्या करि विधि सों द्विज राया फिरत फैलि गो तम समुदाया
मारग में विषधर डसि गयेउ विगत प्राण श्रीवर तब भयेउ
श्रीवर केरे मरत सुजाना ॥ भा अति शोक न जाय बखाना
रोवहिं सब वर बंधु जनाली ॥ समधी दुख गति कहि नहिं जाती
कियो वराति न वर तन दाहा ॥ गो निज २ ग्रह विगत उछाहा
शारद विधवा सहि दुख भारी ॥ रही पिता ग्रह जनक दुलारी ॥

भोजन वसन रुचिर मिलि जांहीं । पति वियोग कर दुख मन मांहीं
एहि विधि वसहि मातगृह वाला । कछुक मास परिमित गा काला

सो॰॥ नैध्रुव श्री मुनि नाथ अंधन्द्द तर एक दिन ॥ २ ॥
गहे शिष्य के हाथ गये शारदा के भवन ॥ २ ॥

दो॰॥ शारद के सब बंधुजन गये रहे कुछ काम ॥ २ ॥
कन्या देखा अंध मुनि आये हैं मम धाम ॥ ३ ॥

शारद वाला मन हर्षाई ॥ २ ॥ इष्ट देव सम लीन्हो जाई ॥ २ ॥
स्वागत श्री मुनिवर जन पावन । बैठहु आसन लेहु सोहावन ॥
करौं नाथ पद कंज प्रनामू ॥ करौं कौन राउर प्रिय कामू ॥
अस कहि प्रेम सहित पग धोये । व्यजन द्वार मारग श्रम खोये
वहुरि मृदुल आसन बैठारी ॥ कीन्हो उद्वर्तन वर नारी ॥
पुनि मुनि वर मज्जन करि लीन्हो । देव समर्चन विधि सों कीन्हो
बैठे सुख आसन मुनि राई ॥ तब शारद पूजा लै आई ॥
माला धूप तथा अनुलेपन ॥ प्रेम सहित कीन्हो मुनि पूजन
पुनि शारद भोजन करवाये । तृप्त भये मुनि वर हर्षाये ॥
मन प्रसन्न अतिशय मुनिराई । एहि विधि आशिष दियो सुनाई

सो॰॥ भर्त्ता सहित विहार करहु सुलोचनि यथा रुचि
ह्वै है तनय उदार तुम्हरे सब गुन में प्रवर ४ ॥ २ ॥

दो॰॥ अति कीरति एहि लोक में ह्वै है सुमुखि तुम्हारि
तो हि पर होहि प्रसन्न अति श्री गिरिजा त्रिपुरारि

एहि विधि सुनी अंध मुनि वानी । शारद निज उर विस्मय आनी
हाथ जोरि मुनि कहं शिर नायो । द्विज तनया एह वचन सुनायो
मुनिनायक फुर वचन तुम्हारा । कबहुं न मृषा होय संसारा ॥
मंद भाग मैं हौं मुनि नायक । मोमें किमि ह्वै है फल दायक

सुभग वृष्टि जिमि ऊसर पाई । सुनी माहिं जिमि कृपा सोहाई
तथा मंद भागिनि मोहि पाई ॥ ह्वै है विफल वचन मुनिराई ॥
मैं विधवा मुनि नाथ सुजाना । प्रथम कर्म वश ज्ञान निधाना
राउर वचन फलै मोहि मांहीं । सो विधि रेख परति मोहि नाहीं
मुनि शारद वानी मुनिराई ॥ तासु उतर एह गिरा सुनाई ॥
तोहि देखे विन सुमुखि सयानी । यद्यपि अंध कही मैं वानी ॥
तदपि करहि जो मोर सिखायो । ह्वै है सब आशिष जो पायो ११

दो· ॥ उमा महेश्वर नाम व्रत जो तैं करव सयानि ॥ ॥
भोगिहै तासु प्रभाव सों उत्तम श्रेय सुवानि ॥ ॥

जो राउर अनुशासन होई ॥ वरु दुष्कर करिहौं मैं सोई ॥
वरनहु प्रभु व्रत केर विधाना ॥ मुनि वोले मुनि नाथ सुजाना
अगहन तथा चैत जव होई ॥ शुक्ल पक्ष शुभ दिन युत सोई
निज गुरु वर अनुशासन पाई । व्रत आरंभ करै मन लाई ॥ ॥
कृष्ण शुक्ल अष्टमी सयानी ॥ उभय पाख चौदशि शुभ जानी
प्रथमहि करि संकल्प सुजाना । विधि सों करि प्रभात अस्नाना
देव पितर तर्पण निर्वाही ॥ बहुरि व्रती अपने गृह जाही ॥
तहां रचै मंडप सुठि पावन ॥ वितानादि युत परम सोहावन
फल पल्लव वर कुसुम सोहाये । चहुं दिशि रुचिर होंहि जहं छाये
मंडप महं पचरंग सोहायो ॥ रचै पद्म सुंदर छवि छायो ॥
वाहर के चौदह दल जानो ॥ भीतर के वाइस उर आनो ॥
तासु मध्य षोडश रचि लीजै ॥ तेहि के मध्य अष्ट दल कीजै ॥
चौखूंटो तेहि करहि सुजाना । भीतर गोल रचै गुन वाना ॥

दो· ॥ जव चाउर की राशि तहं साधक देहि लगाइ ॥ ॥
तेहि पर घट धारन करै सहित कूर्च मुनिराय ॥ ७ ॥

= रूं इति बीजं

कलशोपरि वर वसन सोहावा। धरे स्वर्ण संयुत मन भावा॥
कंचनमय शिव गौरि बनाई। दुइ प्रतिमा तहँ धरे सोहोई॥
प्रेम सहित पूजे मन लाई॥ यथा विभव विस्तार बढ़ाई॥
प्रथम माहि पंचाम्रत अस्नाना। बहुरि शुद्ध जल सों गुनवाना॥
ग्यारह रुद्र जपै लौ लाई॥ तथा पंचाक्षर मुनिराई॥ ९॥
अष्टोत्तर शत जपहि सुजाना॥ अभिमंत्रित मूरति गुनवाना॥
करि कै कलशोपरि संस्थापन। करै यथाविधि देव समर्चन॥
पुन्न्यासन करि सहित विधाना। धारन करै श्वेत परिधाना॥
बहुरि पीठ अभिमंत्र्य सुवानी। आप्रणसंयमन करहि सयानी॥
हाथ जोरि शिव कहँ शिर नाई। एह संकल्प पढ़ै मुनिराई १०

छं॰॥ सौ जन्म महँ जो घोर पातक नाथ मो सन बनि परे
तिन अघन के प्रभु नाश हित एहु करहिँ पूजन रावरे
सौभाग्य विजयारोग्य धर्म श्वर्प वृद्धि सोहावनी
पुनि स्वर्ग अरु अपवर्ग की गति देहु मोहि मनभावनी
सो॰॥ एहि विधि व्रती सुजान सावधान संकल्प करि
अंगन्यास विधान करि ध्यावै शिव गौरि कहँ ८॥

कुंदु इंदु सम धवल शरीरा॥ नागाऽऽभरण गजाजिन चीरा
चारि भुजा धारी श्री शंकर॥ वेर सँग अभैय परशु लीन्हे कर
कोटि तरुन रवि सरिस प्रकाशा। जिन सों जग आनंद विलाशा
पीत जटा शिर परम सुहाये॥ सुरसरि जल मंडित छवि छाये
उरग राज फण मय मनभावन। महामुकट शिर परम सोहावन
चंद्रकला मंडित सुखधामू॥ उरगांगद भूषण अभिरामू
भाल विलोचन शंभु सुजाना। रवि शशि अनल नयन भगवाना।
नानाभरण विभूषित शंकर॥ बैठे रत्न सिंहासन ऊपर॥ ३॥

दो॰ नीलकंठ के वाम दिशि गौरी रुचिर विलास ॥ ८८ ॥
वाल दिवाकर अयुत सम तन द्युति परम प्रकाश ८९

वाल वेष तनु अंग सुहाये ॥ वाल चंद्र शेखर छवि छाये ॥
अंकुश पाश वराऽभय धारनि चारि भुजा वर जग रख वारिनि
सुमुखि प्रसन्न अंव दुखहारिनि अंवा लीला सरस विहारिनि
लसत कुरवक अशोक सुमन वर चंपक अरु पुन्नाग रुचिर तर ॥
इन को शिर अवतंश सोहाये। वरनि न जाय महा छवि छाये।
विकसित मल्ली दाम सँवारी अलका वलि सुघुमाऽ अति भारी
क्षुद्र घंटिका मुखर मनोहर ॥ राजत जघनाभोग रुचिर तर
अति उदार किंकिणि वर जाला श्री पद नूपुर परम विशाला
गंड विंव दर्पण छवि हारी ॥ कुंडल रत्न जडित द्युति कारी ॥
विंवाधर की द्युति अरुनारी ॥ तेहि सों रुचिर दशन छवि भारी

दो॰ ॥ ग्रीवा भूषण रत्न मय जिन कर मोल अपार ॥
अधिक विराजहिं मातु के उर में तारा हार ९० ॥
नव मानिक के रुचिर अति कर कंकण छवि देहिं
अंगद अरु मणि मुद्रिका चित वर्तहिं रि लेहिं ९१

पहिरे रत्न वसन परिधाना ॥ रत्न माल नहिं जाय वखाना
युग उरोज पीनोन्नत भारी ॥ पंकज कमल के छवि हारी ॥
लीला लोल अपांग भवानी ॥ भक्तानुग्रह दानि सयानी ॥
शंभु पिता जग मातु भवानी एहि विधि ह्वै मूरति उर आनी
जपहिं मंत्र तद्रूप उदारा ॥ ८९ ॥ करै वहुरि पूजा विस्तारा ॥
ह्वै प्रतिमा को करि आवाहन करिये आसनादि परिकल्पन
शुचि जल मांहि सुगंध मिलाई देय अर्घ एहु मंत्र सुनाई ॥ ८९ ॥

सो॰ ॥ नौमि उमा वर नाथ वरद ऋषभ त्रैलोक पति

त्र्यंबक हमहिं सनाथ करहु गृहण कर अर्घ यह २२

दो॰॥ शरणागत भय हारिणी नौमि देवि वर दानि ॥
गृहण करो एहि अर्घ को श्री अंबिका भवानि २३

एहि विधि तीन वेर व्रत धारी ॥	देहि अर्घ द्वै मंत्र उचारी ॥ ६ ॥
गंध पुष्प आखत वर भामिनि	धूप दीप विधि सों गजगामिनि
पाय सघृत युल मधुर सोहाई	धरहि भोग आगे मुनिराई ॥
मूल मंत्र सन व्रती सुजाना ॥	करि शत आहुति हवन विधाना
वुहुरि भोग कर साज वटाई ॥	करै धूप आरति मन लाई ॥
पान समर्पै मन अभिरामा ॥	पुनि २ करै सप्रेम प्रनामा ॥
द्विज दंपति पूजे मन लाई ॥	देय दक्षिणा तिन्हहि जेंवाई
एही रीति सांरु हू को पूजन ॥	करि पुनि पाय विप्र अनुमोदन

सो॰॥ वनो क्षीर में जौन हविष्यान्न भोजन करै ॥ ८ ॥
निशा समय गहि मौन एही रीति सों साल भरि १४
व्रत कीजे मन लाय उभय पाख महं भामिनी ॥
जवहिं वर्ष ह्वै जाय व्रत को उद्यापन करै ॥ १५

दो॰॥ पात रुद्री के जाप सों द्वै मूरति अन्हवाय ॥
आगमोक्त वर मंत्र सों पूजै भक्ति दृढाय १६
वस्त्र हेममय कलश युत प्रतिमा सहित सयानि
सदाचार निज गुरु वरहि देय सकल सन्मानि १७

द्विज भोजन करवाय सुजाना ॥	करि द्विज पूजन सहित विधाना
देहि दक्षिणा विनय सुनाई ॥	हेम वसन कपिलादि सोहाई
भोजन करै द्विजाऽऽ यसु पाई	इष्ट वंधु संयुत हर्षाई ॥ ९ ॥
जो एह व्रत त्रिलोक विख्याता	करि सेवै शंकर सुर त्राता ॥ १० ॥
सप्त त्रय पानिज कुल उद्धरई ॥	आभिमं विषय भोग सो करई

इंद्रादिकलोकपग्रहजाई ॥ रमैभोगअतिदुर्लभपाई ॥
ब्रह्मधामहरिलोकविशाला शिवपुररमैकल्पशतकाला
विपुलभोगतहँभोगिकरोरी लीनशिवचरनहोयबहोरी
पुनिमहाव्रतएहुसुखदाई ॥ जोकरिहौशिवभक्तिदृढाई ॥
अतिदुर्लभअभिलाषउदारा पूरेह्वैहैएहिसंसारा ॥ २२ ॥
एहिप्रकारजबमुनिसमुझायो शारदउरआनंदअतिछायो
मुनिवरबचनपरमहितजानी शिरमाथेधरिलीनसयानी ॥

दो॰ ॥ तबआयोशारदपिताजननिबंधुसमुदाय
देखाकरिभोजनसुखीबैठेहैंमुनिराय ॥ १८ ॥

तुरतहिमुनिसमीपचलिआये हाथजोरिसबहुनशिरनाये ॥
इवहु रहमपरमुनिराई ॥ एहिविधितिनबहुविनयसुनाई
शारदकृतपूजनमुनिपावा ॥ व्रतउपदेशसुनामभावा ॥
मनमेंसकललोकहर्षाई ॥ हाथजोरिएहविनयसुनाई ॥
मुनिनायकममग्रहपगुधारा भयोसफलएहधामहमारा ॥
धन्यधन्यहमसबमुनिनाथा ॥ सहकुलपावनकियेसनाथा ॥
एहशारदकन्यासुकुमारी ॥ विधवाभैपितुमातुदुलारी ॥
कठिनकर्मगतिनहिंकहिजाई उल्लंघनतेहिकरकठिनाई

सो॰ ॥ सोएहिनेरउरचरनशरनगहीमुनिनाथ ॥
दुखसागरसोंकाढिप्रभुएहिकोकरौसनाथ १९

आपकृतबलौरहहुसुजाना ॥ हमरेग्रहढिगकृपानिधाना
एहिमठमेंबसियेमुनिराई ॥ मज्जनपूजनउचितगोसाई
एहशारदसेवासबकरिहै ॥ तवसमीपव्रतविधिअनुसरिहै
जौलौतवसमीपमुनिराया ॥ पूजहिव्रतक्रमनायसिखाया
तौलौंअवशिरहोमुनिनाथा हमसबकोप्रभुकरहुसनाथा

शारद के मातापितु भाई ॥ २॥ एहि विधिजव वहु विनय सुनाई
कहितथेति वानी सुखदाई ॥ तेहि मठ में ठहरे मुनिराई ॥

सो॰ ॥ जिमि सिखयो मुनिराय ताही क्रम सो शारदा
पूजन व्रत मन लाय उमा शंभु को करै नित २०

इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे उमा माहेश्वर व्रताचरण प्रकाशनं नाम अष्टादशो विश्रामः १८

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः ॥ अथो नविंशः ॥

सो॰ ॥ गुरु समीप मुनिराय करहि शारदा व्रत सदा
नेम किये मन लाय एहि विधि पूरन वर्ष भरि १

वीतो संवत परिमित काला ॥ पितु गृह में तव शारद वाला ॥
व्रतको उद्यापन करवायो ॥ विप्रन को विधि सहित जेवायो
दीनि दक्षिणा विनय सुनाई ॥ विदा किये द्विजवर शिर नाई
जननि जनक अनुमोदन पाई तेहि दिन शारद नेम दृढाई ॥
जपहि धरे व्रत मंत्र उदारा ॥ जो उपदेश भयो मुनि द्वारा ॥
जब प्रदोष वेरा शुभ दाई ॥ पूजे शंकर प्रेम वढाई ॥
निज गृह निकट रुचिर मठ माहीं वैठी शारद श्री गुरु पाहीं ॥
जप अर्चन विधि निरत सयानी परमेश्वर ध्यावै मन वानी ॥
निशि जागरन में हर्षाई ॥ वैठी शंकर ढिग मन लाई ॥

सो॰ ॥ शारद गुरु मुनिराय गिरिजा को शारद सहित ॥
जप तप ध्यान लगाय सव विधि परितोषित कियो २

दो॰ ॥ तासु भक्ति व्रत नेम वश मुनि तप योग समाधि
मुदित भवानी प्रगट भै दिव्य रूप निरुपाधि ॥ ३॥

गौरी प्रगट भई जेहि काला ॥ जगमय मूरति परम विशाला

अंध मुनीश लहे द्वै लोचन॥ पायो जगजननी को दर्शन॥
देखि मातु के चरन सोहाये॥ शारद मुनिवर अति हर्षाये
दुहुन कियो तव दंड प्रनामा भक्ति भाव पूरन उर धामा॥
नयन वारि निज तन अन्हवाये परे चरन नहिं उठैं उठाये॥
देखि दशा जग मातु भवानी॥ हर्षित दिये उठाय सयानी॥
कृपा प्रेम परिपूरन गाता॥ मृदु बानी बोली जगमाता

सो॰॥ हौं प्रसन्न मुनिराज तो पर शारद द्विज सुता
कौन तुम्हारो काज कहहु ताहि पूरन करौं ४॥

देवनहू कहं दुर्लभ जोऊ॥ अभिमत पावहु गे तुम सोऊ
देखि देवि गिरिजा हर्षानी मुनिवर बोलत भे एह बानी॥
शारद नाम विप्रवर कन्या॥ गुरु सुर भाव भरी अतिधन्या
विधवा भई कर्म कठिनाई॥ सो मैं मातु जानि नहिं पाई॥
दियो मुदित वरदान विशाला पतिसंग तुम विहरहु वहु काला
होंहि पुत्र तव एह मम बानी॥ करहु सत्य जगजननि भवानी

॥ चौपाई ॥

अस कहि मुनि २ कियो प्रनामा सुनि बोली गिरिजा अभिरामा
पहिले भव शारद मुनिराया॥ द्राविड विप्र की दूसरि जाया॥
भामिनि नाम चतुर अति रूपा कियो नाह वस भाव अनूपा
याही में आसक्त सुजाना॥ मोह यंत्र यंत्रित विधि नाना॥
एहि कारन कवहूं द्विजराई॥ जेठि नारि के ढिग नहिं जाई॥
भयो न पतिसंग भोग समाजा रही पुत्र वर्जित मुनिराजा॥
सदा शोक संतप्त सुजाना॥ काल पाय त्यागे तेहि प्राना॥
रहत रही भामिनि गृह तीरा एक भूमि सुर युवा शरीरा॥
रुचिर अंग भामिनि लखि पायो तेहि भूसुर कहं काम सतायो
एक दिवस तेहि कर गहि लीन्हो क्रोध सहित एहि वारन कीन्हो

याही को सुमिरत दिन रयना॥ मरल भयो द्विज अवगुन अयना

छं॰॥ जेहि हेतु निज भर्त्तार कहँ एहि आपनी वश करि लियो

अरु जेठि जाया सो वहि मुख नाथ को पुनि करि दियो॥२॥

तेहि पाप सों एह शारदा एहि जन्म में विधवा भई॥२॥

दुख दिये दुख पावै सनातन रीति नहिं कछु एह नई १

सो॰॥ करहिं जो खोटी नारि जाया पति अनहित क्रिया

विधवा होंहि कुमारि एक विंश लौ जन्म महँ ५॥

मम पूजा उपवास जो एहि नेम महित किये॥

भयो पाप सब नाश तवहीं तासु प्रभाव सों ६॥

विरह विकल मृत जो द्विजराई। सोई एहि भव में पुनि आई॥

वर ह्वै पाणि गृहण तेहि कीन्हो। सर्प डसित निज तन तजि दीन्हो

प्रथम जन्म को पति एहि केरा॥ भयो विप्र गृह धन वहु तेरा

पांड्य देश महँ वस एहि काला। दार साहि नग रह साज विशाला

प्रति निशि तेहि संग संगम पैहै। स्वप्ने जागृत सम सुख ह्वै है॥

त्रिशत षाष्टि योजन मुनि नायक। वसहिं विप्र शारद रति दायक

कर्म विवश सोउ द्विज मुनिराजा। एहि संग प्रति निशि भोग समाजा

लहिहै दरश परस्पर केरा॥ पैहै चिर लौ सुख वहु तेरा॥

दो॰ स्वप्न संग वश शारदा लहिहै पुत्र सुजान॥२॥

अंग सहित सब वेद को पारग ज्ञान निधान॥२॥

चिर संगम सों होहिगो जो सुत वर मुनिराय॥

देखाहिगो द्विज स्वप्न महँ प्रति निशि प्रेम हढाय

सो॰ मम आराधन कीन पाहिले भव में शारदा॥२॥

अव हम दर्शन दीन देन हेतु वरदान के॥ ८॥

मुनिवर कहँ एह चरित सुनाई। कह्यो देवि तेहि मन हर्षाई॥

हे वडभागिनि सुनु मम वचना। जब या वहु निज पतिगुन अयना।
स्वप्न समागम वश तेहि जानी। परम चतुर लैहो यहि चानी।
वहु देखिहै तुम्हहि सयानी। सकल स्वप्न लक्षण अनुमानी।
उभया ॥ ५ ॥ पै रुचिर तव ह्वै है॥ दूनहु को संशय मिटि जैहै॥
तेहि निज तनय सु समर्पण करहू। व्रत फल वहुरि तासु कर धरहू।
तेहि दिन सों तेहि के वश माहीं। रहहु सदा तन संगम नाहीं॥
स्वप्न समागम जो हम गावा। देहत्याग लौ रहिहि सो हावा।
तजे देह जव ह्वै ज सुख दाई। सती होउ तेहि संग हर्षाई॥
पतिसह ऐहौ तव मम धामा। तव सुत सकल लोक अभिरामा।

सो॰॥ सव संपति सुख भूरि सुंदरि तव सुत पाइ है।
है है सव दुख दूरि अंत लहहिंगे परमपद १०॥
एहि विधि सकल सुनाय देय मनोरथ शारदहि।
है देखत मुनिराय गौरी अंतर्हित भई ॥ ११ ॥
एहू पायो वरदान करुनानिधि जगमातु सों ॥॥
कीन्हो गुरु सन्मान परमानंद में मगन है ॥ १२॥

विगत रयन जव भा भिनुसारा। पाये जिन मुनि नयन उदारा।
शारद मातु पिता ढिग आई॥ निशा चरित सव दियो सुनाई।
सव सन विदा मांगि मुनिराया। शारद घर करिकै अति दाया॥
तिन कर सव विधि काज संवारा। गे मुनिनायक रुचि अनुसारा।
तेहि दिन सों शारद हर्षानी॥ स्वप्न समागम लहहि सयानी।
वहुत दिवस लौ रति सुख पायो। गौरिप्रसाद भयो मन भायो।
स्वप्न समागम सो मुनिनायक। भयो गर्भ जन अचरज दायक।
पति विहीन शारद अनुमानी। सुनि २ शारद गर्भ कहानी॥
सव वहुन धिग एह गिराउचारी। कहैं जारिणी है एह नारी॥ ६॥

दो॰ ॥ सर्प डसो जेहि नाह को तासु वंधु मुनिराय ॥ ८ ॥
दुः सह सुनि एह वत कही चालि आये सव धाय २३ ॥

ग्राम वृद्ध पंडित द्विज राजा ॥ शारद पितु गृह जुरी समाजा
गर्भवती शारदा वोलाई ॥ ८ ॥ नीचे मुख कीन्हे तहं आई ॥
क्रोध सहित काहू ललकारी ॥ एक नदीन्ही पीठि पछारी ॥ ८ ॥
अरी कुवुद्धि नएकु कह कीन्हा जार पंथ में पगु धरि दीन्हा
हमरे कुल कहं अपयश दीन्हो वहुतन एहि विधि तर्जन कीन्हो
कहैं परस्पर जन समुदाया उचित कौन एहि केर उपाया
अति निर्दय कोई द्विज राया ॥ एहि विधि वरनन कीन उपाया
पाप वुद्धि अति कन्या एहा ॥ सुग कुल नाशिनि विन संदेहा
एहि को करि शिर वपन सुजाना काटिलेहु नाशा अरु काना ॥
वहुरि नाम एहि कर नहिं लेहू तुरत ग्राम वाहेर करि देहू ॥
एहि विधि सव वहुन शोचि विचारी ॥ सोइ करिवे की कीनि तयारी
भई तुरत तेहि छिन नभ वानी नहिं पापिनि शारदा सयानी
कुलदूषन एहि ने नहिं कीन्हा निज व्रत भंग होन नहिं दीन्हा
सुंदर एहि कर सव आचरनू ॥ एहि को चरित दोष दुख हरनू
अव सों लै जारिनि जेः कोई ॥ कहिहै पुरुष नारि किन होई
सो अति दुस्व दंड एह पैहै ॥ तुरत जीव ताकी फारि जैहै ॥

दो॰ ॥ व्योम गिरा सुनि लोग सव हर्षित भे मुनिराय
जननि जनक मन मोद जो सो नहिं वरनि सिराय २४

ग्राम वृद्ध सुनि सुनि नभ वानी अति अचरज सव वहुन भय मानी
सकल सभाजन मुख अंवधाई दुरघरि का रहिगे अरुगाई ॥
तिन महं कोउ निश्चय नहि मानी कहन लगे मिथ्या नभ वानी ॥
द्विधा भई रसना तिन केरी ॥ वमन करी कृमि राशि घनेरी ॥

बाल वृद्ध सब लोग लोगाई । सकल प्रसंशाहिं अति हर्षाई
तब शारद कुल जन समुदाई । करी तासु पूजा मन लाई ॥ २ ॥
साधु २ ध्वनि सब कोउ करहीं । हर्ष विंदु लोचन सों गिरहीं ॥
कुल नारिन कहँ भा विश्वासा । प्रमुदित दूरि भई सब त्रासा ॥
तहाँ अपर बोले एह बानी ॥ देव गिरा सांची हम जानी ॥
धरा गर्भ केहि भाँति सयानी । भई शील ब्रत की नहिं हानी ॥

दो॰ ॥ एहि प्रकार सब भाजन अतिशय विस्मित देखि
एक वृद्ध बोलत भयो जेहि को ज्ञान विशेखि ९५ ॥

जो कछु देखि असुनि असुजाना । माया मय सब विश्व बखाना
क्षणभंगुर जानहु संसारा । सुघट कि दुर्घट कौन विचारा ॥
अकथनीय मिथ्या पुनि सोई । माया विवश प्रगट नित होई ॥
सो माया ईश्वर वश रहई । ईश चरित को जानत अहई
भये बहुत अचरज जग मांहीं । कछु सुनिये सब जन मोहि पांही
धूपकेतु नृप सुयश घनेरा ॥ जल में रेत गिरो तिन केरा ॥
तेहि जल को गनिका कृत पाना । रहा गर्भ एह सब जग जाना
मुनि विभांड को शुक्र सहित जल । पान करत हरणी वाही थल
रह्यो गर्भ सुंदर सुत जायो ॥ ऋष्यश्रृंग मुनि नाम कहायो
तिमि सुराष्ट्र नृप कर मुनिराया । तुरतहि हाथ छुअत श्रृंग जाया
रहा गर्भ एह विदित कहानी । भयो पुत्र मुनि तापस ज्ञानी
तैसेहि सत्यवती वर नारी ॥ मीन उदर जन्मी द्युति भारी ॥
तिमि महिषासुर अतिबलवाना । महिषी जायो सब जग जाना

सो॰ ॥ बहु नारिन मुनिराय प्रथम गर्भ धारन किये
ऋषि मुनि करुना पाय तथा रोहिणी गर्भ पुनि ९६
मथुरा महँ वसुदेव नंद गाँव महँ रोहिणी ॥ २ ॥

तासु गर्भ वलदेव गये देवकी गर्भ सों १७ ॥
तेहि ते द्विज समुदाय कछु या में संशय नहीं
अघटित हू है जाय सुर मुनि के वर शाप सों

मुनिवर शाप भयो जग जाना। शांवउदर ते मुशल सुजाना
तिमि युव नाश्व महीपति केरे मुनिवर मंत्र प्रभाव घनेरे ॥
घट जल पिअत गर्भ रहि गयेउ भेदी कुक्षि पुत्र तव भयेउ ॥
शारद हू अति नेम दृढाई ॥ कीन्ही ऋषि सेवा मन लाई
वहुरि महाव्रत एहि करि पावा रहा गर्भ शुचि तासु प्रभावा ॥
रहा सिजाय पूछें मृदु वानी ॥ शारद सों जे नारि सयानी ॥
दूर होव सव कर संदेहा ॥ सवन कह्यो सुंदर मत एहा
तव शारद निज निकट वोलाई पूछा नारिन ढिग वैठाई ॥
अति अद्भुत निज चरित सुहावा तिन कहं शारद वरनि सुनावा

दो॰ ॥ सव जाना तव सकल जन करि शारद सन्मान
मुदित प्रसंशा करत सव गे निज भवन सुजान १८

कछु दिन पर शुभ अवसर आयो। शारद ने सुंदर सुत जायो
कमल नयन वालक गुनवाना सविता सम अति तेज निधाना
अति उदार लक्षण सुखदाई वाल वयस विद्या वहु पाई
शारदेय पायो शुभ नामू ॥ भा जग विदित लोक अभिरामू
गुरुवर कीन्ह तासु उपनयना वेद पठन लागो गुन अयना
अष्टम वर्ष पठो ऋग वेदा ॥ नवये यजुर्वेद विन खेदा ॥
दश मे साम वेद पढि लीन्हो निज गुरु को कछु श्रम नहिं दीन्हो
कछु दिन वीति गये एहि भांती पुनि आई पावन शिवराती
गये लोग सव देश निवासी गोकरणहि वटु गृही उदासी
शारद हू सह निज परिवारा मुदित गोकरण कहं पगु धारा

जातपंथ महँ तेहि लखि पायो। प्रथम जन्म भर्त्ता मन भायो ॥
स्वप्न दृष्ट लक्षण सब देखी ॥ उर उमड़ी अति प्रीति विशेखी
पुलकावलि पूरन तन मांहीं ॥ चखजल गिर नदि अस्रो तेहि नांहीं
ताहिवि लोकहि एक टकबांधे मारग में ठाढी चुप साधे ॥२॥
द्विजवर हू शारद कहँ देखा स्वप्न सुलक्षण लखे विशेखा
तुरतहि ताहि लियो पहिचानी स्वप्न काल रति दायनि जानी ॥
तेहि में जन्म लियो निज द्वारा स्वप्न लखा सोउ दीखकुमारा
विस्मय परम तासु उर छायो। शारद के समीप तव आयो ॥

सो॰ प्रथम कह्यो एहु वयन तुम सन कुछु पूछौं चहौं ॥२॥
वहुरि विप्रगुन अयन रहासि देश महँ लैगयो २०

को तुम वरनौ सुमुखि सयानी कासु प्रिया मोहि कहहु वखानी
कौन देश केहि की तुम जाई ॥ नाम कहा मोहि देहु सुनाई ॥
एहि विधि जब पति वचन सुनाये शारद के लोचन भरि आये ॥
वहुरि चरित निज दियो सुनाई विधवा भै जेहि विधि लरिकाई
पुनि पूछा द्विज वर म्रदु वानी केहि को एहु सुत कहहु सयानी
विधु सम सुत केहि के उर मांहीं रहा सुमुखि वरनो मोहि पांहीं
पति की सुनि शारद एह वानी तासु उतर एहु दीन्ह सयानी ॥
परम विशारद एहु सुत मेरा सब विद्या गुन ज्ञान घनेरा ॥
शारदेय संज्ञा गुन धामा ॥ जग में लही ख्याति मम नामा।
एह वानी सुनि द्विज हँसि दीन्हो वहुरहु प्रश्न तर्क युत कीन्हो ॥
भामिनि सुनि २ चरित तुह्मारा मम उर विस्मय होहि अपारा
होत विवाह नाह मरि गयेउ केहि प्रकार वालक तब भयेउ
तर्क सहित सुनि द्विज वर वानी पाई अतिशय लाज सयानी ॥
कछुक देर रोदन तेहि कीन्हा पुनि धीरज धरि उत्तर दीन्हा

सो॰।। जानि परिहास सुजान करहु मोहि तुम ज्ञानहू ।
तुम को मैं गुनवान भली भाँति पहिचानहू ॥ २१

एहि में परम प्रमाण उदारा । जानि लेहु मन मोर तुम्हारा
अस कहि सब निज चरित बखाना । जेहि प्रकार पायो वरदाना
व्रत फल अहै समर्पण कीन्हा । तेहि कहँ पुनि बालक दै दीन्हा
पायो शुभ बालक गुनवाना । द्विजवर अति मन में हर्षाना
शारद मातु पिता सुख पाई । लेगो शारद कहँ द्विजराई ॥
विप्र भवन शारद बहु मासा । बसि पायो सब भाँति सुपासा
भयो विप्र कर जेहि छिन मरनू । सती भई कीन्हो अनुगमनू
देवरूप तब दंपति पाई ॥ दिव्य बिमान बैठि हर्षाई ॥
लहे भोग सब मन अभिरामा । प्रमुदित जात भये शिव धामा
एह चरित्र पावन मैं गायो ॥ भुक्ति मुक्ति प्रद परम सोहायो
पढहि सुनहि नर वर मन लाई । तिनके धन संपति अधिकाई
आयु बढै आमय सब जांहीं । धान्य बहुत तिनके गृह मांहीं
रहैं सोहाग भरी नारी जन । सुख संतान केर एह साधन

सो॰।। मुनिवर दियो सुनाय एह अघौघ नाशन चरित
श्री गौरी गिरिराय व्रत पावन को कथन शुभ
एकहु दिन मन लाय पढै सुनै जो भक्ति युत ॥
पाय भोग समुदाय जाहि अंत महँ परम पद २३

इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री स्वामी ७ स्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे शारदाख्यानं नाम एकोनविंशो विश्रामः १९ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः ॥ अथ विंश

दो॰।। अब महिमा रुद्राक्ष की कहौं मुनीश सुजान ॥

सर्व पाप तिनके हरै पढैं सुनैं धरि ध्यान १॥

भक्त अभक्त नीच किन होई। अथवा परम नीच पुनि सोई
श्रीरुद्राक्ष धरै जो कोई॥ सब पापन सों छूटहि सोई
जो रुद्राक्ष धरै तन मांहीं॥ एहि सम और पुन्य कोउ नांहीं
जे मुनिवर ज्ञानी जग अहहीं। याहि महाव्रत ते सब कहहीं
सहस प्रमाण धरै जो कोई। श्रीशंकरव्रत धर पुनि सोई
ताहि नवैं सब देव प्रधाना॥ सो नर यथा रुद्र भगवाना
मिलहिं सहस परिमित जो नांहीं। षोडश २ द्वौ भुज मांहीं॥
धरहि शिखा में एक सुजाना। द्वौ कर में चौविंशगुन वाना॥

दो॰॥ बत्तिस धरिये कंठ में चौंतिस मस्तक मांहि
अष्टोतर शत माल सों धरै न्यून उर नांहि २॥

कै कै द्वौ श्रुति में जो कोई॥ पूजनीय शंकर सम सोई॥
मोती मूंगा फटिक मिलाई। हेम रजत वैडूर्य सोहाई॥
जो नर प्रेम सहित मुनिराई। धरहि सो शिवस्वरूप ह्वै जाई
केवल हू जो परम सुजाना॥ यथालाभ पहिरै गुनवाना
तेहिके ढिग पातक नहिं जाई। जिमि दिनकर ढिग तम समुदाई
अक्षमाल सों जपहि जो कोई। तेहि नर को अनंत फल होई
और माल सों जाप सुजाना। ते तोहि फल पावै नाहिं आना

दो॰॥ जेहि के अंग रुद्राक्ष नहिं एकहु बहु फल हानि॥
तिमि त्रिपुंड बिन कहहिं मुनि भवानि: फल बिहानि

सो॰॥ मस्तक में धरि जोय शिर स्नान जो नर करै॥
ताहि महा फल होय सुरसरि मज्जन किये कर ४

जल अभिषेक बिना जो कोउ नर। प्रतिदिन पूजहि अक्षा निरंतर
शंभुलिंग पूजन फल जोई॥ निश्चय पावत है नर सोई॥

एक पांच ग्यारह मुख केरे ॥ तथा चतुर्दश मुख न घनेरे
शंभु स्वरूप जानि जो कोई पूजहि तेहि कहँ एह फल होई
महा दरिद्री जनकि न होई ॥ धनद विभूति लहत है सोई
इहाँ एक पावनि एह गाथा बुधवर वरनत हैं मुनिनाथा
कहत सुनत जो सब दुख हारी पावनि महा पाप क्षय कारी
काश्मीर को नृपति सुजाना भद्रसेन अति तेज निधाना

सो॰ ॥ तासु तनय बलवान नाम सुधर्मा बुध प्रवर
नृपति सचिव गुनवान तासु पुत्र तारक भयो ५

मंत्री सुत सुंदर जो जायो ॥ नृप सुत सखा भयो मन भायो
नृपकिशोर अरु सचिव कुमारा प्रीति परस्पर रूप उदारा ॥
विद्या साथ पढै मन लाई ॥ खेलहिं संग २ द्वौ हर्षाई ॥
उभय पुत्र की भै एह रीती ॥ रुद्राभरण धरैं अति प्रीती
भस्म अंग धारन पुनि करहीं शुभग मनोहर गात विचरहीं
कटक हार केयूर सोहाये ॥ कुंडलादि भूषन मन भाये
हेम रत्न निर्मित सब त्यागी अक्ष विभूषन के अनुरागी
माला कंकण कंठाभरनू ॥ धरहिं अक्ष निर्मित अघ हरनू
रुद्राभरण धरहिं एहि भाँती तहं अति प्रीति न सो कहि जाती

दो॰ ॥ हेम रत्न निर्मित रुचिर तिन्हहि न कबहु सोहाहिं
मांटी सम पाषाण सम ते भूषण दर्शाहिं ॥ ६ ॥

यद्यपि लोगन बहु समुझाये तासु त्यागतिन को नहिं भाये
नाम पराशर मुनि गुन गाये एक बेर नृप गृह चलि आये
श्री चतुरानन सरिस प्रभावा पूजा करि नृप शीश नवावा ॥
बैठे जब सुख सों मुनिराई ॥ तब नरेश एह गिरा सुनाई
महाराज जो एह सुत मेरा ॥ तिमि एह बालक मंत्री केरा ॥

अस्त्राभरण सदा द्वौ धरहीं। रुचिर रत्न भूषन परिहरहीं
रत्नविभूषण धारन हेतू॥ वहु समुझायो मैं मुनि केतू
करिउल्लंघन वचन हमारा। पहिरहिं सोइ नित प्रेम अपारा

दो॰॥ कवहूं काहू वाल कन कियो न एह उपदेश॥
स्वाभाविक इनकी प्रकृति केहि विधि भई द्विजेश ७

सुनि नृप वचन कह्यो मुनिराई। सुनु भूपति सादर मन लाई
प्रथम चरित द्वनहु सुन केरा। जेहि सुनि विस्मय होय घनेरा
नंदिग्राम पुरानन गायो॥ सव प्रकार शोभित मन भायो
नहाँ एक गनिका अभिरामा। नाम महानंदिनि गुन धामा
कहि न जाय तेहि को वररूपा। ललिताऽऽकृति शृंगार अनूपा
महाविभव तेहि के गृह मांहीं। वहु संपति नहिं वरनि सिराहीं
छत्र इंदु संकाश सोहावा॥ यान हेम निर्मित मन भावा
रुचिर दंड चामर वहु तेरे। हेम पादुका पुनि जेहि केरे
रत्न विभूषन वहु गृह मांहीं। सव अमोल वरने नहिं जांहीं
कुंकुम केसर गंध मनोहर। अंग कर्पूर विलेपन सुंदर
चित्र माल अवतंश सोहाये। मधुर रुचिर भोजन मन भाये

दो॰॥ वडे मोल के वहु वसन जग मग द्युति वहु भास
चंद्रकिरन सम सेज पुनि हेम पलंग सुप्रकाश ८॥

महिषी धेनु वहुत तेहि केरे। काज कुशल सेवक वहु तेरे
नव यौवन दासी वहु तेरी॥ वर भूषण अंग प्रभा घनेरी
गृह में अन्न भरो विधि नाना। वहु रंग लागे चित्र विताना
वहु साहु का रत्न समुदाया॥ धन संख्या को दिन मुनिराया
एहि विधि विभव सहित गुनखानी। काम विहारिनि परम सयानी
शिव पूजन नित करहि सप्रेमू। सत्य धर्म को अति दृढ नेमू॥

शंभुचरित में प्रीति घनेरी॥ श्रीशिव नाम टेक जेहि केरी॥

दो॰ शिवभक्तन के चरन में नवहि सदा नित नेम॥
उमानाथ पद भक्ति में निरत सदा दृढ प्रेम ६॥

रहा नृत्य मंडप तेहि के घर तहँ विनोद हित वैठि निरंतर
मर्कट कुक्कुट उभय जिआये तिनहिं अक्ष भूषण पहिराये
गीत गाय कर ताल वजावै दूनहू को तहँ नृत्य नचावै
तिनकी नृत्य देखि मन भाई विहँसहि सखिन सहित हर्षाई
वानर करण भरण सोहाये भुज केयूर धरे मन भाये॥
सिख योगनिका ताल निधाना नाचहिं नित प्रति वाल समाना
कुक्कुट पुनि कपि को सहकारी शिखा अक्ष मणिका शुभ धारी
नृत्य निपुण नित नर्तन करहीं देखत अचरज सों उर भरहीं

दो॰॥ एक वार तेहि के भवन आयो वणिक सुजान
धरे भस्म रुद्राक्ष शुभ निर्भम शिवव्रतवान ७॥

भस्म विशद तेहि कर के सुंदर पहिरे तहँ कंकण अद्भुततर
जिनमें महा रत्न विस्तारा॥ तहँ न अर्क सम तेज अपारा
तेहि कहँ गनिका आसन दीन्हा। हर्ष सहित पूजन बहु कीन्हा
वनिग हाथ वर कंकण देखी वोली अचरज मानि विशेखी
राउर कर कंकण अति सुंदर महा रत्न मय परम मनोहर
दिव्य नारि लायक एह भूषन निज वैचित्र्य हरहि मेरो मन
एहि विधि गनिका रुचि अति देखी। हँसि कह वनिग उदार विशेखी
महादिव्य एह रत्न निहारी॥ एहि में जो रुचि होय तुम्हारी
तौ तुम एह हम सों लै लेहू॥ एहि कर मोल हमहिं कह देहू
एहि विधि सुनि तेहि की मृदु वानी। वोली गनिका परम सयानी॥
हम उपजी गानिका कुल माहीं पतिदेवता नारि हम नाहीं॥

हमरे कुल कर एह अवहारा ॥ हमको उचित सदा ब्यभिचारा
रत्नखचित कर भूषन एहा ॥ जो मोहि देहो सहित सनेहा
तो मैं तीनि दिवस अरु राती ॥ पत्नी है सेवहुं वहु भांती ॥

सो॰ जो एहु वचन तुम्हार वीर वह्न भे नहिं म्रषा ॥
देहौं रत्न उदार प्रिया होउ मम तीनि दिन ११ ॥

दो॰ ॥ साखी एहि व्यवहार के रवि शशि परम उदार
सत्य सत्य पुनि सत्य कहि परशौ हृदय हमार १२

सो॰ ॥ तीनि दिवस अरु राति है हौं तव पत्नी प्रभो ॥
सेवहुंगी वहु भांति अस कहि परशौ तासु उर १३

कंकण ताहि समर्पण कीन्हा पुनि गनि कहि एहु आयुश दीन्हा
मणिमय लिंग नएह पारखाना जानहु एहि मम प्राण समाना
धरहु याहि करि यत्न उदारा लिंग हानि महं मरण हमारा
भलेहि नाथ कहि तेहि लैलीन्हा नृत्य भवन भीतर धरि दीन्हा
वहुरि तासु ढिग सो चलि आई रयन समय तेहि संग हर्षाई
पलंग मनोहर सेज सोहाई सुख सोई आनंद सरसाई
आधी राति गई जेहि काला नृत्य भवन में अनल विशाला
प्रगटी तुरत जरन गृह लागे कामिनि उठी पलंग निज त्यागे

सो॰ ॥ खोलि दिये तेहि जाय कुकुंद मर्कट वंध सों ॥
गये ते दूरि पलाय कारत अंग सो आगि कण १४

मंडप खंभ धरो पुनि जोई ॥ जरो लिंग खंडित है सोई ॥
देखि दशा दूनहुं दुख पायो ॥ वनिग नाथ दुख अति सरसायो
जरो लिंग जब प्राण समाना ॥ देह त्याग निश्चय दृढ ठाना ॥
भावि राग पुनि दुख अति भारी गनिका सन एह गिरा उचारी
जरो मोर शिव लिंग पिआरा रहा सोई मम प्राण अधारा

चहहुँ प्रिया अव एह तनु त्यागा भयो मोहि अति अधिक विरागा
शिव पद में निज हृदय लगाई करव प्रवेश अनल हर्षाई ॥
ब्रह्म इंद्र माधव किन आई ॥ वारहिं मोहि वहु हठ दर्शाई
तदपि भामिनि मैं मति धीरा तजव अनल महं अपन शरीरा
वनिगनाथ कर एहु हठ देखी गनिका भै मन दुखित विशेखी
तुरतहिं निज सेवकन पठाई वाहर नगर चिता रचवाई ॥
वनिगनाथ शिवभक्त पुनीता अनल प्रदक्षिण करि सुचिनीता
परम धीर मन आनि समायो ताप वार वनिता अति पायो ॥

सो॰ ॥ गनिका अति दुख पाय अपन कर्म निर्मल सुमिरि
सव निज वंधु वोलाय वोली एह करुना वचन ॥१५॥

सुभग रत्न कंकण में लीन्हा ॥ सत्य वचन एह भाषण कीन्हा
वनिता भाव तीनि दिन राती गहि सेवा करिहौं वहु भांती
वनिगनाथ श्री शिवव्रत धारे मरत भयो अति पाप हमारे
अनल प्रवेश कियो मम नाथा तथा मैं हूं जैहों जरि साथा ॥
मैं सधर्म चारिणि अस भाषा सो व्रत सत्य चहौं निज राखा ॥
सत्य सदा सव विधि सुखदायक जेहि के वश त्रिभुअन के नायक
सत्य समान धर्म कोउ नांहीं सकलै प्रतिष्ठित हैं तेहि पांहीं
स्वर्ग मुक्ति दायक पुनि सोई नहिं असत्य सन सद्गति होई

दो॰ ॥ तेहि ते पालव सत्य में करिहौं अनल प्रवेश ॥
यदपि वंधुजन कियो तेहि वारन वहु तनरेश

सत्य लोप कर भय उर आना प्राण त्याग निज मन अनुमाना
शिवभक्तन कहं सर्वसु दीन्हा ध्यान सदाशिव को वहु कीन्हा
अनल प्रदक्षिण त्रय पुनि दीन्ही तहं प्रवेश इच्छा तेहि कीन्ही
गिरत कुलाशान में तेहि देखी निज चरनन महं प्रीति विशेखी

प्रगटे तहँ शंकर भगवाना ॥ तेहि वारन कियो कृपानिधाना
देव २ देखे भव मोचन ॥२॥ चंद्रकला धर शंभु विलोचन
रविशशिपावककोटिप्रकाशा चाकित हृदय बाढी उर त्रासा
विह्वल त्रासित जरी कृत जानी कंपत देखि करुना सर सानी
वारिविलोचनिकरगहिलीन्हा एह कहि समाधान प्रभु कीन्हा
सत्य धर्म धीरज तव प्रेमू ॥ निज सेवा करनिश्चल नेमू
एह सब देखन हित वर नारी ॥ तव गृह वनिगनाथ वपु धारी
मैं आयो नहिं कछु संदेहा ॥ मायानल जारा तव गेहा ॥
रत्नलिंग हम दियो जराई ॥ पावक प्रविशो दुख सरसाई
गनिका जाति सदा छल कारिनि तन वंचक पुनि स्वैर विहारिनि
सो तुम सत्य सुमिरि निःशेषा मम सह कीन्हो अनल प्रवेशा

दो॰ ॥ तेहि कारन सुनु भामिनी अति दुर्लभ जे भोग ॥
सो तुम कहँ अव देऊँगो जिन्हहि चहैं सुर लोग २७

आयु परम करि देहूँ तुम्हारी विगत रोग संतति सुख भारी
जोइ २ चाह हृ परम सयानी सोइ २ देहौं सुनि एह वानी ॥
बोली गनिका बचन मनोहर सुनहु नाथ जनपाल कृपाकर
भूतल स्वर्ग रसातल मांहीं ॥ भोग चाह शंकर मोहि नांहीं
नाथ चरन पंकज तजि आना चहौं न दूसर मैं वर दाना ॥
मम दासी सेवक सुरराया ॥ और बंधु परिजन समुदाया
हृदय वाचि तव चरनन वारी सकल नाथ पूजा व्रत धारी
मोहि समेत इन सबहि कृपाला। देहि लोक निज करहु निहाला

सो॰ ॥ वहुरि जन्म भय घोर मुक्त करहु प्रणमहुँ चरन
साधु वचन सुहि तोर दियो तोहि वरदान एह २८

एह कहि प्रभु अनुमोदन कीन्हा। सब कहँ शंभु परम पद दीन्हा

मंडफदाह भयो तेहि काला॥	कुक्कुट कपि भये विकल विहाला
गृह सें वहुत दूर गे भागी॥	गये न ते शिवलोक अभागी
मर्कट कपि दून्ह नरराई॥	त्याग कियो तन अवस राई
मर्कट आप भयो तव वालक	कुक्कुट भयो सचिव कुल पालक
नरपति अक्षाभरन प्रभावा	जन्म महाकुल में इन पावा॥
प्रथम जन्म अभ्यास नरेशा	पहिरहिं अक्ष विनहि उपदेशा
एहि भव महं करि शिव आराधन	जैहैं शंकर लोक मुदित मन॥

दो॰॥ युगल वाल गाथा कही शिव भक्ता इतिहास
और सुनन की कहा रुचि सो पुनि करौं प्रकाश १

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्रीस्वामी ७ रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंदभारती प्रदर्शिते कैलाशमार्गे रुद्राक्ष माहात्म्य प्रकाशनं नाम विंशतिमो विश्रामः २०

श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीशंकराय नमः॥ सोरठा॥

सो॰॥ कही महामुनिराय सुनि वानी पीयूष सम
नरपति सुनि हर्षाय हाथ जोरि वोलत भयो १

अहो संग महिमा मुनिराई	जीवन को अघ देहि नशाई
काम क्रोध नाशक पुनि एहा	सकल इष्ट प्रद नहिं संदेहा
भयो मोर माया तम नाशा	ज्ञान दृष्टि कर सहज प्रकाशा
तव दर्शन सें मैं भगवाना	भयो महामुनि अमर समाना
मुनि सव प्रथम चरित इनकेरा॥	भयो हृदय मम मोद घनेरा
निज सुत को भावी आचरना	पूछत हौं मुनिवर गहि चरना
केती आयु तनय मम पाई	भाग्य कहो एहि की मुनिराई
विद्या कीरति शक्ति प्रकारा	वरनहु श्रद्धा भक्ति उदारा॥
मम सुत कर एह सकल गोसाईं॥	कहो कृपाकर जन सुखदाई

मैं सेवक अरु शिष्य तुम्हारा ॥ लीन्ही राउर शरण उदारा ॥

सो॰ सुनि नरपति के बचन व्यास तात बोलत भये
किमि बरनौ गुन अपन कहन योग जो बचन नाहिं २
जाहि सुनेतत्काल धीरहु जन दुख पावही ॥२॥
तदपि कहौं नरपाल निर्व्यलीकतव प्रश्न लखि

अकथनीय यद्यपि नरपाला ॥ तदपि कहौं लखि प्रीति बिशाला
बय द्वादश संबत की पाई ॥ सो नरेश पूरन ह्वै आई ॥
अवसप्तम दिन नृप जब ऐहै तेहि दिन एह बालक मरिजैहै
काल कुसमय परम कराला मुनि बानी एह सुनि नरपाला
महाशोक अति व्याकुल भयेऊ भूतल मैं सहसा गिरि गयेऊ ॥
मुनि करुनानिधि नृपहि उठाये सावधान करि एह समुझाये
मतिडरपहु नरनाथ सुजाना तबहित कहहूं सुनहु धरि ध्याना
जबलौ विश्व प्रगट नहिं भयेऊ तौलौ निर्बिशेष प्रभु रहेऊ ॥

दो॰ निरालोक निःकल परम एक चिदानंद रूप ॥
सो केवल शिव ज्ञान मय चेतन ज्योति अनूप ४

प्रथम महिं तिन बिरंचि उपजायो सृष्टि कर्म महं तिन्हहि लगायो
चारिउ वेद समर्पन कीन्हा ॥ परम तत्व संग्रह पुनि दीन्हा ॥
सब उपनिषदन को बर सारा नाम रुद्र अध्याय उदारा ॥
जो प्रभु एक ब्रह्म अबिनाशी ज्योति सनातन अज सुखराशी
परम तत्व शिव मय भगवाना तहां प्रतिष्ठित रहहिं सुजाना
तिन ब्रह्मा सब जग उपजायो वेदन को विस्तार बढायो ॥
यजुर्वेद दक्षिण मुख द्वारा ॥ प्रगट भयो तहं सो श्रुति सारा
अत्रि मरीचादिक मुनि नाथा धारन करि तेहि भये सनाथा

दो॰ ॥ तिनके शिष्यन देव तन ग्रहण कियो पुनि सोय ॥

पुत्र शिष्य क्रम गत नृपति प्रगट लोक महँ जोय

रुद्र रूप वेदन कर सारा॥ एहु परतप एहु मंत्र उदारा॥
रुद्र अध्याय पाठ गुनवाना॥ मुक्ति सुसाधन परम सुजाना॥
महापातकी नरकिन होई उपपातकन मांहि रत जोई॥
ताहि जपत सब पाप नशावहि पापी सकल परम गति पावहिं
बहुरि रचा जग तीनि प्रकारा॥ भयो योनि बहु लख विस्तारा॥
उत्तम मध्यम मध्य सुजाना सुर तिर्जग नर ज्ञान निधाना
तिनके बहुरि कर्म उपजाये॥ निज २ जन्म सरिस श्रुति गाये
तिन में बर्तमान सब लोका॥ भोगत हैं दुख सुख अरु शोका

दो· सृष्टि प्रवाह हेतु नृप रचे विरंचि सुजान॥ ८८॥
धर्म हृदय सों पृष्ट सों भा अधर्म गुनवान ६॥

धर्माचरन कराहि जो कोई॥ लहहि पुन्य तेहि कर फल सोई
जे अधर्म के भे अनुरागी॥ तेन र भये पाप फल भागी॥
पुन्य कर्म फल स्वर्ग सो हायो नर्क पाप कर फल श्रुति गायो
तिन दून्हु के पति भगवाना रचे इंद्र यम राज सुजाना॥
काम क्रोध अरु लोभ महीपा मद मानादि अपर कुल दीपा
सब अधर्म वालक मुनिराई॥ भये नर्क नायक दुख दाई॥
सुरापान गुरु तल्प सुजाना॥ पुल्कस नारि गमन गुनवाना
काम तनय ये भये प्रधाना॥ सुनहु क्रोध संतान सुजाना॥
जननी कर वध अरु पितु घाता रोष कुमार युगल भे ताता॥
कन्या एक भई दुख दाई॥ ८॥ नृपति ब्रह्महत्या श्रुति गाई॥

सो·॥ लीन्हो निकट बोलाय श्री यम पातक नायकन॥
नर्काधिप मुनिराय तासु बाढ़ि हित करि दियो॥ ७

एहि प्रकार नव पातक राया। जिमि यम को सिरवबन सुनि पाया

तेसब पालहिं नर्क घनेरे ॥	उपपातक सेवक तिन केरे ॥
जब महि में आयो नरपाला ॥	रुद्रजाप अध्याय विशाला ॥
जो कैवल्य केर बर साधन ॥	पातक नायक गण अपने मन
सब भय भीत भगे महीपाला	यम मंदिर पहुंचे तत्काला ॥
महाराज जय देव सुरेशा ॥	हम तव किंकर मानि निदेशा
नर्क वृद्धि हित यत्न करांहीं ॥	महि अब ठहरि सकत हम नांहीं
बटो रुद्र अध्याय प्रभावा ॥	भये दग्ध ह्वै अति भय पावा ॥

दो॰॥ ग्राम ग्राम पुर नदी तट पुन्य थल न भगवान ॥
रुद्र जाप गा व्यापि अब सकल ठौर बलवान ८
प्रायश्चित्त सहस्र हम गनहि न यम पुर पाल
रुद्र जाप के बरन प्रभु सहि नहिं सकहिं करालर्द

अब हम रो निबाह तहं नाहीं	विचरहिं केहि प्रकार जग मांहीं
सकल लोक घातक सुरराया	हम सब महापाप समुदाया
रुद्रजाप भय प्रद भगवाना	भयो हम महिं प्रभु गरल समाना
रुद्रजाप सें दुःख अपारा ॥	पायो हम जेहि कर नहिं पारा
एहि ते हम विनवहिं सुरराई	दुःख नाश कर करहु उपाई ॥
पापनायकन की एह बानी ॥	सुनि यम पुरपति विस्मय सानी
तुरत विरंचि धाम चलि आयो	सकल चरित एहि भांति सुनायो

सो॰॥ देव र जगदीश मैं आयो शउर शरण ॥ ः ः ः ॥
पापिन को मोहि ईश दंड देन हित प्रभु कियो १०

अब पापी पृथिवी तल मांहीं	सुरनायक देखिअत कहुं नांहीं
पापन को बड कुल जगदीशा	रुद्रजाप सो भा प्रभु रवीशा ॥
पापनाश भे जब भगवाना	रीते रहिहैं गे नर्क सुजाना ॥ ः ॥
नर्क शून्यता जब सुरसांई ॥	निःफल राज हमार गोसांई

जेहि विधि मम अधिकार सुजाना। नाश होय नहिं कृपानिधाना॥
मोरि विनय सुनि कृपा दृढ़ाई। वेगि नाथ कछु करहु उपाई॥
धर्मराज अति खेद समेता। विनय कीन्ह तव कृपानिकेता॥
रुद्रजाप कर नाश उपाया॥ एह विचारि कीन्हो सुरराया॥
सुता अविद्या की नरपाला। एक अश्रद्धा परम कराला॥
दूसरि दुर्मेधा अघ भारी॥ मेधा श्रद्धा मेटन हारी॥८॥
विधि प्रेरित जग में द्वौ आई। दीन्हो लोक विमोह बढ़ाई॥

दो॰॥ रुद्रजाप सों विगत तव लोग गये मुनिराय॥
सावधान यमराज तव निज पुर गे हर्षाय॥
पूर्वजन्म कृत पाप सों अल्पायुष नर होय॥
रुद्रजाप सों पाप सब विनशहिं रहैं न कोय॥१२॥

पाप क्षीण भे जब नरपाला। दीर्घायु बल वीर्य विशाला॥
रोग होय नहिं कोउ दुखदाई। ज्ञान विभव नित बाढ़त जाई॥
रुद्रजाप सों जे अभिषेका॥ करहिं शंभु कर सहित विवेका॥
तेहि जल सों जो मज्जन करई। नरपति मृत्यु परम भय तरई॥
रुद्रजाप मंत्रित जल जोई॥ तेहि सन मज्जन जो नर कोई॥
करहिं मृत्यु भय तिन कहँ नांहीं। जांहिं उमापति मंदिर मांहीं॥
रुद्रजाप सन स्नात अभिषेका। करहि पुरुष जो विमल विवेका॥
तेहि के सकल पाप मिट जांहीं। शिव कहँ तेहि सम कोउ प्रिय नांहीं॥

सो॰॥ एह तव पुत्र सुजान अयुत रुद्र मज्जन करै॥
अयुत वर्ष गुनवान महि में प्रमुदित इंद्र सम॥१३॥

अव्याहत बल विभव निरोगा। निहत शत्रु भोगी है बहु भोगा॥
विगत पाप ह्वै है महराजा॥ करिहै सुखद अकंटक राजा॥
कृती शांत व्रत धर द्विजनायक। वेदपारगामी सब लायक॥

रह्यो निरत शिव भक्त सुजाना । बोलहु द्विजवर ज्ञान निधाना ॥
ते निर्मल मन विप्र उदारा ॥ करहिं रुद्र जप को विस्तारा ।
तिन के जप प्रभाव गुन बाना । ह्वै है तुरतहिं तव कल्याना ।
एहि प्रकार सुनि मुनिवर वयना । काश्मीर नरपति गुन अयना ।
मुनि को प्रथम वरन करि दीन्हा । मुखिआ तिन्हहिं क्रिया गुरु कीन्हा ।
दो॰ ॥ और रुद्र जे निर्लोभ मुनि तिन कहं तुरत बुलाय
वरण कियो नृप मुदित मन मंडफ रुचिर सजाय १४
ते सहस्र व्रत धर मुनि राया । सकल विमल उर सरल सुभाया ।
विमल रुचिर शतकलश धराये । पुन्य वृक्ष रस युक्त सोहाये ।
रुद्र जाप पुनि रजप वाये ॥ नृपसुत को मज्जन करवाये ।
सप्तम वासर जेहि दिन आये । विधि समेत पुनि तेहि अन्हवाये ।
मज्जन करत कछुक डरि गयेउ । छिन भरि लै मुर्छा गत भयेउ ।
मुनिवर कृत रक्षण नृप बाला । जागि उठो सहसा तत्काला ॥
कहन लगो एहि छिन हम देखा । क्रूर दंड धर पुरुष विशेखा ।
महाभयानक मुख मुनि राया । मोहि मारन को कियो उपाया ।
महावीर कोउ तेहि छिन आये । सुंदर रुचिर वेष मन भाये ॥
ताहि बहुत ताडन तिन कीन्हा । हमको अभय दान तिन दीन्हा ।
लैगे ताहि पाश महं बांधी ॥ अस कहि सुत रहिगो चुप साधी ।
एहि विधि बालक की सुनि बानी । मुदित भये सब ऋषिवर ज्ञानी ।
सुत को बहु आशिष तिन दीन्हा । नृप कहं चरित निवेदन कीन्हा ।
तब नरेश अति मन हर्षाई । दीन दक्षिणा विपुल सोहाई ।
भक्ति सहित भोजन करवाई । मुनिगन के आशिष वर पाई ।
बंधु सहित पुनि भोजन कीन्हा । नृपति सभा महं तब पगु दीन्हा ।
दो॰ ॥ मुनिन संग जब सभा महं कियो नृपति विश्राम ॥

चलि आये तहँ देव ऋषि श्री नारद गुन धाम १५

मुनि को आवत देखि नृपाला। मुनिगण सभा सहित तत्काला॥
करि पूजा आसन बैठारे॥ शीश नाय नृप बचन उचारे॥
दीख होय अचरज जो कोई॥ हम कहँ नाथ सुनावहु सोई॥
सकल सभासद सहित सुजाना। करहु नाथ वचनामृत पाना॥
हम नभ सें उतरत नरपाला। दिखा अचरज परम विशाला॥
ताहि सुनहु महिपाल विनीता। सब मुनि पुंगव वृंद सहीता॥
एहि दिन मृत्यु सकल दुखदायक। मारन हित तव सुत महि नायक॥
आयो दंड धरे विकराला॥ जान्यो शंकर दीन दयाला॥
वीरभद्र कहँ आयसु दीन्हा॥ निज गण वृंद साथ करि दीन्हा॥
वीरभद्र तुरतहि चलि आयो॥ तव सुत निकट मृत्यु कहँ पायो॥
करि बहु क्रोध बाँधि तेहि लीन्हा। बहुरि दंड गहि ताडन कीन्हा॥

दो०॥ ईशानि कट कहँ लै चले जानि तुरत यमराय।
जाय निकट शिर नाय कै दीन्हो वचन सुनाय १६

वीरभद्र प्रभु रुद्र विशाला॥ मुनि२ प्रणाम हु तोहि कृपाला॥
निरपराध एहु मृत्यु विचारा। करहु कोन हित क्रोध अपारा॥
कर्म विवश गत आयु कुमारा। तासु घात जो मृत्यु विचारा॥
कहु अपराध तुम्हारो कीन्हा। वीरभद्र एह उत्तर दीन्हा॥
दश सहस्र संवत यमराई। नृप सुत आयु परम सुखदाई॥
रुद्र स्नान भयो अघ नाशा। तासु कौन विधि होय विनाशा॥
निश्चित मम बानी फुर एहा। जो पुनि होय तुम्हें संदेहा॥
चित्रगुप्त कहँ लेहु बोलाई॥ पूछहु जेहि तव संशय जाई॥
धर्मराज तेहि तुरत बोलायो। चित्रगुप्त यम पहँ चलि आयो॥
पूछी तव सुत आयु प्रमाना॥ चित्रगुप्त कह्यो कृपानिधाना॥

दो॰ ॥ द्वादश आयु नरपाल सुत मुनि कीं लेख विचार
अयुत वर्ष माहिं जिअहि गो सुख सों राजकुमार २७

मुनि भय भीत भये यम राजा । शिर नायो तेहि सहित समाजा
बहुरि मृत्यु बंधन दुर्वारा ॥ खोलि दियो तिन काहु प्रकारा
वीरभद्र खोला जब बंधन ॥ निज मंदिर यम भे अरिमर्दन
वीरभद्र गवने कैलाशा ॥ हम आये नृपवर तब पासा
एहि कारन तब सुत महि रावा । तरो मृत्यु शिव जाप प्रभावा
रहिहै सदा सुखी दुख नांहीं । दश सहस्र संवत महि मांहीं
अस कहि नारद गे सुर लोका । नरपति प्रमुदित भयो विशोका
ऋषि मुनि सब जे नृपति बोलाये । सकल मुदित निज धाम सिधाये

सो॰ ॥ एहि विधि मुदित नरेश रुद्र अध्याय प्रभाव सों ॥
तरि दुख सिंधु अशेश भयो कृतारथ पुत्र युत २८ ॥

छं॰ ॥ परमेश की महिमा रुचिर एहु पदहिं जे नर गावहीं
पुनि पिअहिं जे नर करण पुट सो शंभु पद मन लावहीं
तिन किये जो भव कोटि महं सो सकल पापन शाय कै
श्री चंद्र शेखर लोक महं सब जाहिं मन हर्षाय कै २९ ॥

इति श्री मत्परम हंस परिव्राजकाचार्य्य श्री स्वामी राम कृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शित कैलाश मार्गे रुद्राध्याय महिमा प्रकाशनं नाम एकविंशो विश्रामः ॥ २१ ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शंकराय नमः ॥ चौपाई ॥

एहु पंथा अतिशय सुख दाई ॥ श्री शिव शंकर आपु देखाई ॥
संसृति बंधे जे नर मुनि नायक । तिन कहं वेगि मुक्ति की दायक
पुनि कुबुद्धि जे पुरुष गँवारा । जिन्हहिं वेद में नहिं अधिकारा
नारी पुनि द्विज बंधु निकाया ॥ जे शरीर धारी मुनि राया ॥ १ ॥

तिनकहँसुखदायकमगएहा सुनहिंशंभुयशसहितसनेहा
परममुक्तिसाधनवरएहू ॥ सुरमुनिपूजितनहिंसंदेहू ॥
भवभयसकलमिटावनिहारी शिवभक्तनकहँअतिशयप्यारी
अज्ञानिनकहँविप्रमहीपा ॥ ज्ञानसिद्धिदायकवरदीपा
जेभवरोगवधेदुखरूपा ॥ तिनकहँऔषधिपरमअनूपा
महापापसबशैलसमाना ॥ वज्ररूपशिवचरितबखाना
कर्मवीजभर्जनमुनिराया ॥ सुखसंपतिकोसहजउपाया
सकललोकपावनिशिवगाथा सदासुनहिंतेहोंहिंसनाथा ॥
तेमनुष्यवरएहिजगमांहीं रुद्ररूपककुसंशयनांहीं ॥

सो॰॥शिवगाथाअतिरूरि सुनहिंतथावरननकरहिं
तिनकेपदकीधूरि तीरथसममुनिगावहीं ॥१॥

तेहिकारनमुनिज्ञाननिधाना जोनरचाहहिंनिजकल्याना
तेनरवरअतिभक्तिदृढाई ॥ सुनैंशंभुकीरतिमनलाई
सदासुननकोअवसरजाही जोनहिंमिलैउचितएहताही
दुइघरिकासोनरमुनिराई ॥ दिनप्रतिश्रवणकरैमनलाई
सुनिनसकैप्रतिदिनपुनिजोई पुन्यमासदिनतिथिजबहोई
तबशिवकथापुराननगाई ॥ श्रवणकरैजोमनहर्षाई ॥
सोकरिदग्धकर्मबनसारा ॥ विनश्रमअवशितराहिसंसारा

सो॰॥दुइघटिकावाएकदिनभरिवापावनिकथा ॥
प्रेमसहितगहिटेकसुनेनपावहिंअधमगति २

जोफलयज्ञनमेंश्रुतिगायो ॥ जोफलदाननमेंदर्शायो ॥
सोसबफलपावहिनरसोई करहिपुराणश्रवणजोकोई
तजिपुराणगाथामुनिराया कलिविशेषनहिंऔरउपाया
एहिसमऔरधर्मकोउनांहीं मुक्तिपंथदूसरजगमांहीं ॥

श्रवण पुराण सरिस जग मांहीं । आपर कीर्तन वर कोउ नांहीं
ताहि सुनैं जे लोग सुजाना ॥ फलदायक सुर विटप समाना
कलि के नर हीना पुन्यवाना ॥ दुर्बल अति पीडित अमनाना
बहुरि दुष्ट मेधा दुख भाजन ॥ धर्माचार रहित कलि के जन ॥
एह विचारि मुनि नाथ सुजाना । सत्यवती नंदन भगवाना ॥
विरचे तिनके हेतु पुराना ॥ परम स्वाद रस सुधा समाना
अमृत यत्न करि पीवहि जोई । अजरामर सोई नर होई ॥
शंभु कथामृत सेवहिं जोई ॥ कुल समेत अजरामर सोई ॥
बालक युवा वृद्ध बल हीना ॥ होहि दरिद्री वा अति दीना
पुराणज्ञ पंडित नर जोई ॥ पूजनीय सबही करि सोई
कथा तासु वर्णित सुनि लीजे । नीच बुद्धि तेहि में नहिं कीजे ॥
जासु वदन पंकज वर बानी ॥ काम धेनु के सरिस वखानी
गुरु वर बहु जग में गुन खाना । जन्म हेतु गुन हेतु सुजाना

दो॰ ॥ तिन सब में जो अति चतुर जानहिं बिमल पुरान ॥
परम गुरू तेहि सन कहैं मुनिवर ज्ञान निधान ॥ ३ ॥

सो॰ ॥ जन्म कोटि शत पाय जिअत मरत दुख पावहीं
जो भव देय मिटाय तेहि समान को परम गुरु ४ ॥

बक्ता के लक्षण सुनि राई ॥ इहां कछुक में देउं सुनाई ॥
पुराणज्ञ शुचि मत्सर हीना । शांत दांत अरु परम प्रवीना
साधु कृपानिधि वचन उदारा । पुन्य कथा कर जानन हारा
पौराणिक जन द्विज महिपाला । व्यासासन बैठे जेहि काला ॥
जो लौ प्रभु महिमा गुन गावै । काहू को नहि शीश नवावै ॥
जिन कर सदा धूर्त व्यवहारा । जिन कर पुनि खोटो आचारा
मीतन की इच्छा जे करहीं ॥ और बहुत पातक आचरहीं

औरहु जे अति कुटिल अभागे कहे कथा नहिं तिनके आगे
जहां शूद्र दुर्जन बहुतेरे ॥ विचरहिं श्वापद जंतु घनेरे
द्यूतभवन में नहिं पुनि जाई कहे कबहुं प्रभु कथा सोहाई
जहां होंहिं शुभ ग्राम सोहाये सुजन जिहां निवसाहिं मन भाये
जे शुभ क्षेत्र देवस्थाना ॥ जे पावन सरित तट गुनवाना
तहां कहे शिव चरित सोहावन देश होय सब विधि जहं पावन
शंभु प्रेम जिन के मन मांहीं ॥ दूसर काज मनोरथ नांहीं
सावधान शाहि मौन सुजाना ते श्रोता वर पुन्य निधाना
भक्ति रहित मनुजाधम जोई ॥ सुनहि शंभु यश पावन सोई ॥
विन शिव भक्ति न कछु फल पावै जन्म २ दुख पाप गंवावै ॥ ३ ॥

सो॰ ॥ जिन पूजा नहिं व्यास तांबूलादिक भेट सों ॥ ३ ॥
नित प्रति सहित हुलास सुनहिं भक्ति सों जो कथा ५
तिन कर पाप नशाय नहीं पापी ते कबहुं नर ॥ ३ ॥
सुनि शौनक मुनिराय होंहिं दरिद्री ते सदा ६ ॥

दो॰ ॥ कथा होत जो नर अधम अनत कहूं चलि जाहिं ॥
तिनकी ग्रहणी संपदा नाशहिं वीचाहि माहिं ७ ॥

पाग बांधि शिर महं जो कोई ॥ सुनै कथा पापी नर सोई ॥ ३ ॥
सुनिवर ते नर अधम कहावहिं अंतकाल में वकतन पावहिं
जे नर कथा श्रवण अनुसरहीं तांबूल भक्षण नहं करहीं ॥
यमपुर निज पुरीष यम किंकर तिन्हहिं खवावहिं परम भयंकर
दंभी उच्चासन आरूढा ॥ ३ ॥ कथा सुनहिं जे नर अति मूढा
अक्षय नर्क भोगि बहु काला ॥ होहिं काक पक्षी चांडाला ॥
जे वीरासन जे मंचासन ॥ ३ ॥ कथा सुनहिं जे अति गर्वित मन

दो॰ ॥ अर्जुन पादप होंहिं ते पुनि जे विनहि प्रनाम ॥ ३ ॥

सुनहिं सकल नर होंहि ते विषपाद घदुख धाम ॥

सुनै सयन करि कै पुनि जोई अजगर योनि लहै नर सोई
आसन वक्ता सरिस बिछाई सुनै कथा बहु मान बढाई ॥
भोगि पाप गुरुतल्य समाना जाय नर्क महँ मनुज अयाना
कथा व्यास निंदा जे करहीं ॥ ते शठ श्वान योनि अवतरहीं
जोहि छिन प्रभु कीरति शुभ होई करै बतकही दुर्जन जोई ॥
खर के तन पावै अति पीरा ॥ धरहि बहुरि कृकलाश शरीरा
प्रभु यश पावन सुखद अनूपा कबहूं जे न सुनहिं अघरूपा ॥
ते नर भोगि नर्क बहु तेरे ॥ लहहिं देह वनसूकर केरे ॥

दो॰ ॥ कथा होत जे नर प्रवर अनुमोदहिं हर्षाय ॥
विनहु सुने ते परम पद अवसि लहैं मुनिराय ९
कथा समय जे परम शठ विघ्न करैं तहँ जाय ॥
वर्ष कोटि बहु नर्क महँ भोगहिं दुख समुदाय १०

नर्क भोगि जग में जब आवै ॥ देह ग्राम सूकर की पावै ॥ ८ ॥
जे पुराण गाथा अति पावनि श्रवण करावैं जन मन भावनि
कल्प कोटि लौं ते मुनिराई ॥ रहहिं ब्रह्म पद में हर्षाई ॥
कंवल अजिन वसन मन भावन मंच रुचिर बर फलक सोहावन
पौराणिक आसन के हेतू ॥ देहिं महासुकृती जन केतू ॥
प्रथमहिं स्वर्ग लोक ते जाहीं ॥ रुचिर भोग लहि अति हर्षाहीं
पुनि वसि ब्रह्मादिक वर लोका ॥ जाहिं निरमय पदहि विशोका
स्वत बसन अति रुचिर नवीना व्यासहिं अर्पहिं परम प्रवीना
ते नर वर जब रतन गहहीं ॥ ज्ञान भोग संयुत निज रहहीं
महापाप रत जे मुनिराया ॥ कीन्हे उपपातक समुदाया
ते अस सुनि पुराण वर गाथा ॥ जाहिं परम पद होहिं सनाथा

सो०॥ इहाँ कहौं इतिहास अति पावन द्विजराज मैं ॥
सुनत पाप कर नाश अति विचित्र मनहारि शुभ ११

एक दक्षिण पथ महँ ग्रामू ॥ रह्यो वाष्कल तेहि कर नामू ॥
वसै मूढ़ जन कर समुदाया ॥ कर्म विवर्जित सब मुनिराया ॥
श्रुति स्मृति देखै नहिं कोई ॥ ब्रह्माचार कहाँ ते होई ॥ १ ॥
वेद पाठ जप आदि विहीना ॥ परवनिता रति दान प्रवीना ॥
वसहिं शस्त्रधर तहँ वहुतेरे ॥ तथा कृषी वल धाम घनेरे ॥
देवाराधन जानन कोई ॥ २ ॥ कोउ नहिं कुटिलाचार न जोई
परम धर्म जो ज्ञान विरागा ॥ नहिं जानैं सब गाँव अभागा ॥
काम विवश नारी तहँ केरी ॥ स्वैरिनि कामिनि तिय वहुतेरी
कुटिल पंथ गत परम मलीना ॥ सदाचार वर्जित बुधि हीना ॥

सो०॥ विदुर नाम तहँ एक वसत रहा भूसुर अधम ॥
पूरन जेहि अविवेक तेहि वश गनिका वश भयो ॥

यद्यपि नारि रही ग्रह मांहीं ॥ तदपि कुमारग भावहि ताही
साधु प्रिया निज भवन विहाई अतिदिन गनिका के ग्रह जाई ॥
तहाँ यथा रुचि करहिँ विहारा नवयौवन मद भूसुर दारा ॥
नाम विंदुला यदपि सयानी ॥ काम वेग वश अति अकुलानी
भयो जार संगम अति प्रीती एहि प्रकार गे कछु दिन वीती
एक दिवस जब तेहि पति देखा धायो करि अति क्रोध विशेखा
देखत पतिहि जार गयो भागी पकरी नारि काम अनुरागी ॥
जब कीन्हो वहु मुष्टि प्रहारा ॥ नारिहि वाढ़ा क्रोध अपारा ॥ ३ ॥
भर्त्ता को कुछु भय नाहिं कीन्हा ताहि विधि तेहि कोउ नर दीन्हा
तुम तो गनिका के ग्रह जाई ॥ रमहु सदा अभिमत सुख पाई

दो०॥ रूपवती नव योवना जो मैं नारि तुम्हारि ॥ ४ ॥

कामव्यथा के से सहौं जेहि तुम दियो बिसारि ॥९३

ताहि उपाय बिन का गति मोरी	तुम हीं कहौ विचारि बहोरी
जब एहि नारि गिरा सुनि पाई	भूसुर अधम कह्यो हर्षाई ॥
उचित कही भामिनि तुम बानी	सुनु अब निज हित परम सयानी
जारन सों अभिमत धन लेहू ॥	बहुरि तिन्हहिं रतिसुख नित देहू
सो धन दिहो करो मोहि कामिनि	मैं सो देव गनि कहि द्युति दामिनि
जो एह मानहु वचन हमारा ॥	हूहै काज हमार तुम्हारा ॥
भले हि नाथ कहि पति अनुशासन ॥	शिर धरि लीन्हो नारि मुदित मन
दंपति दुराचार मन भायो	एहि विधि करि कछु काल गँमायो
भयो बिदुर द्विज को पर लोकू	सुतन सहित नगर हुगो लह्यो शोकू

दो॰॥ कछुक वर्ष निज गेह महँ कीन्हो नारि निवास ॥
योवन को मद उतरि के भा कुछ रूप उदास ९४

दैव योग शिव तिथि वर आई	पुन्य पर्व सब भाँति सोहाई ॥
द्विज वनिता निज कुलजन साथा	गई गोकरन तीरथ नाथा ॥
करि तीरथ जल में अस्नाना	देखा रुचिर देव अस्थाना ॥
होत रही प्रभु कथा सोहाई	वैठि सुनन लागी मन लाई ॥
जार राक नारि जो कोई ॥२॥	पहुँचहि जवहिं नर्क महँ सोई ॥
लप्त लोह परिया यमकिंकर	क्षेपहिं पंचवाण के मंदिर ॥
व क्रामुख सों एह भयकारी ॥	सुनि गाथा डरपी अति नारी
रहसि देखा वक्ता दिग जाई ॥	शीश नाय एह विनय सुनाई
द्विज वर नाथ तरुण बय पाई	कामाचार किया अधिकाई ॥
कुमित पंथ में पगु धरि दीन्हा	जो नहिं उचित रहा सो कीन्हा

सो॰॥ बिन जाने बड पाप द्विज वर मो सन वनि परो ॥
भयो हृदय संताप भय उपजी तव वचन सुनि ९५

पुनि२ कंपत मोर शरीरा ॥ समुझि दशा मन मैं अति पीरा
गोगण सों अति प्रीति बढाई पाप करत मोहि लाज न आई
मदन विमोहित हृदय हमारा बार२ हम को धिक्कारा ॥१५॥
जेहि कारन थोरे सुख हेतू ॥ अति दुर्गति पैहों द्विज केतू ॥
मरण काल केहि विधि यम किंकर नयन नरेखहुं परम भयंकर
मम गल महं बल करि ते पाशा बांधहिं गे ह्वै है अति त्रासा ॥
नर्कन महं एह मोर शरीरा छेद जनित ताकिमि सहिहै पीरा
तप्त जारक दंम द्विज राया ॥ गिरि किमि सहिहौं दुख समुदाया
केहि प्रकार बहु योनि अपारा कृमि खग कीटादिक विस्तारा
भूमि हों अति दुख पाय घनेरा किमि सहिहै पीडित मन मेरा
आजु दिवस ते मोहि द्विज राई केहि प्रकार मोहि असन सोहाई
औहै नींद कौन विधि मोही ॥ निज दुख किमि बरनौं प्रभु तोही

छं॰॥ दाहत भई मैं दग्ध मम उर प्रभु विदीरण ह्वै गयो
हा विधि दई दुर्बुद्धि मोहि अति पाप में डारत भयो ॥
गिरि तुंग सों नर गिरत बेधित शूल सों दुख पाव जो
तेहि दुःख सों शत कोटि दुख ह्वै रहो मोहि नाथ सो
सो॰॥ सौ हयमेध विधान शत संवत लौ देव सरि ॥
यदपि करौं अस्नान शुद्ध हौं हु नहिं पाप अति १६
कहां करौं कहं जाय केहि की शरण गति गहौं ॥
को अवलेत बचाय नर्क सिंधु महं गीरत मोहि १७

तुमहीं गुरु पितु मात समाना करहु मोर उद्धार सुजाना ॥
मैं शरणागत तव द्विज राया दीन जानि कीजे अब दाया ॥
अस कहि चरन गहे अकुलाई दुखी देखि करुना उर छाई ॥
द्विजपुंगव तेहि दीन उठाई ॥ कृपा सहित एह गिरा सुनाई

बडे भाग भामिनि शुभ तेरे सुनि पुराण तैं जगी सवेरे ॥
मति इरषाहि अपने मन मांहीं सुखद उपाय कहौं तोहि पांहीं
कथा अभाव न कछु संदेहा ॥ श्रवण करत उपजी मति एहा
भयो विषय वैराग सयानी भा अति ताप पाप उर आनी

सो॰ ॥ अघ करि जो पछिताय सकल पाप निःकृत परम
ताही सों वनि जाय प्रायश्चित्त सुजान को ॥ १८ ॥

प्रायश्चित्त शुभग अति सोई जो करि पाप ताप उर होई ॥
कीन्हो निःकृत यथा विधाना जेहि के उर नहिं ताप सुजाना
ते नर उत्तम गति नहिं पावैं वेद पुराण प्रगट दर्शावैं ॥
शोधै पुनि२ जो नर कोई ॥ जिमि दर्पण अति निर्मल होई
तिमि सुनि२ प्रभु कथा सोहाई चित्त महा निर्मल ह्वै जाई ॥
जवा विशुद्ध पावन उर नर को ध्यान वनहिं तव श्री शंकर को
जवहीं ध्यान सिद्ध ह्वै जाई ॥ मन वच कर्म मल सकल नशाई
तवही होय कृतारथ एह नर पावहि शंभु परम पद सुंदर
वनो न जिन सन सुकृत घनेरा साधन परम चरित प्रभु केरा
कथा सुनत वनि आवहि ध्याना ध्यान करत निर्वाण वखाना
विमल ज्ञान कीन्हे जो नर वर सुनत रहै प्रभु चरित निरंतर
दुसरे जन्म ध्यान वनि आवै करतहि ध्यान परम गति पावै
सकल श्रेय को वीज सोहायो कथा श्रवण वेदन दर्शायो
तेहि विहीन पशु नर नहिं सोई भव बंधन विमुक्त किमि होई
ताहि कारन अति भक्ति दृढाई विषय लालसा सकल वहाई
सुनहु कथा सादर मन लाई तो हृदय निर्मल ह्वै जाई
ताहि मन सों शिव ध्यान लगै है अनपायिनी भक्ति तैं पै है ॥

सो॰ ॥ जो तैं साहित सनेह ध्यावहिगी शिव को चरन ॥

ह्वै है बिन संदेह एही जन्म महं मुक्ति तव ॥ २२ ॥

सत्य सत्य यह गिरा हमारी ॥ मानि आचरन करु द्विज नारी
एहि विधि विप्र वचन सुनि पाये नारि उभय लोचन जल छाये ॥
कियो कृतारथ मोहि द्विजराई अस कहि गे चरन लपिटाई
ताही थल में कीन्ह निवासा ॥ ताही द्विजवर के नित पासा ॥
गाथा मुक्ति दानि अघ हारी ॥ सुनहि प्रेम युत भूसुर नारी ॥
सो द्विजनाथ कृपा अति उपकारी कथा विराग वढावनि हारी ॥
कहहि सदा सादर मन लाई ॥ सुनत विषय तृष्णा मिटि जाई
जस २ तेहि मन भयो विरागा ॥ तस निर्मल शिव पद अनुरागा

सो० ॥ तव वरनी द्विजराय भक्ति समन्वित शिव कथा ॥
गयो हृदय हर्षाय जिमि २ नारी विमल मन २९

तिमि २ शंभु चरित रुचि वाढी ध्यान योग निष्ठा अति गाढी ॥
भा रज तम संभव मल दूरी ॥ सावधान सव रोगन रूरी ॥
क्रम २ मानस विमल भयो अति स्थिर भै उर भैं शिव मूरति ॥
एहि विधि गुरु वर की सेवकाई द्विज गृहणी सुंदर मति पाई ॥
कीन्हो वार २ शिव ध्याना ॥ चिदानंद वपु शंभु सुजाना
नित तीरथ जल में मज्जन करि वल्कल जटा धरे तन सुंदरि भ
भस्मोद्धूलित अंग सोहाये ॥ रुचिर अक्ष भूषन छवि छाये ॥
शंभु नाम जप में अति प्रेमू ॥ गहौ मौन मित भोजन नेमू ॥
सावधान वैठे पद्मासन ॥ कथा श्रवण उत्कंठा अति मन
गुरु शुश्रूषा महं रति मानी त्यागि दिये सुत वंधु सयानी
श्री गुरु वर जो दियो नियोगा शिव परितोषे सोई करि योगा
दिन प्रति शिव पद प्रेम वढावै एहि प्रकार वहु विनय सुनावै

छं० ॥ विश्वेश भव थिति जन्म लय कारन उमापति ध्यावहू

हे विश्व वंदित शिव सनातन विश्वरूप मनावहूं ॥
कृत नाश सब भव भीति गुण अवभास एह सुनि लीजिये
श्री मन्महा शिव मोहि पर करुना विलोकनि कीजिये ॥२
हे शंभु विधु शेखर कृपानिधि शांत मूरति अघ हरे ॥
हे गंगधर वर अमर पूजित पाद पद्म मनोहरे ॥ ३ ॥
नागेंद्र भूषण नँगनि के तन एह विनय सुनि लीजिये
भक्तार्त्तिहर हम पर सदा करुना विलोकनि कीजिये
श्री विश्वनायक कृपा मूरति शूलधर गिरजापते ॥
भूतेश त्रिभुअन गीत कीरति विश्व मूरति सद्गते ॥
हे नीलकंठ कृपाल मेरी एह विनय सुनि लीजिये
श्री मदन भर्जन भर्ग मोपर कृपाचित बनि कीजिये
दो॰ ॥ एहि विधि प्रतिदिन भक्ति सों विनती करत सुजान
सुनति कथा श्री शंभु की कर्म बंध बिलगान ॥ २२ ॥

एहि विधि करि शिव पद अनुरागा ॥ द्विज तिअ काल पाय तन त्यागा
लैगे ताहि शंभु के किंकर ॥ ३ ॥ पहुँची जाय जहां शिव मंदिर
गणपति नंद्यादिक वर देवा ॥ करहिं सकल गौरी पति सेवा ॥
पंच बदन सुंदर त्रय लोचन ॥ नील ग्रीव स्वजन भय मोचन
वाम अंग गिरिजा छबि धामा ॥ चपला विधु सम अति अभिरामा
देखिससंभ्रम नारि सयानी ॥ करि प्रणाम पुनि २ हर्षानी
नयनन में आनँद जल बाढे ॥ पुलक शरीर रोम भे ठाढे ॥
करुना कर शंकर भगवाना ॥ तया उमा कीन्हो सन्माना ४

दो॰ ॥ परानंद घन ज्योतिमय लोक सनातन जाय ॥
अचल वास पायो तहां मन सुख कहि न सिराय ॥
एक समय गौरी ढिग जाई ॥ ३ ॥ करि प्रनाम बहु विनय सुनाई

॥ पर्वत

१७४ सब देखत तहँ आई सावित्री कोटि तेज अधिकाई ॥

दुख लखि एहु पूछा शिर नाई । मेरे नाह कौन गति पाई ॥२॥
कह्यो देवि तेरो पति सुन्दरि ॥ नर्कन के बहु दुःख भोग करि
सो विंध्याचल में एहि काला । उपजो आय पिशाच कराला ।
पुनि पूछा तेहि करि विनती अति । पैहै केहि उपाय उत्तम गति ॥
एहि प्रकार सुनि द्विजतिय बानी । बोली हिमगिरि सुता सयानी ।
अति पावन वर चरित हमारा । सुनि पावै जो नाह तुम्हारा ॥
तौ समस्त दुर्गति तरि जैहै ॥ एही लोक आनंद मय पैहै ॥

दो॰ ॥ सुनि गिरिजा के वचन वर द्विजतिय जोरे हाथ ॥
विनय कीन्ह निज नाह हित जेहि में होहि सनाथ ४

बार २ सुनि विनय सोहाई ॥ गिरिजा करुना रस सरसाई
तब तुंबुर गंधर्व बोलायो ॥ एहि विधि आयसु ताहि सुनायो
विंध्याचल महँ जाहु सुजाना । भूसुर तिय सहित गुनवाना ।
तहँ कियो एक पिशाच बसेरा । सो अति पापी पति एहि केरा
तेहि के सन्मुख चरित हमारा । बरनहु पावन गुन विस्तारा ।
दुर्गति जबहिं मुक्त ह्वै जाई ॥ शिव ढिग लावहु यान चढ़ाई
एहि विधि गिरिजा आयसु पाई तुंबुरु उमा चरन शिर नाई ॥
तेहि समेत चढ़ि रुचिर विमाना । विंध्याचल कहँ कीन्ह पयाना ।

दो॰ ॥ लाल विलोचन महा हनु धावहि सहित विलास ॥
कबहुँ रोवत हँसत लखि गहि बाँधो दृढ़ पास ५ ॥

एहि प्रकार तेहि धरि बैठारी ॥ तुंबुरु बीणा रुचिर सँवारी
गौरी पति गाथा विस्तारी ॥ सुनि पिशाच पावनि अघ हारी
भयो तुरत सब कलुष विनाशा । कियो विमल उर ज्ञान प्रकाशा ।
तजि पिशाच वपु दिव्य शरीरा । भयो मुदित मन अति मति धीरा ।
श्री गिरिजा पति कथा सोहाई । सो उगावन लागो मन लाई ॥

२८:५ ॥ मेरगजहिं विंध्याचल मांहि, देखा महा: भयावन ताहीं ॥

दिव्य रूप चढ़ि रुचिर विमाना	तुंबुरु मेघा सहित हर्षाना ॥
गावत श्री शिवचरित मनोहर	पहुँचो जाय दिव्य शिव मंदिर
लोक सनातन अति सुख राशी	जहाँ मुक्तिप्रद शिव अविनाशी
दुरित विनाशन चरित सोहावा	शिवयश मुनिवर तुम्हहि सुनावा
परम ज्ञान साधन वर एहा ॥	शंभु प्रीति कर नहिं संदेहा ॥

छं॰ ॥ श्री शंभु को गुन गाथ पावन अति विचित्र सोहावनो
हरु पाप परमानंद प्रद संसार रोग नशावनो ॥ २ ॥
एह सुनहि जो नर नारि मन धरि पढहिं सुमिरहिं गावहीं
एहि लोक में लहि भोग सुंदर परम गति पुनि पावहीं १ ॥
सो॰ ॥ मुनिवर तव बड भाग परम कृतारथ रूप सव ॥ २ ॥
सदा सहित अनुराग कथा सुधा रस सेवहू ॥ २६ ॥
छं॰ ॥ है जन्म तेहि को सफल जग में जो सदा शिव ध्यावही
श्री शंभु के गुन परम पावन जासु रसना गावही ॥ १ ॥
शुभ श्रवण पुट सों रुचिर कीरति सुधा सेवन करत जे
पावहिं परम आनंद भव वारीश सुख सों तरत ते २ ॥
छं॰ ॥ जो विविध गुन के भेद सों विस्वरूप न लखि परै
जग मांहि भीतर वाहिरे जो विभु निवास सदा करै ॥
निज तेज में विहरहि सदा मन वचन अति दूरि जो ॥
श्री शिव सनातन सघन आनंद शरण रावहु मोहि सो
सो॰ शौनक अति एह अति रुचिर गायो सूत सुजान ॥
प्रभु प्रेरित भाषा कियो करि माधव हर ध्यान ॥ २७

एहि प्रकार हर चरित सोहावा	शंभु प्रसाद यथा मति गावा
भक्ति प्रधान चरित शिव केरा ॥	करहि काहि नहिं मोद घनेरा
शंभु प्रेम दायिनि एह गाथा ॥	सुनत नारि नर होंहिं सनाथा

परम रुचिर पावन इतिहासा। पढ़त सुनत भव दुख कर नाशा।
मधुर चरित किमि जाय बखानी। कहि न सके विधि शारद बानी।
उमानाथ जननाथ कृपाला। तेहि प्रभु कर एह चरित विशाला।
एह विचारि सज्जन मन लाई। देखिहैं गुन अवगुन बिसराई।
तिनके सब अभिलाष अनूपा। पूरन करिहैं प्रभु सुर भूपा ॥

दो॰ ॥ दीनबंधु भव दुख हरन शंकर करुना धाम ॥
जासु कृपा वश मैं सदा पाये सब मन काम २८

तासु कृपा पूरन एह गाथा। भई नाथ मोहि कियो सनाथा।
विद्या बुधि बल कछु मोहि पाहीं। नाथ कृपा तजि दूसर नाहीं।
राउर बल राउर यश गायो ॥ सुमन सरिस तव चरन चढ़ायो।
निज पद प्रेम देहु भगवाना ॥ नहिं कुछ चहहुं अपर वर दाना।
मम आचरन कहां वर एहा ॥ तासु लाभ कर अति संदेहा।
करुना सागर कृपा तरंगा। निज दिशि लखि करिहैं भव भंगा।
राउर पद भरोस सरसाई ॥ बहु विधि निज मानस हर्षाई।
गाथा करि पूरी सुखदाई ॥ नाथ चरन विनवों शिर नाई ॥

सो॰ ॥ एह तव चरित उदार जे गावहिं अरु जे सुनहिं
तिनको मोद अपार उभय लोक महँ तव कृपा २९
शंकर सुयश अनूप गायो माधव भारती ॥
रहैं सदा सुख रूप पढ़ैं सुनैं जे नारि नर ३० ॥

इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री स्वामी ७ रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती प्रदर्शिते कैलाश मार्गे कथा श्रवण विधि निरूपण परो द्वाविंशतितमो विश्रामः ॥ २२ ॥

इति

शुद्धिपत्र कैलास मार्ग बनाया हुआ ग्रंथकार श्री स्वामी माधवानंद का

पृष्ट	पंक्ति	अशु	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	२३	कर	वर	"	१९	ढु	ढि	३४	२३	सवनि	सवन	४६	१८	तुरतही	तुरतहि
८	१७	को	०	२६	४	नं	नँ	"	२	विवध	विविधि	"	"	खँडर	खंडहर
१०	१२	त	ते	२४	१	हा	ह	३५	२०	ए	ऐ	४७	५	है	हा
१३	७	तुम	०	"	१८	जे	ने	"	"	है	हैं	"	७	नहीं	नहिं
१३	२२	हं	रू	२५	३	सुनि	सुनु	"	२१	विचार	विचारि	४८	२२	भेटौ	भेटो
१७	२	ठौ	ठो	"	२२	नं	नँ	३६	१७	ग्रसत	ग्रसित	४९	६	"	"
"	१५	मर	नर	"	२४	गे	में	३७	१०	जैहे	जेहैं	५०	४	गये	गे
"	२४	मेंहूं	महूं	२६	९	खौ	खो	"	११	अतिदुलैभ	दुर्लभ	५१	२२	सोऽप्रतिपाय	अतिथ्यमन
१८	४	यह	यहि	२७	४	हं	इं	"	१४	वां	पा	५२	५	हिं	हि
"	१६	पत्नि	पत्निन	२८	"	स	ख	३८	६	नहीं	नहि	"	१२	सब	से
"	२०	अह	अरू	"	१६	मं	मँ	"	१०	नाप्ता होऊ	नाथ होऊ	"	१५	जे	जेहि
१९	३	सौ	सो	२९	११	डु	हु	"	१९	तरुन	तरून	"	१९	हौ	हैं
"	" १५	हूहू	हैहि	२९	३	वि	नि	३९	५	निज	नित	"	२२	गं	गँ
"	१६	ममन	गमन	३०	९	ल	न	"	१९	कोई	कोइ	५३	१४	व	त
"	२२	संग	सँग	"	१३	कर	करि	४०	१७	ति	त	५४	१८	सं	सँ
"	"	नीरे	नेरे	"	१९	ह	हु	४२	५	त्याग	त्यागि	५५	६	हे	हो
२०	८	डरा	डर	३१	७	चां	चं	"	"	जैहो	जैहैं	"	९	नै	नो
२१	१	हौं	हौ	"	२	कै	के	"	१४	पपान	पपानि	५६	५	ई	इ
"	५	ह	हि	३२	१२	सहज	सहस	४२	१७	अवर	अवस	"	११	सं	सैं
"	१३	अ	आ	"	२०	एक	यह	४३	२	सुमख	सुमुखि	५७	२	नं	नँ
२२	२१	डु	डुँ	३३	१	भरोषा	भरोसा	"	१६	मानी	वानी	"	१६	हिं	हि
"	२३	गं	गँ	"	"	रोषा	रोसा	४४	२४	त	ति	"	१९	सुनि	सुनु
२३	३	फौ	फो	"	१७	चां	चं	४५	५	हु	हुं	"	२०	हीं	हिँ

पृ.	पं.	अशु.	शु.	पृ.	पं.	अशु.	शु.	पृ.	पं.	अशु.	शु.	पृ.	पं.	अशु.	शु.
५८	५	हु	हुं	६९	१	आभु	आम	"	१७	पन्नेषू	पन्नगे	"	२३	हुं	हुआ
५८	६	हैं	है	"	५	ति	ने	८२	१	नौ	नो	९२	१३	विन	वनि
६९	४	अन	अनं	"	"	सं	सँ	"	५	हुं	हुँ	९३	६	उत्तर	उतरू
६९	१५	जाप	जपा	"	१२	ला	आ	"	३	ई	इ	"	७	शु	य
"	१८	मे	मेव	"	१७	कमल	काम	८४	६	हा	ह	"	१२	हुं	हु
६०	६	सिं	सिँ	"	१८	कौतुक	कोतुम	"	२३	ई	इ	"	१५	य	म
६०	८	मंलल	मंगल	७०	८	हु	हुँ	८५	२	ठौ	ठो	९५	८	नि	नी
"	११	हिं	हि	७०	१७	नहीं	नहिं	"	४	हो	है	"	७	हा	हाँ
"	१३	पठि	पढि	"	१९	हों	है	"	१३	हि	ह	"	१७	छौ	छौं
६२	३	कातानि	कास्या चिनि	"	२२	हो	हैं	"	२४	हु.	हुं.	९६	३	अं	अँ
६२	६	गुद	गुह	७२	२	सा	स	८६	३	नौ	नो	"	४	"	"
६३	२४	मंदार	मदार	"	"	ठिर	ठरि	"	४	र	रि	"	६	हं	हाँ
६५	२०	मे	मि	"	२५	द्द	दु	८६	१२	हु.	हुं.	"	१५	र्था	था
६६	६	ति	ने	७४	६	आनंद	आनँद	"	१९	"	"	९७	१	ट	ट
"	८	ह	हँ	"	१८	जै	जैं	"	२१	सौं	सौ	९८	१४	हुं.	हुँ.
६७	६	बठ	घर	"	"	हो	हों	८७	२३	हुं.	हुँ.	९९	५	ही	हि
"	७	हो	टो	"	२२	जि	ति	"	२४	"	"	"	६	युग	यग
"	२६	मद	मदु	७६	२१	मान	मातु	८८	५	पाठ	पढ	९९	१२	हैं	हैं
"	१३	खा	खाय	७७	२	जा	जहूं	"	१७	द	धं	१०१	४	अं	अँ
६८	१	गये	गे	"	१८	द	रू	"	२२	नं	नँ	१०२	३	ग	मि
"	३	तहां	तहँ	"	२४	विधि	विधि सो	"	२३	सं	सँ	"	१२	को	कि
"	६	लेही	लेहीं	७८	१२	लो	लो	८९	५	तिनके	तिन	१०३	७	सि	हि
"	"	देही	देहीं	७९	८	तजौ	तजो	"	१५	नं	नँ	१०४	५	हि	ह
"	१४	नयन	नयनि	८०	६	रव	रव	९०	२०	हि	ही	"	७	नि	ने
"	२६	अंग	अँग	"	११	व	न	९१	१४	सं	सँ	१०५	१३	निज	जिन

"	१९	हे	हु	१२०	३	हि	ह	"	३	रव	रवे	१५२	१७	न	न
१०६	२२	हुं	हुं	"	१०	हुं	हुं	१३३	७	ई	इ	"	२१	नि	न
"	"	प्र	प्र	"	१५	ए	न	"	१५	प्र	प्र	"	२२	नि	नि
१०८	२४	हुं	हुं	"	१७	नर	वर	१३४	२१	ही	हीं	१५५	२	त	तु
"	"	सौं	सो	१२१	३	का	कर	१३५	"	नं	नं	"	४	के	को
१०९	२	चां	चं	"	४	दिष्ट	दिष्टि	१३६	२	मं	मे	१५७	७	सं	सँ
११०	४	जठ	सठ	"	११	न	ति	"	३	नं	नँ	"	१२	हि	हु
१११	७	ई	इ	१२२	१२	हिं	हि	"	६	"	"	"	२४	सि	सिं
"	२०	जे	जो	"	१७	ह	रू	१३७	६	वनिग	वनिग	१५८	५	प्रस्न	प्रसन्न
११२	१५	जै	जे	"	१८	हुं	हुँ	"	१०	त्रि	त्रि	"	"	विघ्न	विघ्न
११३	२०	अंत	अनंत	"	२५	धरन	धरनि	१३८	३	ग्यारहें	गेरहें	१५९	१८	का	कुड
"	"	हिं	हि	१२३	१४	ई	इ	१३९	८	तन	तनमें	१६८	१	कर	करि
११५	७	हु	न	"	२०	मोत	मोन	"	"	ई	इ	१६१	१६	दा	आ
"	१	रु	क	१२४	२१	ढ	ढि	१४०	९	हा	हां	१७३	१३	धरै	धरे
"	२	त्रियन	त्रिनयन	"	"	के	कै	१४१	१५	भ्रु	भ्रू	"	१४	करके	केकर
"	१३	वि	त्रि	१२५	३	भवनि	भवन	"	१८	सौ	सो	"	१५	हं	ह
"	१७	भालु	भल	"	२१	तन	तव	"	२४	प्रणाम	प्रमाण	१७६	४	री	डी
११६	३	ह	हुं	१२६	६	तै	ते	१४४	७	मंत्र	सुमंत्र	१७७	१	ये	य
"	५	मध्य	मध्यम	"	२३	ह	हि	१४५	९	सनमा निये	मनमा निये	१८३	५	ह	हि
"	८	गुरु	गुरु	१२७	२२	दूर	दूरि	१४७	६	न	नु				
"	१४	जे	जो	१२८	२	ए	णि	"	१०	हि	ह	इति समाप्त			
"	२२	प्रथम	प्रमथ	"	१३	कँद	कद	१४८	२३	सं	सँ				
११७	१०	ह	ड	१३०	३	हो	है	१५०	६	ज	त				
११८	५	ल	ल	"	५	उत्तर	उमरु	"	२१	ही	हि				
११९	२१	सं	सँ	१३१	०	वृषभा	वृषा	१५१	६	जिन	जानि				